हरियाणा विधान सभा

की

कार्यवाही

25 मार्च, 1977

(प्रथम बैठक)

खंड 1, अंक 4

अधिकृत विवरण

विशय सूचि

भ्ाुक्रवार, 25 मार्च, 1977

	पृश्ठ संख्या
तारांकित प्र न एवं उत्तर	(4) 1
अतारांकित प्र न एवं उत्तर	(4) 20
वर्श, 1977—1978 के बजट का सामान्य चर्चा	(4) 25

हरियाणा विधान सभा

भुक्रवार, 25 मार्च, 1977

(प्रथम बैठक)

विधान सभा की बैठक, हरियाणा विधान सभा हाल, विधान भवन, सेक्टर–1, चण्डीगढ़ में 9.30 बजे प्रातः हुई। अध्यक्ष (चौधरी सरूप सिंह) ने अध्यक्षता की।

तारांकित प्र न एवं उत्तर

Construction of Building and Boundary wall of Hassanpur Primary Health Centre.

***1739, Shri Behari Lal Balmiki :** Will the Minister for Industries be pleased to state –

(a) Whether the building and boundary wall of the Primary Health Centre Hassanpur, District Gurgaon is under construction; and

(b) if the reply to part (a) above be in the affirmative, the time by which it is likely to be completed ?

गृह तथा स्वास्थ्य राज्य मन्त्री (श्रीमती भारदा रानी) :

(ए) प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र हसनपुर की केवल चारदीवारी ही निर्माणधीन है।

(बी) 31—03—77.

श्री बिहारी लाल बाल्मीकि : यह बिडिंग बहुत टूटी—फूटी है। क्या मन्त्री महोदय बताएंगे कि इसको कब तक बना दिया जाएगा ?

श्रीमती भाारदा रानी : यह बात ठीक है कि हसनपुर प्राइमरी हैल्थ सैन्टर की बिल्डिंग ठीक नही है, लेकिन इस समय उसका निर्माण नहीं हो सकता, केवल चारदीवारी का निर्माण हो रहा है। 1977—78 में अगर फण्ड्ज दिए जाएंगे तो बिल्डिंग बना देंगे।

Construction of Pali-Gurgaon Read

1743, Shri K.N. Gulati : Will the Minister for Revenue be pleased to state –

(a) weather any portion of Pali-Gurgaon Road is lying un-constructed at present; and.

(b) if so, the length thereof together with the time by which the construction work is likely to be started and completed ?

राजस्व मन्त्री (श्री माडू सिंह मलिक) :

(ए) जी हां।

(बी) केवल 9.97 किलोमीटर की लम्बाई। इसका कार्य प्रगति में है। परन्तु इसका मुकम्मल होना धन की उपलब्धि पर निर्भर करता है।

श्री के.एन.गुलाटी : क्या मन्त्री महोदय बताने की कृपा करेंगें कि यह जो थोड़ा सा पोर ान बनाना बाकी रह गया है, इसको बनाने के लिए क्या कोई डेट निि चत करेंगें कि फलां डेट तक बना देंगे?

श्री माडू सिंह मलिक : जल्दी से जल्दी बना दिया जाएगा।

I.A.S., I.P.S. & H.C.S. Offiers

***1759, Shri Amar Singh :** Will the Chief Minister be pleased to state –

(a) the total number of I.A.S., I.P.S. & H.C.S. Officer in the State as on 31st December, 1976; and

(b) the number and names of officers belonging to Scheduled Castes out of those referred to in part (a) above ?

मुख्य मन्त्री (श्री बनारसी दास गुप्त) : अपेक्षित सूचना जो संलग्न विवरण में दी गई है, सदन की मेज पर रखी जाती है।

विवरण

राज्य में 31–12–76 को आई.ए.एस., आई.पी.एस. तथा एच.सी.एस. अधिकारियों की कुल संख्या तथा उनमें अनुसूचित जातियों के अधिकारियों की संख्या तथा नाम निम्न प्रकार थे :–

1 क.	राज्य में 31.12.76 को आई.ए.एस. अधिकारियों की कुल संख्या = 98	(इस संख्य में 17वे अधिकारी भाामिल हैं, जो कार्पोरे ानज/बोर्डज आदि में प्रतिनियुक्ति पर थे, परन्तु इसमें वे 20 अधिकारी भाामिल नहीं है, जो कि केन्द्रिय सरकार तथा संघ क्षेत्रों में प्रतिनियुक्ति पर थे।)
ख.	अनुसूचित जातियों के 15 अधिकारियों की संख्या तथा उन के नाम	1 श्री एल.डी. कटारिया
		2 श्री एम. कुटप्पन
		3 श्री के.आर. पुनिया
		4 श्री महेन्द्र सिंह

			5 श्री आर.एम. सुधीर
			6 श्री तरसेम लाल
			7 श्री टी.डी. जोगपाल
			8 श्री बी.डी. ढालिया
			9 श्री ज्ञान चन्द
			10 श्री एस.एल. धनी
			11 श्री भगवती प्रसाद
			12 श्री चन्द्र सिंह
			13 श्री करतार सिंह भोरिया
			14 श्री हेम चन्द्र दिसोदिया
			15 श्री राम कि ान रंग
2	क.	राज्य में 31.12.76 को 40 आई.पी.एस. अधिकारियों की कुल संख्या	(इनमें वे 13 अधिकारी, जो कि केन्द्रिय सरकार में प्रतिनियुक्ति पर थे, भाामिल नही हैं।)

	ख.	अनुसूचित जातियों के अधिकारियों की संख्या तथा उन के नाम	7	1 श्री डी.डी. क यप 2 श्री एच.आर. स्वान 3 श्री आर.आर. सिंह 4 श्री लक्ष्मण सिंह (1962) 5 श्री बुध राम 6 श्री लक्ष्मण दास (1962) 7 श्री ब्रिजेन्द्र राय
3	क.	राज्य में 31.12.76 को एच.सी.एस. (कार्यकारी भााखा) अधिकारियों की कुल संख्या	139	(इस संख्या में वे 29 अधिकारी भाामिल हैं, जो कि राज्य के कार्पोरे ान्ज तथा बोर्डज इत्यादि में प्रतिनियुक्ति पर थे, परन्तु इसमें वे 7 अधिकारी भाामिल नहीं हैं, जो कि केन्द्रीय सरकार, संघ क्षेत्र

		चण्डीगढ़ में तथा दिल्ली म्युनिसिपल कार्पोरे ान में प्रतिनियुक्ति पर थे।)
ख. अनुसूचित जातियों के अधिकारियों की संख्या तथा उन के नाम	17	1 श्री हरगी राम
		2 श्री रत्न सिंह
		3 श्री एस.सी. धोसीवाल
		4 श्री रणजीत सिंह कैले
		5 श्री जगत राम
		6 श्री धर्मवीर
		7 श्री जिले सिंह खोबरा
		8 श्रीमती वेद कुमारी
		9 श्री रणजीत सिह
		10 श्री वी.एन. कडयाला
		11 श्री मोहिन्द्र प्रका ा बिदलां

			12 श्री रंगीराम बंसवाल
			13 श्री चमन लाल सांखला
			14 श्री लाल सिंह
			15 श्री ओम प्रका ा इन्दौरा
			16 श्री राम भगत लंगयान
			17 श्री मदन लाल सरवन
4.	क.	राज्य में 31.12.76 को 67 एच.सी.एस. (न्यायिक भााखा) अधिकारियों की कुल संख्या	(इस संख्या में वे 4 अधिकारी जो कि संघ क्षेत्र चण्डीगढ़ में व देहली नगर निगम आदि में प्रतिनियुक्ति पर थे, भाामिल नहीं हैं ।)
	ख.	अनुसूचित जातियों के 5 अधिकारियों की संख्या तथा उन के नाम	1 श्री हरी राम
			2 श्री अमर सिंह चालिया

3 श्री प्रका ा चन्द्र नरियाला

4 श्री वेद प्रका ा चौधरी

5 श्री केवल सिंह

श्री अमर सिंह : स्पीरक साहब, चीफ मिनिस्टर साहब ने बताया है कि हरियाणा स्टेट में आई.ए.एस. आफिसर 98 है, जिस में 15 भाडयूलड कास्ट्स के है। क्या मुख्य मन्त्री महोदय बताएगें कि इन 15 भाडयूलड कास्ट्स में कितने कितने धानक और चमार हरिजन है ?

श्री बनारसी दास गुप्त : अध्यक्ष महोदय, मेरे पास यह विवरण हीं है, भाडयूलड कास्ट्स की संख्या मैंने बता दी है।

श्री ओम प्रका ा गर्ग : क्या मुख्य मन्त्री महोदय बताएगें कि चमारों में कितने चमार किस–किस कम्यूनिटी से ताल्लुक रखते है ?

श्री बनारसी दास गुप्त : क्या आपका मतलब यह है कि गौड़ में भी जौड़ होता है – (व्यवधान) –

श्री गणपत राय : क्या मुख्य मन्त्री महोदय बताएंगे कि भाडयूलड कास्ट्स के क्लास वन तथा क्लास टू के कितने कितने आफिसर सस्पैंड कि है ?

श्री बनारसी दास गुप्त : इसके लिए अलग से नोटिस दें, सूचना दे दी जाएगी।

चौधीर दल सिंह : जो भाडयूलड कास्ट्स आई.ए.एस. और आई.सी.एस. आफिसर सलैक्ट हो जाते है, इनकी सलैक ान के बाद क्या गवर्नमैंट के पास ऐसी कोई प्रयोजल है कि वे भाडयूलड कास्ट्स की लिस्ट में से निकाल दिए जाएंगे ? उनको भी वही कंसै ान दिया जाता है, वही रियायतें मिल रही है। क्या गवर्नमैंट के विचार में कोई ऐसी चीज है कि उनकी आमदनी बढ़ जाने से उनको भाडयूलड कास्ट्स की लिस्ट से खारिज किया जाए ?

श्री बनारसी दास गुप्त : यह काम प्रदे ा सरकार के बाहर की बात है। जो आल इण्डिया पालिसी होगी, उसी को हम फालों करेंगे।

ि ाक्षा मन्त्री (पंडित चिरंजी लाल भार्मा) : स्पीकर साहब, कांस्टीच्यू ान किसी जाति को नहीं बदल सकता, भाडयूलड कास्ट्स इज ए भाडयूलड कास्ट्स।

श्री अमर सिंह : स्पीकर महोदय, मन्त्री महोदय ने अपने जवाब में आई.ए.एस. में भाडयूलड कास्ट्स की संख्या 15 बताई है

और एच.सी.एस. (न्यायिक भााखा) की संख्या 5 बताई है। यह कुल मिलाकर 22 हो गए है। क्या मंत्री महोदय बताएंगें कि इन में से कितनों ने कास्ट हिन्दुओं के साथ भाादी की हुई है ?

श्री बनारसी दास गुप्त : मैं पुरोहित तो हूं नही जो यह बता दूं – (हंसी) –

चौधरी ि ाव राम वर्मा : जैसा कि मुख्य मन्त्री महोदय ने बताया है कि यह स्टेट सरकार के अधीन नहीं है, सैन्ट्रल गवर्नमैंट के अधीन है, तो क्या मुख्य मन्त्री साहब इस बात का प्रयत्न करेंगें कि जो आर्थिक तौर पर पिछड़ा हुआ वर्ग है, उसी को वास्तविक तौर पर पिछड़ा हुआ वर्ग समझा जाए और उसी को पिछड़े वर्ग में भाामिल किया जाए। किसी को जाति पांति के लिहाज से नहीं, बल्कि आर्थिक लिहाज से भाामिल किया जाए?

श्री बनारसी दास गुप्त : यह बात हमारे अधिकार से बाहर है। जो भारत सरकार की नीति होगी, आल–इण्डिया पालिसी होगी, उसी को फालो करेंगें।

श्री अमर सिंह : स्टेट में जूडि ियल मैजिस्ट्रेटस की संख्या 132 है, जिसमें भाडयूलड कास्ट्स 17 है और एच.सी.एस. में जूडि ियल मैजिस्ट्रेटस की संख्या 75 है और भाडयूलड कास्ट्स 5 है। क्या मुख्य मन्त्री महोदय बताएगें कि इनमें भाडयूलड कास्ट्स की परसैन्टेज पहले की निस्बत बढ़ी है या घटी है ?

श्री बनारसी दास गुप्त : एच.सी.एस. में भाडयूलड कास्ट्स की संख्या पूरी नहीं है, क्योंकि योग्य प्रार्थी उपलब्ध नहीं है।

चौधरी पीर चन्द : क्या मन्त्री महोदय बताएंगे कि ऐसे कितने हरिजन आफिसरों के केसिज हैं, जिनको नोटिस देकर सस्पैंट किया है या नोटिस देने से पहले ही सस्पैंड किया गया है ?

चौधरी पीर चन्द : मैं इस सवाल को दोबारा पूछ लेता हूं। क्या मन्त्री महोदय बताएंगें कि क्या किसी आफिसर को बगैर नोटिस दिए सस्पैंड किया गया है।

चौधरी फूल चन्द (मुलाना) : ठीक है परसैंटेज पूरी नहीं हो पाती, क्योंकि कम्पीटैंट व्यक्ति नही मिलते। क्या मुख्य मन्त्री महोदय कम्पीटैंट व्यक्ति ढूंढते समय रिलैक्से ान देकर इस कोटे को पूरा करने की कोि ा ा करेंगें ?

श्री बनारसी दास गुप्त : ढूंढने का प्र न ही उत्पन्न नहीं होता। बाकायदा विज्ञापन पर सब लोग अप्लाई करते है, विज्ञापन पर अगर हरिजन एप्लाई करेंगें तो कोटा पूरा किया जाएगा।

चौधरी फूल सिंह कटारिया : क्या मुख्य मन्त्री महोदय बताएगें कि अगर प्रैस्क्राइब्ड क्वालिफिके ान पर भाडयूलड कास्ट्स

के व्यक्ति नहीं मिलते तो क्या सरकार की तरफ से क्वालिफिके ान रिलैक्स करने का कोई विचार है ?

श्री बनारसी दास गुप्त : क्वालिफिके ान में कोई कमी नही की जाएगी, सरकार का ऐसा कोई विचार नही है।

ि ाक्षा तथा परिवहन मन्त्री (श्रीमती प्रसन्नी देवी) : कथन सदन की मेज पर रखा जाता है।

(क) 1974–75, 1975–76, 1976–77 (दिसम्बर – 1976 तक) में स्वीकृत तथा मिस किए गए ट्रिपों की सूचि।

क्र. स.	डिपो का नाम	स्वीकृत किए गए ट्रिप			मिस किए गए ट्रिप		
		1974–75	1975–76	1976–77 (12/76)	1974–75	1975–76	1976–77 (12/76)
1	चण्डीगढ़	77822	76254	64576	870	1816	1521

2	अम्बाला	262820	273804	263208	2734	1425	3366
3	भिवानी	158200	158306	121929	4260	3164	3512
4	रिवाड़ी	139389	152301	131479	2521	3032	9705
5	गुड़गांव	220754	292730	293012	9988	825	367
6	कैथल	120136	202913	143819	10289	11750	3094
7	हिसार	273750	330690	214450	3108	9072	6750
8	रोहतक	327040	367190	313834	15893	20944	26174
9	करनाल	351860	211700	182023	9421	10627	270
10	जींद	149820	172280	144289	5257	3336	3014
		2081591	2238168	1872619	64341	65991	57773

ख. चक्कर मिस हो जाने के कारण –

1. स्पेयर पार्टस न मिल सकने के कारण

2. ब्रेक डाउन।

3. अधिक वर्शा तथा सड़कों की मुरम्मत के कारण सड़कों का बन्द हो जाना।

4. भाादियों तथा मेलों की वि ोश बुकिंग से बसों का नियमित रूप से बदलना।

5. होली का त्योहार।

6. दुर्घटनाएं।

चौधरी राम लाल वधवा : स्पीकर साहब, मन्त्री महोदय के स्टेटमैंट में दिया है कि 1976–77 में, हरियाणा रोडवेज रिवाड़ी के 9705 ट्रिप मिस हुए है। कैथल में 1974–75 में 10289, 1975–76 में 11750, 1976–77 में 3094 ट्रिप मिस हुए है, इसी तरह हिसार में 1975–76 में 9072, 1976–77 में 6750 ट्रिप मिस हुए है, रोहतक में 1974–75 में 15893, 1975–76 में 20944, 1976–77 में 26174 ट्रिप तथा करनाल में 1974–75 में 9421, 1975–76 में 10627, 1976–77 में 270 ट्रिप मिस हुए है। क्या मन्त्री महोदय बताएंगे कि इतने ज्यादा ट्रिप मिस होने के क्या कारण है। कहा तो यह जाता है कि एफि ाएंसी आ गई है। ट्रिप मिस होने के जो कारण दिए गए हैं, उसमें लिखा है :–

"1. Non-availability of spare parts.

2. Break down .....

मार्कीट में स्पेयर पार्टस की कोई कमी नही हैं, मैं इस बात को चैलेंज करता हूं और जो रीजन दिए गए है, वे बिल्कूल गलत है।

मुख्य मन्त्री (बनारसी दास गुप्त) : आपने कोई स्पेयर पार्टस की एजेंसी तो नही ले रखी – (व्यवधान) –

चोधरी राम लाल वधवा – मेरे पास कोई एजेंसी नही है। एजेंसी जिन के पास है उसकी वाकफियत हमारे पास है। क्या मन्त्री महोदया से पूछ सकता हूं कि ट्रिप मिसिंग को रोकने का क्या प्रबन्ध किया गया है।

श्रीमती प्रसन्नी देवी : इसको रोकने के लिए एक काम तो यह किया जा रहा है कि जो गाड़िया वर्क ााप से निकलें, उनकी अच्छी तरह देखभाल कर रोड पर लाया जाए। दूसरे जो स्पेयर पार्टस मार्किट में नही मिलते, उनकी उपलब्ध करने की कोि ा ा की जा रही है। इसके अलावा वर्क ााप में ज्यादा काम करने के लिए ज्यादा सुविधाएं दी जा रही है। इसके लिए वर्क ााप में जनरेटर भी रख दिया है, ताकि जब बिजली चली जाए, तो जनरेटर से काम लिया जा सके और काम बन्द न हो। इसके अलावा, एक कम्पेन भ्ाुरू किया गया है ताकि कम से कम ब्रेक डाउन हो। इस चीज पर विचार करके कोि ा ा करेंगे कि जिसके कम ब्रेक डाउन होंगे, उसको नम्बर एक और जिसके ज्यादा होंगे उसको नम्बर दो देंगे ताकि वे एक दूसरे के मुकाबल में आ सकें और ब्रेक डाउन कम हों।

श्री ओम प्रका ा गर्ग : क्या मन्त्री महोदय बतायेंगे कि जनरेटर आदि की सुविधाएं देने से कुछ काम ठीक हुआ है ?

श्रीमती प्रसन्नी देवी : पहले से काफी फर्क पड़ा है।

चौधरी राम लाल वधवा : क्या मन्त्री महोदय बताएंगे कि ट्रिप्स की मिसिंग को रोकने के लिए अगले साल के लिए क्या कुछ प्रोविजन किया गया है ?

श्रीमती प्रसन्नी देवी : इसके लिए सैप्रेट नोटिस चाहिए।

श्री के.एन. गुलाटी : अगर राम लाल जी किसी एजेंसी के लिए एप्लाई करेंगे तो फौरन दे देंगे।

चौधरी राम लाल वधवा : मुझे तो एजेंसी नही मिलेगी। हां गुलाटी जी को अव य मिल जाएगी, क्योंकि वे तो पार्टी छोड़कर गए है।

चौधरी पीर चन्द : क्या मन्त्री महोदय बताएंगे कि बसों के टायर वगैरह न मिलने के कारण वे सड़कों पर खड़ी रहती है, इस परे ाानी को दूर करने के लिए सरकार ने कोई प्रबन्ध किया है ?

श्रीमती प्रसन्नी देवी : ऐसी कोई बात नही है। टायर्ज की कमी नही है। टायर्ज की री–सोलिंग हम अपने ही वर्क ााप में करते है। स्पै ाल टायर्ज की बात नही है।

चौधरी ि ाव राम वर्मा : मन्त्री महोदय ने अभी यहां 3–4 उपाय बताए है कि ट्रिप मिस न हो, परन्तु मैं मंत्री महोदया

से यह जानना चाहता हूं कि यह उपाय अपनाने के बाद कितनी कमी ट्रिप मिस होने में आई है ?

श्रीमती प्रसन्न देवी : हमने तो भ्रुरू से इस बात की कोि ा ा की है कि मिसिंग कम हो। ज्यों–ज्यों मिसिंग देखी जती है, उसमें और भी ज्यादा कोि ा ा की जाती है कि कम मिसिंग हो।

श्री ि ाव राम वर्मा : बीस–बीस हजार की ट्रिप मिसिंग भ्रुरू से हो रही है, तो क्या लाभ होगा ?

परिवहन मन्त्री (श्री के.एल. पोसवाल) : बीस करोड़ में से केवल 2.9 परसैन्टेज आती है। सन् 1975–76 से 20 लाख रूपये का मुनाफा हुआ है और इदस दफा एक करोड़ मुनाफा होने की आ ाा है।

Setting up/Construction of a Mandi at Hassanpur

***1976, Shri Behari Lal Balmiki –** Will the Minister for Exicse and "Taxation be pleased to state –

(a) whether there is any proposal under consideration of the Government to set up/construct a Mandi at Hassanpur, distict Gurgaon, by the Market Committee; and

(b) if so, the time by which the Mandi as referred to in part (a) above is likely to be set up and constructed?

State Minister for Agricuture & Revenue (Chaudhari Surjit Singh Mann) :

(a) Yes, Sir,

(b) As soon as possible.

श्री बिहारी लाल बाल्मीकि : क्या मन्त्री महोद बताएंगे कि जो जमीन मार्किट बोर्ड ने एक्वायर की है, वह अभी तक खाली पड़ी है, उसमें मण्डी चालू करने का विचार है ?

चौधरी सुरजीत सिंह मान : अभी तक केवल चार एकड़ जमीन एक्वायर की है और जमीन एक्वायर करने का नोटिस जल्दी से जल्दी दे रहे है।

चौधरी फूल चन्द (मुलाना) : क्या मन्त्री महोदय यह बताने का कश्ट करेंगे कि राज्य में और कितनी नही मण्ड़ियां बनाने का विचार है ?

चौधरी सुरजीत सिंह मान : इसके लिए तो सैप्रेट नोटिस चाहिए।

चौधरी फूल सिंह कटारिया : क्या मन्त्री महोदय बताएंगे कि झज्जर और कोसली में मण्डी बनाने की योजना चार–पांच साल से विचाराधीन है, उसमें क्या प्रोग्रैस हुई है।

चौधरी सुरजीत सिंह मान : यहां सवाल हसनपुर की मण्डी के बारे में पूछा गया है। झज्जर के बारे में नोटिस देंगे तो वहां की बता देंगे।

चौधरी अमर सिंह : क्या मन्त्री महोदय बताएंगे कि हसनपुर की मण्डी के लिए कितनी जमीन एक्वायर की गई है और अभी कितनी और एक्वायर करने का इरादा है ?

चौधरी सुरजीत सिंह मान : चार एकड़ एक्वायर की जा चुकी है और 25 एकड़ और करने का इरादा है।

Upgradation of Police Chowki

***1760, Shri K.N. Gulati :** Will the Chief Minister be pleased to state:

(a) the time by which the Railway Police Chowk of Railway Station Faridabad will be upgraded as Railway Police Thana; and

(b) the total number of cases registered in the Railway Police Chowki as referred to in part(a) above during the last one year ?

गृह तथा स्वास्थ्य राज्य मन्त्री (श्रीमती भारदा रानी) :

(क) मामला सरकार के विचाराधीन है।

(ख) रेलवे पुलिस चौकी में केस दर्ज नहीं होते। वर्श 1976 में इस चौकी के अधीनस्थ आने वाले क्षेत्र के 62 केसिज राजकीय रेलवे पुलिस थाना रिवाड़ी में दर्ज हुए है।

श्री के.एन. गुलाटी : स्पीकर साहब, मैं मन्त्री महोदय से यह जानना चाहता हूं कि केसिज एक थाने के लिए चाहिएं, उसने तो पूरे हो गए है लेकिन उन्होंने जो विचाराधीन वाली बात कही है वह कब तक पूरी हो जाएगी ?

श्रीमती भाारदा रानी : अध्यक्ष महोदय, विचाराधीन का मतलब यह है कि केसिज पूरे है। गुलाटी साहब ने काफी मेहरबानी की है केसिज पूरे कराने की, लेकिन इसका मतलब यह है कि जो खर्चा होता है, उसका एक चौथाई भाग रेलवे विभाग को देना पड़ता है। उनकी अनुमति लेनी भी जरूरी होती है, उन्हें अनुमति के लिए लिख रखा है। जब उनकी अनुमति आएगी तो यहां पर पुलिस स्टे ान बना दिया जाएगा।

चौधरी फूल चन्द (मुलाना) : मन्त्री महोदय ने यहां एक चौकी अपग्रेड करने की बात बताई है तो क्या चौकी और थाने में पुलिस फोर्स की सट्रैन्थ बढ़ान का भी विचार है ?

श्रीमती भाारदा रानी : यह सवाल रेलवे पुलिस स्टे ान पर पुलिस फोर्स के बारे में है। यहां इस समय जो सट्रैन्थ चाहिए उतनी है। हारे यहां जो पलवल और फरीदाबाद के केसिज है ये रिवाड़ी में जाते है और वहां पर सट्रैन्थ पूरी है। फरीदाबाद में

पुलिस सट्रैन्थ पूरी है। पुलिस स्टे ान बनाने के लिए जो सट्रैन्थ चाहिए उसकी अनुमति लेनी है।

चौधरी प्रताप सिंह दौलता : स्पीरक साहब, मैं आपके जरिए मन्त्री महोदया से यह सवाल करना चाहता हूं कि गुलाटी साहब ने कौन सी मेहरबानी गवर्नमैंट पर की है। अगर वह मेहरबानी पोलिटिकल है तो क्या कोई एडमिनिस्ट्रेटिव हैड आन दी फलोर आफ दी हाउस उसको एकनोलिज करते हए उसके रिवार्ड का प्रीमिस कर सकता है ? यह कोई डैमोकेटिक तरीका नही है कि जहां से उनको राय आएंगी वहां पर डिवेल्पमैंट हो जाएं जहां से कांग्रेसी है वहां पर फेवर की जाती है वहां पर तो डिवैल्पमैंट हो जाए, जहां अपोजी ान हो, वहां डिवैल्पमैंट न हो। यहां ओपनली फलोर पर कहा जाता है कि मेहरबान की है।

Mr. Speaker : Order please. This is Question Hour. No discussion please.

मुख्य मन्त्री (श्री बनारसी दास गुप्त) : अध्यक्ष महोदय, दौलता साहब ने बिना किसी सन्दर्भ के ये रिमार्क्स दिए है, मैं इनका विरोध करता हूं। मैं उनसे प्रार्थना करता हूं कि वे उन रिमार्क्स की वापिस ले लें। ऐसी कोई भी प्रैक्टिस हमारे प्रदे ा में जारी नही है।

चौधरी प्रताप सिंह दौलता : अगर मैंने कोई रिमार्क परसनल दिया है तो उसको वापिस लेता हूं लेकिन क्लीयर करना चाहता हूं कि मैंने कोई परसनल रिमार्क्स नही दिए है, मेरे

रिमार्क्स प्रिंसिपल पर है। गवर्नमैंट को अपनी मैंटल अप्रोच बदल लेनी चाहिए। पोलिटिकल ग्राउन्ड पर फेवर नहीं दी जानी चाहिए।

श्री बनारसी दास गुप्त : कोई ऐसी फेवर नही दी जाती है। अगर सड़क गई है तो हर गांव में गई है, बिजली गई है तो हर गांव में गई है, नहर गई है तो हर जगह गई है। हर आदमी को फायदा हुआ है चाहे विरोधी दल का है, चाहे भाासक दल का है। इस किस्म का कोई इम्तियाज, कोई पक्ष–पात हरियाणा प्रदे ा में नही हुआ और न होगा।

श्री अध्यक्ष : यह तो झगड़ा पुलिस चौकी के बारे में था और आप लोगों ने बात ही दूसरी भाुरू कर दी।

श्री बनारसी दास गुप्त : स्पीकर साहब, जो भी बैकवर्ड इलाके होंगे, उन सब को प्रोत्साहन दिया जाएगा, चाहे वह भिवानी हो, चाहे नारनौल हो, चाहे झज्जर हो, चाहे नाहड़, चाहे रिवाड़भ हो, चाहे दादरी हो सब की उन्नति की जाएगी।

लाला रूलिया राम : जैसा कि गुलाटी साहब ने फरमाया है कि यहां पर थाना बनाना चाहिए, तो क्या वहां पर जेल बनाने की भी कोई योजना है ?

(कोई उत्तर नहीं दिया गया।)

श्री के.एन.गुलाटी : मन्त्री महोदय ने मेरे सवाल का जवाब जरूर दिया है परन्तु दौलता साहब इतने पढ़े लिखे आदमी होकर भी इतना टैम्पर लूजं क्यों करते है ?

चौधरी ि िव राम वर्मा : क्या मन्त्री महोदय बताएंगे कि काग्रेस एम.एल.एज. को पुलिस बढ़ान की क्या जरूरत है ?

Mr. Speaker : It is not a supplementary questions.

Break Downs in Haryana Roadways

***1749, Chaudhari Ram Lal Wadhwa :** Will the Minister for Transport be pleased to state the depot wise total number of break down of buses of Haryana Roadways while plying on routes and on bus stands during the financial years from 1972-73 to 1976-77 (to-date) to-gether with the main causes of break down ?"

ि िक्षा तथा परिवहन राज्य मन्त्री (श्रीमती प्रसन्नी देवी) : विवरण सदन की मेज पर रख दिया गया है।

अम्बाला और गुड़गावं डिपो की वर्श 1972–73 से वर्श 1976–77 तक (अप्रैल–दिसम्बर) की ब्रेक डाउन का कारण सहित वार्शिक ब्यौरा :–

क्र.	ब्रेक डाउन का कारण	ब्रेक डाउन की संख्या अम्बाला					ब्रेक डाउन की संख्या गुड़गावं				
		1972–73	1973–74	1974–75	1975–76	1976–77 (अप्रैल–दिसम्बर)	1972–73	1973–74	1974–75	1975–76	1976–77 (अप्रैल–दिसम्बर)
1	ईंजन की खराबी	41	44	158	259	111	31	16	52	94	73
2	ब्रेक की खराबी	5	20	31	111	67	3	2	13	22	14

3	डीजल की खराबी	2	14	81	225	87	26	12	90	86	63
4	टायर की खराबी	—	13	61	105	37	39	15	143	60	51
5	स्प्रिंग सस्पैंशन	—	1	—	—	—	8	1	14	23	20
6	ट्रांसमीशन / गेयर बाक्स की खराबी	40	31	192	488	238	135	108	248	128	86
7	बिजली की खराबी	1	2	12	14	6	—	1	24	5	11
8	विविध	86	51	189	134	57	14	8	42	186	108

	खराबियां										
	कुल	175	176	724	1336	603	256	165	626	604	426

चण्डीगढ़ और रोहतक डिपो वर्श 1972–73 से वर्श 1976–77 तक (अप्रैल–दिसम्बर) की ब्रेक डाउन का कारण सहित वार्शिक ब्यौरा :–

क्र.	ब्रेक डाउन का कारण	ब्रेक डाउन की संख्या चण्डीगढ़					ब्रेक डाउन की संख्या रोहतक				
		1972–73	1973–74	1974–75	1975–76	1976–77 (अप्रैल–दिसम्बर)	1972–73	1973–74	1974–75	1975–76	1976–77 (अप्रैल–दिसम्बर)
1	ईंजन की खराबी	54	38	119	131	39	64	45	219	227	120
2	ब्रेक की खराबी	10	11	64	67	28	9	3	18	37	12

3	डीजल की खराबी	11	10	117	100	39	40	39	102	248	142
4	टायर की खराबी	2	1	26	86	11	54	18	44	187	88
5	स्प्रिंग सस्पैंशन	6	4	13	23	12	28	11	22	53	32
6	ट्रांसमीशन / गेयर बाक्स की खराबी	37	40	156	181	96	9	2	17	326	151
7	बिजली की खराबी	—	5	4	10	4	2	1	12	14	8
8	विविध	13	9	46	63	46	103	43	190	305	278

	खराबियां										
	कुल	133	18	545	661	275	309	162	624	1397	831

वर्श 1972–73 से वर्श 1976–77 तक (अप्रैल–दिसम्बर) करनाल और हिसार डिपो की ब्रेक डाउन का कारण सहित वार्शिक ब्यौरा :–

क्र.	ब्रेक डाउन का कारण	ब्रेक डाउन की संख्या करनाल					ब्रेक डाउन की संख्या हिसार				
		1972–73	1973–74	1974–75	1975–76	1976–77 (अप्रैल–दिसम्बर)	1972–73	1973–74	1974–75	1975–76	1976–77 (अप्रैल–दिसम्बर)
1	ईंजन की खराबी	30	27	171	146	85	46	38	281	192	138
2	ब्रेक की खराबी	6	4	67	53	67	10	6	26	13	15

3	डीजल की खराबी	4	4	23	50	29	10	17	95	94	116
4	टायर की खराबी	47	26	259	77	18	13	14	118	99	5
5	स्प्रिंग सस्पैंशन	—	4	—	15	16	5	16	12	1	4
6	ट्रांसमीशन / गेयर बाक्स की खराबी	13	11	18	58	103	58	50	217	281	205
7	बिजली की खराबी	1	—	10	8	—	1	3	8	9	9
8	विविध	31	40	345	239	117	44	61	144	184	156

	खराबियां										
	कुल	132	116	893	646	425	187	195	891	873	698

रिवाड़ी और जींद डिपो की वर्श 1972–73 से वर्श 1976–77 तक (अप्रैल–दिसम्बर) की ब्रेक डाउन का कारण सहित वार्शिक ब्यौरा :–

क्र.	ब्रेक डाउन का कारण	ब्रेक डाउन की संख्या रिवाड़ी					ब्रेक डाउन की संख्या जींद				
		1972–73	1973–74	1974–75	1975–76	1976–77 (अप्रैल – दिसम्बर)	1972–73	1973–74	1974–75	1975–76	1976–77 (अप्रैल – दिसम्बर)
1	ईंजन की खराबी	14	25	40	75	70	11	36	65	133	70
2	ब्रेक की	3	1	9	37	34	4	18	58	123	87

	खराबी										
3	डीजल की खराबी	6	9	40	112	112	2	41	41	88	58
4	टायर की खराबी	3	10	138	149	159	1	6	—	48	64
5	स्प्रिंग सस्पैंशन	3	2	—	2	—	—	13	14	54	31
6	ट्रांसमीशन / गेयर बाक्स की खराबी	25	24	112	360	338	8	32	69	99	53
7	बिजली की खराबी	2	4	2	7	9	—	1	11	12	2

8	विविध खराबियां	4	8	7	17	6	—	77	221	366	256
	कुल	60	83	348	759	728	26	224	479	923	621

भिवानी और कैथल डिपो की वर्श 1972–73 से वर्श 1976–77 तक (अप्रैल–दिसम्बर) की ब्रेक डाउन का कारण सहित वार्शिक ब्यौरा :–

क्र.	ब्रेक डाउन का कारण	ब्रेक डाउन की संख्या भिवानी					ब्रेक डाउन की संख्या कैथल				
		1972–73	1973–74	1974–75	1975–76	1976–77 (अप्रैल – दिसम्बर)	1972–73	1973–74	1974–75	1975–76	1976–77 (अप्रैल – दिसम्बर)
1	ईंजन की खराबी	डिपो स्थापित	11	126	129	42	डिपो स्थापित नहीं हुआ था।		89	249	102
2	ब्रेक की		1	14	18	11			33	158	121

	खराबी	नहीं हुआ था।								
3	डीजल की खराबी		4	93	94	57		53	154	114
4	टायर की खराबी		3	44	128	77		57	100	60
5	स्प्रिंग सस्पैंशन		3	25	49	14		7	41	19
6	ट्रांसमीशन / गेयर बाक्स की खराबी		10	72	149	73		76	230	206
7	बिजली की खराबी		1	10	12	16		19	49	2

8	विविध खराबियां		16	231	110	81		163	345	118
	कुल		49	615	689	371		497	1326	742

हरियाणा रोड़वेज के तमाम डिपुओं का 1972–73 से वर्श 1976–77 तक (अप्रैल–दिसम्बर) की ब्रेक डाउन का कारण सहित वार्शिक ब्यौरा :–

क्र.	ब्रेक डाउन का कारण	ब्रेक डाउन की संख्या				
		1972–73	1973–74	1974–75	1975–76	1976–77 (अप्रैल– दिसम्बर)
1	ईंजन की खराबी	291	280	1320	1635	850
2	ब्रेक की खराबी	50	66	333	639	456
3	डीजल की खराबी	101	150	735	1251	817
4	टायर की खराबी	159	106	890	1039	620
5	स्रिंप्रग सस्पैं ान	50	45	97	261	138

6	ट्रांसमी शन/ गेयर बाक्स की खराबी	325	308	1177	2300	1549
7	बिजली की खराबी	7	19	112	140	67
8	विविध खराबियां	295	314	1578	1949	1223
	कुल	1278	1288	6242	9214	5720

चौधरी राम लाल वधवा : क्या मन्त्री महोदय बताएंगे कि जो ब्रेक डाउन होती है, उससे लोगों को काफी असुविधा होती है। जहां पर बस खराब होती है, उसी जगह पर ठीक करने के लिए सरकार ने क्या कुछ प्रबन्ध किए है।

श्रीमती प्रसन्नी देवी : स्पीरक साहब हमने दो गाड़ियां रक्षा वाहन के नाम से जी.टी. रोड पर चालू कर रखी है। जो भी गाड़ी ब्रेक डाउन होती है, उसको ठीक करने चालू करते है।

चौधरी राम लाल वधवा : मन्त्री महोदया ने बताया है कि जी.टी. रोड पर तो दो गाड़िया चालू कर रखी है, परन्तु क्या मन्त्री महोदया बताएंगे कि जो ब्रांच लाईन पर या देहातों में बसें चलती है, वहां ब्रेक डाउन को रोकने के लिए क्या प्रबन्ध किए है ?

श्रीमती प्रसन्नी देवी : जो भी नजदीक की जगहें है उनको उनसे कवर करने की कोि ाश करते है।

श्री जगजीत सिंह टिक्का : क्या मन्त्री महोदया यह बताने की कृपा करेंगी कि जो ब्रेक डाउन हैं, इनमें कुछ कारण यह तो नहीं है कि हमारे पास पुरानी बसें है, अगर है, तो पुरानी बसों को बदलने का क्या इन्तजाम किया जा रहा है ? अगर कोई इन्तजाम किया जा रहा है, तो क्या वह यह भी बताने की कृपा करेंगे कि पिछले साल नई बसें कितनी हमें मिली ?

श्रीमती प्रसन्नी देवी : स्पीकर साहब, ये ब्रेक डाउन का सवाल है। ऑनरेबल मैंबर साहबान को याद होगा क हम कितनी ही पुरानी बसें हर साल नई बसों के साथ बदले है।

Mr. Speaker : The Question Hour is over.

अतारांकित प्र न एवं उत्तर

Appointment of Officer on Special Duty in the PWD (Public Health Branch)

580, Chaudhri Ram Lal Wadhwa : Will the Minister for Local Government be pleased to state –

(a) the number and names of Officers on Specail Duty appointed in the Public Works Department (Public Health) during the financial years from 1968-69 to 1976-77 to-date; and

(b) to systerm/criteria of appointment of the officers as referred to in part(a) above ?

Local Government Minister (Chaudhri Pokkar Ram Godara) :

(a) No officer on special duty was appointed in the P.W.D. (Public Heath) during the financial years from 1967-69 to 1976-77 (to date).

(b) In view of (a) above, question does not arise.

Appoinment of Officers on Special Duty in P.W.D. (B&R)

***581, Chaudhri Ram Lal Wadhwa :** Will the Minister for Revenue be pleased to state –

(a) the number and names of Officer on Special Duty appointed in the Public Works Department (Building and Roads) during the financial years from 1967-69 to 1976-77 todate; and

(b) the system/criteria of appointment of Officer as referred to in part(a) above ?

Revenue Minister (Shri Maru Singh Malik) :

& (b) A statement is laid on the Table.

Statement

(a) The following officers were appointed as Officers on Special Duty in the Public Works Department (Building & Roads Branch) for theperiod mentioned against each :

Sr. No.	Name of the officer	Date and appointment as O.S.D. and period for which worked as such	Remarks
1.	Shri Raje Ram Sheoran, Assistant Executive Engineer (Class-I	8-10-1973 to 15-1-1975	He as later on promoted as Executive Engineer vide

	Junior)		Haryana Government Order dated 16-1-1975 with effect from 27-9-1973 retrospectively.
2.	Shri P.C. Sharma Temporary Assistant Engineer (Class-II)	1-10-1973 to 5-12-1975	Promoted as Execeve Enginner with effect from 6-12-1975
3.	Shri M.K. Aggarwal Temporary Assistant Engineer (Class-II)	12-11-1973 to 5-12-1975	-do-
4.	Shri Raj Singh Rana, Temporary Assistant Engineer (Class-II)	12-11-1973 to 7-12-1975	Promoted as Executive Engineer with effect from 8-12-1975
5.	Shri R.C. Mahna, Temporary Assistant Engineer (Class-II)	13-2-1974 A.N. to 5-12-1975	Promoted as Executive Engineer with effect from 6-12-1975

(b) As the department at that time had no officerseligible for promotion as Exective Enginer in accordance with the Punjab Service of Engineer. Class-I, Public Works Department (Building & Roads Branch) Rules, 1960. the above appointments of officer on Special Duty were made in their own payscalse plus Rs. 50/- as special pay for performing the higher duties of Executive Engineers as a stopgap arrangment in oder to carry out the work of the department in the pubic interest

Cinema Halls

582, Chudhri RamLal Wadhwa : Will the Chief Minister be pleased to state –

(a) the district wise total number of Cinema Halls in the State as at present; and

(b) the district-wise number of cinema licences sanctioned by the State Government for new Cinema Halls in the State during the financial year 1975-96 and 1976-77 to-date, togetherwith the names and address of such persons or parties to whom licences were sanctioned separately ?

Chief Minister (Shri Banarsi Dass Gupta) :

(a) Reply is given in the enclosed statement (Annexure-I)

(b) Reply is given in the enclosed statement (Annexure-II)

Annexure – I

Presently there are 94 cinema halls in the State of Haryana. The districwise details are as under :

Sr. No.	Name of District	Number of Cinema Halls
1.	Karnal	12
2.	Mahendergarh	6
3.	Sonepat	3
4.	Gurgaon	12
5.	Sirsa	6
6.	Ambala	14
7.	Kurukshetra	0
8.	Rohtak	12
9.	Jind	4
10.	Hisar	12
11.	Bhiwani	4
	Total	94

Annexure-II

Sr. No.	Name of District	Name of Cinema	Names & Address of licences
1.	Kurukshetra	Mohan Theatre, Thanesar.	Sh. Prem Sagar Gupta, Thanesar.
2.	Jind	Bakshi Cinema Narwana	1. Sh. Mithan Lal so Sh. Nath Ram, Narwana. 2. Smt. Maya Devi W/o Sh. Kaku Ram, Narwana. 3. Smt. Krishna Devi W/o Sh. Krishan Lal, Narwana.
3.	Hisar	umar Cinema, Uklana	Sh. Shiv Kumar, Uklana.

In the year 1976-77 to-date only one cinema licence has been sanctioned to Haryana State. The detail is given as under :

Sr. No.	Name of District	Name of Cinema	Names & Address of licences

1.	Sirsa	Darpan Theatre Mandi Dabwali	1. Jagdarshan Singh S/o Sh. Jaswant Singh, Mandi Dabwali. 2. Sukh Darshan Singh S/o Sh. Jaswant Singh, Mandi Dabwali. 3. Smt. Gurdev Kaur W/o Sh. Gurbachan Singh, Mandi Dabwali. 4. Smt. Charanjeet Kaur W/o Sh. Sandeep Inder Singh, Mandi Dabwali. 5. Krishan Kumar Sethi S/o Sh. Ram Dhan Sethi, Mandi Dabwali. 6. Harbans Lal Sethi S/o Sh. Ram Dhan Sethi, Mandi Dabwali. 7. Subhash Chander Sethi S/o Sh. Ram Dhan Sethi, Mandi Dabwali. 8. Smt. Malan Devi W/o Sh Ram Dhan Sethi,

Mandi Dabwali.

Strength of Superintendents, Deputy Superintendents as Assitant Superintendents in Jails

583, Chaudhri Ram Lal Wadhwa : Will the Minister for Transport be pleased to state –

(a) the total number of Superintendent, Deputy Superintendents and Assistant Superintendents in each jail of the State as at present; and

(b) the names of jails, if any, where no Superintendents and Deputy Superintendentss have been appointed so far together with the reasons therefor, separately ?

Transport Minister (Shri K.L. Poswal) : A Statement containing the requisite information is laid on the Table of the House.

Statement

The strength of Superintendents, Deputy Superintendents and Assistant Superintendents in each Jail of the State.

S.	Name of Jail	Supdt.	Dy.Supdt.	Asstt.

No.				Supdt.
1	Central Jail, Ambala	1	2	7
2	District Jail, Hisar	1	2	3
3	District Jail, Rohtak	1	1	2
4	B.I. & J. Jail, Hisar	1	1	2
5	District Jail, Gurgaon	1	1	2
6	District Jail, Karnal	1	1	2
7	Sub Jail, Jind	1 (Part Time)	-	1
8	Sub Jail, Kaithal	1 (Part Time)	-	1
9	Sub Jail, Sirsa	1 (Part Time)	-	1
10	Sub Jail, M.Garh	1 (Part Time)	-	1
11	Sub Jail, Narnaul	1 (Part Time)	-	1
12	Sub Jail, Rewari	1 (Part Time)	--	1

13	Sub Jail, Dadri	1 (Part Time)	-	1
14	Sub Jail, Palwal	1 (Part Time)	-	1
15	Sub Jail, Narwana	1 (Part Time)	-	1
16	Sub Jail, Bhiwani	1 (Part Time)	-	1
17	Sub Jail, Panipat	1 (Part Time)	-	1
18	Sub Jail, Sonepat	1 (Part Time)	-	1
	Total	6+12 (Part Time)	8	29

(i) No Cnetal or District Jail is with out a Superintendents a Deputy Superintendnt Jail.

(ii) Due to lesser work loand, no Deputy Superintendents are appointed at Sub Jail and the duties of the post are performed by Assistant Superintendent/Sub Assistant Superintendent Jails vide para 1153(h) of the Punjab Jail Manual.

वर्श 1977–78 के बजट पर सामान्य चर्चा

चौधरी प्रताप सिंह दौलता (बेरी) : स्पीकर साहब, पे ातर इसके कि मैं बजट की जो पालिसी हैं, इसके ऊपर आऊं, एक बात मैं यह कहना चाहता हूं कि मुझे इस बात का भाक है। मैं अपना भाक जाहिर करना चाहता हूं कि क्या हाउस कम्पीटैंट है, छठा बजट पे ा करने का। मेरा हाउस से मतलब सारे हाउस से है। मैं यह नहीं मानता कि गवर्नमैंट और एडमिनिस्ट्रे ान या अपोजी ान इस हाउस का हिस्सा नहीं है ?

Mr. Speaker : It i general discussion on the Budget. The Budget has already ben presented.

Chaudhri Partap Singh Daulata : Jurisdiction of the presentation of the Budget is a part of the general discussion on the Budget. Whether the House is competaent or not competent to present the Sixth Budget is directly relevant to it ?

Mr. Speaker : I have ruled it out because the Budget hams already been presented.

चौधरी प्रताप सिंह दौलता (बेरी) : स्पीकर साहब, यह जो बजट पे ा हुआ है, मैं इसके लास्ट पैराग्राफ से आपकी इजाजत से इसे भाुरू करता हूं। पिछला पैराग्राफ है, जो कि एकनालेजमैंट का है। तमाम अपोजी ान के भाई और खास तौर पर मैं इस बात से इत्तफाक करता हूं कि वित्त डिपार्टमैंट बड़ी मेहनत से बजट तैयार करता है। मैं आपको बताता हूं कि पिछले

दिनों मैं एक बार जब इस डिपार्टमैंट में गया, तो वहां पर सब क्लर्क अपनी डैस्कों पर हाजिर थे जबकि किसी दूसरे डिपार्टमैंट में हाजिरी 50 प्रति ात के लगभग ही होती है। जो मैं अपोजी ान की तरफ से पूरे तरीके से इस एकनालेजमैंट की ताईद करता हूं। लास्ट से जो अपना पैराग्राफ है, वह है डैफिसिट बजट।

श्री अध्यक्ष : पीछे से चल रहे हैं ?

चौधरी प्रताप सिंह दौलता (बेरी) : जी हां, मैं पीछे से चल रहा हूं। डैफिसिट बजट के बारे में, मैं आपको क्या बताऊं। इसके लिए मैं गवर्नमैंट को बधाई नहीं दे सकता। बजट के डैफिसिट होने का लफ्ज आते ही गरीब आदमी लड़खड़ा जाता है। फाईनैंस मिनिस्टर साहब चाहे कितने ही अ योरैंस दे दें कि कोई नया टैक्स नही लगाएंगें, लेकिन जब डैफिसिट बजट आया है, तो टैक्से ान तो होगी ही। मैं एक बात और अर्ज कर देना चाहता हूं कि हिन्दुस्तान दुनियां के सबसे ज्यादा तीन हैवीली टैक्सउस्टेटस् में से एक है और हरियाणा स्टेट हिन्दुस्तान में सबसे ज्यादा तीन हैवीली टैक्सड स्टेट् है। इसलिए बजट जो बनाएं, वह इस बात को ध्यान में रखकर बनाएं कि हरेक आदमी का जो बरदा त का मादा है, वह खत्म हो चूका है, चाहे वह एग्रीकल्चरिस्ट है, चाहे वह प्रोफै ानल सैक ान है, सबका बरदा त लगभग तकरीबन आखिरी हद तक पहुंच चुका है। इसलिए मेरा कहने का मतलब यह है कि जो डैफिसिट बजट है, वह कोई हैल्दी साइन नहीं है। मैं यह अर्ज करना चाहता हूं कि इस तमाम बजट में घाटे को पूरा करने के

लिए कहीं ऐसा कोई हिन्ट नहीं है कि किफायत ाुआरी से उसे पूरा करने की कोि ा ा की जाएगी। जो सबसे बड़ी डिप–अप्वायन्टमैंट की बात है, वह यही है, कि इस तमाम बजट स्पीच में किफायत ाुआरी की तरफ गवर्नमैंट का कहीं कोई इ ाारा नहीं है। बल्कि बजट से साफ तौर पर यह दर्ज है कि 3 करोड़ रूपया जो हमने इलैक ान की ईव पर ऐम्प्लाईज को जो इनक्रीमैंट्स दी है, उसका भी खसारा बजट में होगा, और जिस तरीके से पी.सी.एस. आफिसर्ज के ग्रेड रिवाईज किए गए है ....

श्री गिरी ा चन्द्र जो ी : आन ए प्वांयट आफ आर्डर सर, स्पीकर साहब, मेरे फाजिल दोस्त बजट पर बोल रहे है, लेकिन जो कुछ बजट के अन्दर ब्यान किया हुआ है, वह उसे इग्नोर कर रहे है। इसमें इकोनोमिक एक्सपैंडीचर के बारे में बताया गया है जबकि यह कह रहे है कि उसमें कुछ है ही नहीं।

चौधरी प्रताप सिंह दौलता : मैं स्पीकर साहब, यह जानना चाहता हूंकि यह प्वांयट आफ आर्डर कैसे बना ? अगर यही प्रैक्टिस चलाना चाहते है, तो चला लें, फिर हम लीडर आफ दी हाउस की स्पीच भी नही चलने देंगे। मैं यह अर्ज करना चाहता हूं कि जो प्वांयट आफ आर्डर होता है, वह बड़ा सैक्रेड होता है। जब वे प्वांयट आफ आर्डर पर खड़े हुए, तो मैं बैठ गया, लेकिन अगर य फ्रिवलस प्वांयट आफ आर्डर करेंगे तो the Chair will execuse me if I defy that.

Mr. Speaker : No interruptions please.

चौधरी प्रताप सिंह दौलता : मेरी अर्ज है कि इस में बाकायदा यह बात दर्ज है कि एडमिनिस्ट्रेटिव कास्ट बढ़ेगी 3 करोड़ रूपया, और अगर चाहें, तो मैं पढ़कर सुना दूं। एक लफ्ज भी मैं रिकार्ड से बाहर नहीं बोला करता। इसमें बाकायदा यह बात दर्ज है कि 5.58 करोड़ रूपये जो 1976–77 का डैफिसिट है, वह और 3 करोड़ रूपया जो आन दी ईव आफ दी इलैक ान्ज बैनिफिट एम्प्लाईज को दिए गए है, यह भी टोटल डैफिसिट में ऐड होगा। यह बात रिकार्ड पर मौजूद है। मैं इसलिए यह अर्ज करना चाहता हूं कि इस बजट में कहीं कोई कफायत ाुआरी या वेस्टफुल एक्सपैंडीचर को कम करने का हिन्ट नहीं है। मैं इस बात से फालतू बात नहीं करता।

अगली जो मेरी आईटम है वह है हाउसिंग की। हाउसिंग बोर्ड ने क्या किया ? जो कोआप्रेटिव सोसायटीज का सिलसिला है, वह सब दरूस्त है, लेकिन हाउसिंग की प्रौब्लम बड़ी सीरियस होती जा रही है। इस स्टेट में यह प्रौब्लम इस हद तक सीरियस हो चुकी है कि इसकी कोई हद नहीं रही। आज किन के पास अपने मकान नहीं है ? अरबन मिडल क्लास के लोगों के पास। उनके लिए यह प्रौब्लम बड़ी सीरियस हो गई है। यह बात नहीं है कि रूरल एरियाज के लोगों के लिए मेरे दिल में हमदर्दी नहीं है, लेकिन मैं एक बात कह देना चाहता हूं कि रूरल एरियाज में कोई भी आदमी अगर मकान नहीं तो छप्पड़ के बगैर नहीं है।

लेकिन लोअर मिडल क्लास जो अरबन एरियाज की है, उसके लिए यह एक प्रौब्लम बन गई है। मकान बनाना उनके लिए एक प्रौब्लम बन गई है। उनको मकान बनाने के लिए बड़ा ध्यान से सोचना पड़ता है। मैं एक सुझाव देना चाहता हूं। मैं चाहता हूं कि फाइनैंस मिनिस्टर साहब, इस बात को बे ाक वैरीफाई कर लें कि हरियाणा में जो आउस प्रॉपर्टी है, वह सबसे ज्यादा हैवीली टैक्सड है। कोई भी आदमी जब तक मजबूर न हो, वह मकान नहीं बनाता। वह दिन लद गए, जबकि वह किराए पर देनें के लिए मकान बनाता था। मेरी आपसे यह अर्ज है कि आप वैरीफाई करवा लीजिए, पंजाब में कोई प्रोपर्टी टैक्स नहीं है, चण्डीगढ़ में कोई प्रौपर्टी टैक्स नहीं है, जितनी स्टेट्स में प्रौपर्टी टैक्स है, आप वहां से बे ाक वैरीफाई करवा लीजिए, सबसे ज्यादा टैक्स हरियाणा में है।

साढ़े बारह परसैंट प्रौपर्टी टैक्स और उसके बाद हाउस टैक्स। आज हरियाणा के अन्दर फरीदाबाद जो जगह है, वहां पर हाउस टैक्स कम है, क्योंकि वहां गरीब इंडस्ट्रियलिस्ट रहता है, वहां पर बड़े लोग रहते है। हरियाणा के अन्दर फरीदाबाद ऐसी जगह है, 10.00 बजे जहां पर हाउस टैक्स की भारह सबसे कम है। कोई आदमी जब बेरी, नारनौल या किसी दूसरी जगह मकान बनाता है, तो उसे साढ़े बारह परसैंट हाउस टैक्स और साढ़े बारह परसैंट प्रौपर्टी टैक्स यानी 25 परसैंट टैक्स देना पड़ता है। अलाउद्वीन खिलजी के वक्त में भी ऐसा नहीं था। आज हरियाणा

के अन्दर अगर कोई मकान बनाता है, तो हरियाणा सरकार उससे एक रूपये के पीछे चार आने मांग लेती है। उसके बाद इनकम टैक्स और फिर वैल्थटैक्स है। इन टैक्सों का लोगों पर इतना दबाव है कि अरबन मिडिल क्लास जो मकान बनाने की इच्छा रखती है, वह अपने लिए और किराए पर देने के लिए मकान बनाने में पैसा इनवैस्ट नहीं कर रही है। आज लोग चण्डीगढ़ में और दिल्ली में पैसा इनवैस्ट करना ज्यादा अच्छा समझते है। आज लोग हरियाणा के अन्दर मकान बनाने में पैसा इनवैस्ट नहीं करना चाहते। मैं फाइनैंस मिनिस्टर साहब से कहना चाहता हूं कि वे इस बात का सीरियस नोट लें। हाउसटैक्स और प्रौपर्टी टैक्स इक्ट्ठा कर दिया यह बहुत अच्छा किया, लेकिन जो डैफिनि ान 'लोकल टैक्स' है, यह बड़ी वेग हैं, क्योंकि House tax is liable to be paid by the tenant under section 9 of the Rent Restriction Act अब लैंडलार्ड यह करता है कि जब भी उसके पास नोटिस आता है, तो वह किराएदास को पकड़ा देता है ताकि either he should pay it under section 9 of the Act or he should vacate और खाली कराने के आर्डर कोर्ट में खड़े रहते है। इसलिए मैं अर्ज करना चाहता हूं कि हाउस टैक्स और प्रोपर्टी की जो लीगल डैफिने ान है, वह रख। हाउसटैक्स अलग है, और प्रोपर्टी टैक्स अलग है, और जब आपने इनको इक्ट्ठा कर दिया है तो किराएदा को 25 परसैंट देना पड़ता है। मेरी अर्ज यह है कि यह बताया जाना चाहिए कि प्रोपर्टी टैक्स कितना है और हाउस टैक्स कितना है, क्योंकि इकट्ठा करने के किराएदार पर 25 परसैंट का बोझा पड़ता

है वह बहुत ज्यादा है। Property tax cannot be shifted to a tenant, House tax can be. When it is a combined local tax, the tenant shall have to bear it. मेरे टैनेन्ट तो फाइनैंस मिनिस्टर हैं, अगर वे न मानें तो मुझे कोई एतराज नहीं है। लेकिन ऐसा करने से सबटैंनैंट्स का नुकसान होगा। मेरी प्रार्थना है कि हाउस टैक्स को प्रोपर्टी टैक्स की तरफ ि ाफ्ट न करें।

स्पीकर साहब, फिर आता है हैल्थ डिपार्टमैंट। स्पीकर साहब, हैल्थ डिपार्टमैंट को अलग से डिसकस करूं या इसको पुलिस डिपार्टमैंट के अन्डर डिकस करूं, एक ही बात है। हैल्थ डिपार्टमैंट का पुलिस डिपार्टमैंट से कोई सरोकार नहीं है, लेकिन हैल्थ डिपार्टमैंट की जो नै ानल पालिसी है, फैमिली प्लानिंग की, उसमें पुलिस को भाामिल करके, जो जबरदस्ती हरियाणा के अन्दर हुई, उसकी मिसाल नहीं मिलती। इस सिलसिले में जो कुछ हुआ, उसको ज्यादा बहस में लाने की जरूरत नहीं है। तमाम चीजें ब्यूरोक्रेसी पर छोड़ दी गयी। यह कहीं नहीं है कि पब्लिक हैल्थ के लिए पुलिस का यूज किया जाए। किसी भी आप्रे ान के लिए बी.डी.ओ. पुलिस को नहीं ले जा सकता। सबको मालूम है कि पिपली में अढ़ाई लाख लोग क्यों इक्ट्ठे हुए। सरकार सारे रिकार्ड में यह दिखाने की कोि ा ा कर रही है कि थानेदार या हवलदार के पास कोई रिटन आर्डर नहीं है। स्पीकर साहब, गरीब आदमी पुलिस में है गरीब आदमियों का जबरदस्ती आप्रे ान करके अपनी रिस्पांसिबिलिटी ि ाफ्ट करने के लिए कहा जा रहा है कि हम इनक्वायरी करेंगें। मैं पूछना चाहता हूं कि तीन आदमी पिपली में

मरे और तीन कांस्टेबल मरे उन छह आदमियों का कातिल कौन है। एक आदमी किसी को कत्ल करता है तो दूसरे को अपने डिफैन्स का हक है। लेकिन अगर एक आदमी मेरी नस को काटता है, मेरी लाईफ को लेता है, तो यह लीगली ठीक कत्ल किया है। एक आदमी को राईट आफ पर्सनल प्रॉपर्टी है, राइट आफ पर्सनल बॉडी है। उन तीन सिपाहियों का कौन कातिल है। तीन लाख लोग वहां क्यों इकट्ठे हुए यह बात साफ करनी चाहिए। इतनी बड़ी सच्चाई का तो कम से कम कत्ल न करो।

श्री अध्यक्ष : आर्डर प्लीज।

Education Minister (Pandit Chiranji Lal Sharma) : I rise on a point of Order. I do not know whether my information is correct. But i understand that the matter is sub-judice and if it is so, I would request the hon. Member not to speak in detail on it.

चौधरी प्रताप सिंह दौलता : जो सब–ज्युडिस है, उस पर नहीं बोलूंगा। मामला सब–ज्युडिस यह है कि मामला क्या है। यह सब–ज्युडिस नहीं कि आदमी मरें।

मुख्य मन्त्री (बनारसी दास गुप्त) : यह मामला सब–ज्युडिस। फिग्गर्ज गलत इकट्ठी की हुई है। फैसला तो कोर्ट ने करना है कि कौन मुजरिम है।

श्री अध्यक्ष : जो मामला सब–ज्युडिस है, उस पर डिस्क ान न करें।

चौधरी प्रताप सिंह दौलता : वहां पर क्या वाक्या हुआ, यह सब–ज्युडिस है। यह सब–ज्युडिस नहीं कि आदमी मरे।

बनारसी दास गुप्त : मैं यह चैंलेज के साथ कह सकता हूं कि अगर छः आदमी वहां मरे हों,तो दौलता साहब साबित कर दें।

श्री अध्यक्ष : जब केसिज रजिस्टर हो चुके है, तो मामला सब–ज्युडिस है।

Pandit Chiranji Lal Sharma : The hon. Member does have a right to speak on family planning. He may criticise the Government but without particular reference to the Pipli incident.

चौधरी प्रताप सिंह दौलता : स्पीकर साहब, मैं गवर्नमैंट को सुझाव दे रहा हूं कि इससे हकूमत .....

श्री अमर सिंह : स्पीकर साहब, मेरा प्वांयट आफ आर्डर है, चूंकि यह मामला सब–ज्युडिस है, इसलिए आनरेबल मैंबर ने इस बारे में जो कुछ कहा हे, वह एक्सपंज होना चाहिए।

चौधरी प्रताप सिंह दौलता : स्पीकर साहब, जो मामला पिपली में हुआ है, उसके बारे में एडमिनिस्ट्रे ान का मजाक न उड़ाया जाए। पुलिस रिपोर्ट में न कहा जाए कि बी.डी.ओ. थानेदार किसी और काम से गए थे। पुलिस की यह रिपोर्ट कि वे लोग किसी और काम से गए थे, यह बात हाउस में न कहीं जाए।

इस किस्म की रिपोर्ट लिखना ठीक नहीं है। दूसरी बात यह है कि जो भी केस है उनको विदड्रा किया जाए। वे बेचारे गरीब आदमी है। वे गांव के भोलेभाले आदमी है।

Mr. Speaker : No reference to that specific incident please.

चौधरी प्रताप सिंह दौलता : मेरी चीफ मिनिस्टर साहब से आपके थ्रू प्रार्थना है कि जितने भी पैंडिग केसिज है, उनको विदड्रा किया जाए। मैं फैमिली प्लानिंग पर इतना ही कहना चाहता हूं।

एजुके ान के बारे में मैं स्पीकर साहब, यह अर्ज करना चाहता हूं कि अरबन रूल्ज की डिस्क्रिमिन ान खत्म होनी चाहिए। मुझे याद नहीं कि चण्डीगढ और दूसरे रोहतक जैसे बड़े–बड़े भाहरों में कोई भी बिल्डिंग लोगों के चन्दे से बनी हुई हो। सरकार खुद बिल्डिंग्ज बनाती है। और जब गांवों में कोई बिल्डिंग बनवाने का सवाल पैदा होता है तो पंचायतों को आगे खड़ी कर देते है। कि आप चन्दा दो, तो यह जो इस तरह की बिस्क्रिमिने ान है, उसको खत्म किया जाना चाहिए। दूसरे मैं यह कहना चाहूंगा स्पीकर साहब कि पिछली बारि ाों के दिनों में जिन स्कूलों की बिल्डिंग्ज बुरी तरह से गिर गई है, डैमेज हुई है, उस बारे में सरकार एक सर्वे करवाए कि किस–किस बिल्डिंग को नुकसान पहुंचा है और फिर सरकार उसकी रिपेयर करवाए।

इससे आगे मैं सड़कों से मुतालिक वजीर साहब से कहना चाहता हूं कि अभी तक जो सड़कें अधूरी पड़ी है, सड़कों के इर्द–गिर्द रोड़ी खराब जा रही है, ईंटें खराब हो रही है, उनका फायदा उठाते हुए उन अधूरी सड़कों को जल्द से जल्द पूरा किया जाए। स्पीकर साहब, अब मैं एग्रीकल्चर प्रोडक ान पर आता हूं पर इस से पहले मुझे हाउसिंग के बारे में एक बात याद आ गई है। हाउसिंग के बारे मुझे इतना कहना है कि गरीब आदममयों को जो मकान दिए गए है। वह बहुत अच्छी बात है, लेकिन जो प्लाट्स दिए गए है, वह पंचायतों से लेकर दिए गए है और उसके इवज् में पंचायतों को कोई कम्पनसे ान नहीं दिया गया है। अगर सरकार ने कोई क्रेडिट लेना है, तो उन पंचायतों को कम्पनसे ान दिया जाए, करने को तो जिमीदारों की जमीनें वैस्ट कर लीं और हरिजनों को दे दी पर उन्हें कोई कम्पनसे ान तो दे दें। कहने को तो रोज रेड़ियों पर यह कह दिया कि हमने इतने प्लाट वहां हरिजनों को दे दिए, इतने वहां दे दिए, इतने वहां बंटे, इतने यहां बंटे तो मेरी फिर यह सरकार से आपके द्वारा रिक्वैस्ट है कि जिन लोगों से जमीनें ली गयी हैं, उन्हें कम्पनसे ान दिया जाए।

स्पीकर साहब, इसके बारे मैं यह कहूंगा कि रूरल प्रोडक ान में जिमीदारों ने जो तरक्की की है, मैं उन्हें बधाई देता हूं, लेकिन सरकार से आपके द्वारा यह कहूंगा कि लोगों को इसके लिए इनाम दे, सजा न दें, सच यह है कि जब उन को कास्ट आफ

प्रोडक ान पैदावार की कीमत आप देनें के लिए ही तैयार नहीं है, तो फिर तो उन लोगों को यह सजा ही हुई, जैसे वकील अपनी फीस 700, 1000, 1200 जितनी चाहे लें, उस पर किसी प्रकार की कोई रोक टोक नहीं है, उसी प्रकार इन गरीब आदमियों को भी अपनी पैदावार की सही कीमत मिलनी चाहिए, इसके साथ किसी प्रकार डिस्क्रिमिने ान नहीं होना चाहिए। स्पीकर साहब, जो पैदावार करता है, उसकी बजाए, उसके अनाज की कीमत सरकार मुकरर्र करे, यह गलत बात है। जुलाहा जो अपनी प्रोडक ान खुद करता है, उस पर भी कोई रोक टोक नहीं, कारखानेदार जो अपना सामान बनाता है, उस पर भी कोई रोक नही, तो फिर इन गरीब का तकारों पर ऐसी पाबन्धियां नही होनी चाहिए – (विघ्न) – स्पीकर साहब, मैंबर साहेबान ने बीच में टोक दिया कल क्व चन आवर में चीफ मिनिस्टर साहब ने अपोजी ान वालों से कहा कि अब तो केन्द्र में आपकी सरकार है, क्या अब भी हमको उतना ही पानी मिलेगा, जितनी कि पहले मिलता था। स्पीकर साहब, मैं इस बात से हैरान हूं कि आज तक अपोजी ान हमे ाा रूलिंग पार्टी वालों से अ योरैंस मांगती है, पर अब रूलिंग पार्टी वालों ने अपोजी ान वालों से अ योरैंस मांगी है। यहां तक कांस्टीच्यु ान का ताल्लुक है, अपोजी ान की हैसियत से हमारा नेता तो श्री वाई.बी. चाह्वान है और आपका ताल्लुक श्री मुरार जी देसाई से है – (विघ्न)

श्री के.एन.गुलाटी : स्पीकर साहब, मेरा प्वाइंट आफ आर्डर है (ाोर)

श्री प्रताप सिंह दौलता : कभी तेरे बाप दादा ने भी प्वांयट आफ आर्डर किया है (ाोर–विघ्न)

श्री के.एन.गुलाटी : स्पीकर साहब, मुझे बडत्रे दुख के साथ कहना पड़ता है कि आनरेबल मैंबर इतने पढ़े लिखें होते भी ऐसी बात करते है उन्हें भाोभा नहीं देता ऐसे इररैलेवैंट किसी को कहना ठीक नही है कि मेरा बाप दादा ने भी कभी (ाोर) He should withdraw these words.

श्री बनारसी दास गुप्त : स्पीकर साहब आनरेबल मैंबर को यह भाब्द भाोभा नहीं देते क तेर बाप दादा ने या किसी के बाप दादा ने – यह भाब्दवापिस लिए जाने चाहिए।

चौधरी रिजक राम : स्पीकर साहब, साथ में यह भी होना चाहिए कि खामखा की इन्ट्रप ान भी न की जाया करे, अगर रैलेवैंट प्वांयट आफ आर्डर हो तो ठीक है (विघ्न)।

श्री बनारसी दास गुप्त : अध्यक्ष महोदय, आप देखें कि कोई आदमी बीच में उठकर बेमतलब की इंट्रप ान न करे, वैसे रूल्ज के अनुसार हर आनरेबल मैंबर को यहां प्वायंट आफ आर्डर उठा ने का अधिकार है और यह काम अध्यक्ष महोदय का है कि वे उसको रिजैक्ट करें या कि एक्सैप्ट करें ..... (Interruptions)

Mr. Speaker : Order please, No interruptions.

श्री प्रताप सिंह दौलता : स्पीकर साहब, मेरा कहने का मतलब है कि (ाोर)

Mr. Speaker : Order please. The words used by Shri Daulta....

श्री प्रताप सिंह दौलता : स्पीकर साहब, मैं इन अलफाज को वापिस लेता हूं (ाोर)। I withdraw those words .....

श्री के.एन.गुलाटी : स्पीकर साहब, मेरा प्वांयट आफ आर्डर तो अभी बाकी है (हंसी)।

पंडित चिरंजी लाल भार्मा : स्पीकर साहब, अगर दौलता साहब को यह पता होता कि अभी इनका प्वांयट आफ आर्डर बाकी है तो वह विदड्रॉ न करते।

श्री के.एन.गुलाटी : स्पीकर साहब, प्वांयट आफ आर्डर के साथ मेरी सबमि ान है कि ये तो केवल 10–12 मैंबर है, और हमारे 60 से ऊपर मैंबर है, इनका टाइम फिक्स कर दिया जाए और हमारा भी कि हम कितने कितने टाइम के लिए बोलेंगे।

Mr. Speaker : No submission please.

चौधरी प्रता सिंह दौलता : स्पीकर साहब, प्रोडक ान के बारे में मैं अपने जमीदारों को दाद देता हूं कि इतनी लिमिटे ान्ज के बावजूद और इतनी कास्ट आफ प्रोडक ान के बावजूद भी उन्होंने इतनी प्रोडक ान बढ़ाई। फिर फाइनैंस मिनिस्टर साहब ने फरमाना कि यह परजम्प ान है कि आम कन्जम्प ान का इनडैक्स

यही रहेगा, तो मैं पूछना चाहता हूं कि इसकी क्या गारन्टी है इसलिए डैफिसिट के बारे में हम भयोर नही है कि कहां जा पहुंचे। अगली चीज इरीगे ान की है, जिसमें कि सतलुज जमुना लिंक कैनाल का जिक्र है। स्पीकर साहब, मैं बड़े अदब से कहना चाहता हूं कि कल क्वै चन आवर में जबकि कोई इसकी रैलेवैंसी भी नही थी, यह जिक्र आ गया – चीफ मिनिस्टर साहब ने एक अपोजी ान के मैंबर से कहा कि तुम यह गारन्टी दो कि जो पानी हरियाणा को पहले से मिला हुआ है, वह पानी वैसे ही मिलता रहेगा। तो मैं अर्ज करना चाहता हूं कि गवर्नमैंट हमने नहीं संभाली हुई है, गवर्नमैंट तो और लोगों ने सम्भाली हुई है, इसलिए हम गारन्टी कैसे दें (विघ्न)।

श्री बनारसी दास गुप्त : गारन्टी तो कल आपके सामने ही आई है कि उसमें ज्यादा पानी आएगा कम नहीं आएगा (विघ्न)।

चौधरी पीर चन्द : आप छोड़कर चले जाएं, फिर हम गारन्टी दे देंगे – (ाोर)।

श्री बनारसी दास गुप्त : स्पीकर साहब, कल एक आनरेबल मैंबर ने हाउस के अन्दर ऐसा कहा था कि जितना हिस्सा अब है, उससे ज्यादा ही दिया जाएगा, आप रिकार्ड से यह देख सकते है। चौधरी भजन लाल ने कहा था कि इस फैसले को कोई बदल नहीं सकता (ाोर)।

चौधरी राम लाल वधवा : यह नहीं कहा था कि ज्यादा मिलेगा, बल्कि यह कहा था कि ज्यादा देने की कोि ा ा करेंगे। (ाोर)

Mr. Speaker : Order please. where is the necessity of referring to the questions hour ? This is budget discussion, you can speak freely, where is the necessity of referring to the questions hour ?

चौधरी प्रताप सिंह दौलता : स्पीकर साहब, यह गल्ती मेरी हुई है, मैंने वैसे याद दिलाने के लिए जिक्र कर दिया था। स्पीकर साहब, मैं रावी ब्यास के पानी के बारे में जिक्र कर रहा था कि जो पानी पंजाब से हरियाणा को मिलेगा। इस बारे में बड़ा भारी कन्फ्यूजन है, मैं यह कहना चाहता हूं कि हरियाणा और पंजाब कोई दु मन स्टेट्स नहीं है, कल तक यह एक ही स्टेट भी और अब एक स्टेट के दो हिस्से हो गए है। मैं फाइनैंस मिनिस्टर साहब को कहूंगा कि वे जरा ध्यान दें कि हरियाणा जब बना तब इस तमाम सरकार में से सिर्फ एक फाइनैंस मिनिस्टर थे, जिन्होंने वकीलों की हरियाणा बनने के बाद पहली कान्फ्रेस की एड्रेस किया था कि हरियाणा बनाने में जो हाथ हरियाणा के लोगों का है, उससे बड़ा हाथ उस महान आदमी संत फतेह सिंह का था, जो दुनिया से चला गया है। जब हरियाणा के टुकड़े–टुकड़े करके इधर उधर मिलाने लगे, तो उन्होंने कहा मैं दो स्टेट्स चाहता हूं एक नहीं। मैं और मूल चन्द जी साथ गए थे प्राइम मिनिस्टर के पास। संत जी तो गुजर गए, लेकिन हम तो जिन्दा है। तो वे लोग

कौन होते है, जिन्होंने हरियाणाबनने में हिस्सा नही डाला और केवल मलाई खाई है। यह हमारी जिम्मेदारी है कि .....

Mr. Speaker : Order please, Is it relevent ----------

चौधरी प्रताप सिंह दौलता : स्पीकर साहब इसकी रैलेक्सी यह है कि अगर हम बजट की जनरल डिस्क ान पर कोई बात न कह सकें, तो कब कहेंगे (विघ्न) मेरी अर्ज यह है कि पानी हमें पूरा मिलेगा। पानी देने वाले जगजीवन राम थे, जो वहां मौजूद है : आपको अगर यह डर है कि सैन्टर से पानी नहीं मिलेगा, अगर आपको यह डर है कि सैन्टर की गवर्नमैंट और है, आपकी और है, पूरा फाइनैंस नहीं ले सकोगें, तो आप हरियाणा से निकल जाएं, हमकों बैठने दें, हम पूरा पानी लाएंगें (ाोर)।

श्री बनारसी दास गुप्त : अध्यक्ष महोदय, ये तो अकाली पार्टी के साथ पहले ही सौदा किए बैठे है, आप उनको मैनिफैस्टो उठा कर देख लें। हरियाणा के हितों के विरूद्ध इन्होंने ाड़यन्त्र किया है, इन्होंने दिल्ली में बैठकर यह साजि ा की है। मैं अकाली पार्टी का मैनीफैस्टो यहां पे ा कर सकता हूं (ाोर) इसके बारे में इन्होंने एक दिन भी कन्ट्राडिक ान नहीं की (ाोर)।

चौधरी भजन लाल : आपने जनता को बहकाने की बहुत कोि ा ा की, लेकिन जनता बहकी नहीं और जनता ने आप लोगों के गलत प्रोपगण्डे को ठुकरा कर जनता पार्टी को भारी बहुमत से कामयाब किया है।

श्री अध्यक्ष : कांस्टीच्यू ान में यह प्रोवीजन कहां है कि थोड़े मैबर्ज को इधर (ट्रेजरी बैंचिज की तरफ इ ाारा) बैठा दो और ज्यादा मैंबर्ज को उधर (अपोजी ान बैंचिज की तरफ इ ाारा) बैठा दो।

(इस समय कई सदस्य बोलने के लिए खड़े हुए (ाोर)।

Mr. Speaker : Order please, Please take your seats, No interruptions.

Chaudhir Partap Singh Daulata : There is no provision in the Constitution, sir, which enables a member, Leader of mthe House or the Ruling Party to ask for an assurance from the Opposition. This is my point.

श्री बनारसी दास गुप्त : तो फिर कल क्यों दे रहे थे ?

चौधरी प्रताप सिंह दौलता : आपने मांग ली और हमने फराखदिली में दे दी (ाोर)

Mr. Speaker : Order please, No interruptions.

पंडित चिरंजी लाल भार्मा : स्पीकर साहब, मैं एक सबमि ान करना चाहता हूं। अभी दौलता साहब ने कहा कि उन्हें इधर बैठने दो, हम यह कह देंगे वह कह देंगे। मैं बताना चाहता हूं कि हम न उनको इधर बैठने देंगे और न पानी का टोटा होने देंगे। जो फैसला हुआ है, वह कायम रहेंगा।

चौधरी प्रताप सिंह दौलता : स्पीकर साहब, मै। अपने लीडर आफ दी हाउस की बड़ी इज्जत करता हूं। मैं इसे सीरियसली लेता हूं कि अगर कोई एग्रीमैंट अपोजी ान पार्टी की तरफ से या किसी मैंबर की तरफ से किया जाता है और दूसरी पार्टी उसे डिस–आून करती है तो न वह हमारा लीडर है और न हमारा मैंबर है and we will expel him at once. i take the Leader of the ose very seriously.

Mr. Speaker : Please confine to the discussion on the Budget.

चौधरी प्रताप सिंह दौलता : स्पीकर साहब, अब मैं आपकी तवज्जूह ला ऐंड आर्डर ऐंड जस्टिस हैड के नीचे जो डिमांड है, उसकी तरफ दिलाना चाहता हूं कि हम पां साल के लिए कांस्टीच्यूट हुए थे। मैं कांस्टीच्यू ान के उस आर्टीकल की तरफ आपकी तवज्जुह दिलाना चाहता हूं। .....This House was constituted by electorates for five years, so was the Parliament, Parliament using a power, it was non there, extended its term to six years and we endorsed the amendment and I was one of those who opposed that extension. But the great democrat Shrimati Indira Gandhi has been defeated, she is not there in the opposition. This is unfortunate for India, she ought to have been there, She has paid a price India has paid a price for the follies of lesser persons who used their status to finish that lady as Prime Minster. मेरी अर्ज यह है कि पांच साल के बाद प्राइम मिनिस्टर ने जो एक साल की एक्सटैं ान ली थी, वह डैकोक्रेटिक लेडी जनता में गई और उसने

कहा कि हमे अमैंजमैंट के जरिए अपनी ऊमर 6 साल कर ली है। जनता ने अपनी वर्डिक्ट दे दी और कहा कि हमने आपको पांच साल के लिए इलैक्ट किया था। ..... स्पीकर साहब, लीडर आफ दी हाउस से मेरा सीधा सवाल यह है कि जनता की रिजैक ान के बाद, उस अमैंडमैंट के बाद और पांच साल के बाद कौन से ला के तहत यह हाउस अपनी म्याद बढ़ा रहा है एक साल की। मेरा यह चीप आर्गुमेंट नहीं कि इलैक ान में हार गए। यह तो मौरल ग्राउंड है और मौरल ग्राउंड उनके लिए भी लागू है, और हमारे लिए भी।

श्री अध्यक्ष : आर्डर प्लीज, आप बजट डिस्क ान के बाहर जा रहे है।

चौधरी प्रताप सिंह दौलता : मैं डिस्क ान से बाहर नही जा रहा, बजट पर बोल रहा हूं (व्यवधान) मैं लॉ ऐंड आर्डर पर बोल रहा हूं (व्यवधान)।

Mr. Speaker : Order please, This is not relevant. You can not speak on the constitutional amendment while discussion the Budget (interruptions). Order please. It has been ratified and it is a valid laws,

Chaudhri Partap Singh Daulta : This is a gangester style, he has come in a gangester style from Chicago and that style has gone. Now we are free men and we can have free dicussion. मेरी तो सिम्पल आर्गुमैंट है – (व्यवधान) – ये मुझे बोलने तो दें (व्यवधान) बोलने का अपना स्टाइल बदल लो –

जनता ने बता दिया है कि तुम अपना स्टाईल बदल लो बोलने का (व्यवधान)।

Mr. Speaker : Order please.

श्री के.एन.गुलाटी : दौलता साहब, आप इस्तीफा दे दो (व्यवधान)।

चौधरी प्रताप सिंह दौलता : स्पीकर साहब, मुझसे कहा गया कि इस्तीफा दे दो। स्पीकर साहब, हरियाणा में बेरी एक ऐसी कांस्टीच्युंएसी है, जिसमें कांग्रेस को 3700 वोट मिले, टौप पर है। मेरी कांस्टीच्युंएसी मेरे साथ है। अगर आपने रिजाइन करवाना है, तो उन 81 आदमियों से रिजाइन करवाओ, जिनको यह कांस्टीच्युएंसी रिजैक्ट कर चुकी है, जिनका कोई मौरल राइट नहीं है (व्यवधान)।

Mr. Speaker : Order please. This is not relevant and I will neither allow any irrelevant point of order to be raised nor irrelevant reply. Please confne yourself to the discussion on the Budget.

चौधरी प्रताप सिंह दौलता : ठीक है, मैं बजट पर कन्फाईन करता हूं ********** मैं क्या करूं, ये मुझे बुला लेते हैं (व्यवधान)

चौधरी मेहर चन्द : स्पीकर साहब, यह रस्टिक लैम्बेज इस्तेमाल नहीं होना चाहिए ********** बात यहां इस्तेमाल नहीं होनी चाहिए (व्यवधान) –।

Pandit Chiranji Lal Sharma : It is a reflection and we should take it seriously.

Mr. Speaker : Order please. This is a reflection on a member, these remarks will be expunged.

चौधरी प्रताप सिंह दौलता : मेरी किसी से लड़ाई नही है। मैं आपसे अर्ज करता हूं कि भोयर और सुखम तो हाउस में इरैलेवैंट है। पार्लियामैंट में हीरेन मुकर्जी ने मावलंकर से रूलिंग लिया था, यह इररैलेवैंट नहीं है When a situation is to be described by a popular saying or a dialect, that is not irrelevant and one can freely use that saying.

Pandit Chiranji Lal Sharma : This is irrelevant.

Mr. Speaker : Please do not cite any popular saying which is not in good taste to the Hon. Members.

चौधरी प्रताप सिंह दौलता : चलो, यह बात तो गई आई हो गई, अब मेरी बात सीधी है। Point of ordeqr is a sacred right लेकिन अगर कोई इरैलेवैंसी का टोकरा किसी प्वायंट आफ आर्डर से फैक दे, तो क्या करूं। मैं यह बात खत्म करता हूं और इंडस्ट्रियल प्वांयट पर आता हूं। महात्मा गांधी कोई जुलाहे तो नही थे जो चरखा काता करते थे। इसका मतलब यह हे कि

इन्सान को म ीनरी के मुकाबले मैं बेहतर सहूलियत मिलनी चाहिए। आज किसान की जमीन कौड़ियों के भाव बिक रही है। सबसे पहले मैं सी.एम. साहब और बाकी साहबान की तवज्जोह इस तरफ दिलाना चाहता हूं। मिस्टर बहुगुणा ने यू.पी. में सैन्ट्रल गवर्नमैंट से एक प्रिंसिपल एक्सैप्ट करवाया और वह प्रिंसिपल हमारी गवर्नमैंट को भी करना चाहिए। आयल इंडस्ट्री के लिए, सैन्ट्रल गवर्नमैंट ने मथुरा में जमीन मांगी, तो यू.प. गवर्नमैंट ने, सैन्ट्रल गवर्नमैंट को यह लिखकर भेजा कि पहले मार्कीट रेटस फिक्स करो और मार्कीट रेट पर जमीन लेकर उसको दो जो बिल्कुल बे–घराना चला आ रहा है। जिसकी जमीन एक्वायर करो उसके तीन लड़कों में एक एक को जरूरी सर्विस की अ योरैंस दो। मैं यह इंडस्ट्रियल पालिसी चीफ मिनिस्टर साहब के नोटिस में जाना चाहता था कि जब जमीदारों की जमीन मारूति वाले ले रहे थे, 100 रूपये बीघा बिकने वाली जमीन चवन्नी में ले रहे थे, तो जमीदारों का दिल कटता था कि चवन्नी में क्यो चली जाए। उस जमीन की प्राइम एडिकवेट ही नही, बल्कि बहुगुणा के फार्मूले के मुताबिक मिलनी चाहिए। ये तमाम सहूलियतें जो सरमाएदार, बड़े–बड़े इंडस्ट्रियलिस्ट्स उड़ाया करते थे, ये बन्द होनी चाहिएं और सबसे बड़े इंडस्ट्रियलिस्ट को, जिसको अन्नदाता कहते है, जो धरती का सीना चीर कर लोगों को अनाज देता है, ये सारे फण्डज इधर डाईवर्ट कर देने चाहिए। महात्मा गांधी ने चरखा चला कर यह बताया था कि एक मशीन चौधीर अमर सिंह के 329 लोगों को, चमारों को बेकार करतीं है। एक जूते की म ीन, मेरे

आनरेबल मैम्बर मैंबर मिस्टर गणपत राय की बिरादरी के कम से कम पांच हजार चमारों को बेकार करती है। अब वक्त आ गया है, क्योंकि गांधी आइडियल्ज का सी.एम. हमारा है, बहुत सारे कैबेनिट के मिनिस्टर गांधी के चेले है, सी.एम. का तो मुझे पता है कि वे तो गांधी के चेले है। वे सरमाएदार लोग, जिन्होंने इंडस्ट्रीज की बिना पर लूट मचाई हुई है, जो हर तीसरे दिन कम्पनी में जा रहे है। सैन्टर का मिनिस्टर आया है, उसकी फोटो खींच रहे है, एडवरटाईजमैंट कर रहे है, पैसे दे रहे है, यह तो जानकी दास की एक किस्म की तीर्थ यात्रास सी बन गई। इंडस्ट्रीज के नाम से we have had enough. Peasants have been robbed.d Khazana has been robbed. Now it should be stopped. मैं आपका ज्यादा वक्त न लेता हुआ एक बार फिर सी.एम. साहब से अर्ज करता हूं कि फैमिली प्लानिंग के जितने केसिज है All the cases should be withdrawn धीरे–धीरे अपनी इस नीति को कब्रिस्तान में डाल देना चाहिए, झूठे केसिज जो रजिस्टर करवाए है, यह कह कर कि पुलिस किसी और काम में गई थी, जो हम पहले कर चुके है, यह बहुत बेहुदा काम है। With this, sir, I bowmy head and thank you for giving me time.

चौधरी मेहर चन्द : स्पीकर साहब, हाउस में हीट जनरेट हो गई, यह नहीं होनी चाहिए। डिस्क ान बजट पर हो रही है और आपके हुक्म के मुताबिक बजट तक ही कन्फाईड होना चाहिए। अगर कोई अहम आइटम हो, या किसी अहम आइटम का प्रोविजन ओमिट कर दिया हो, तो उसके ऊपर बोलना चाहिए।

स्पीकर साहब, मैं दो तीन बातों के लिए सरकार की तारीफ जरूर करूंगा। पहली बात यह है कि आज तक जितने भी बजट बनाए गए है, वे सूझबुझ के साथ बनाए गए है और इसके नतीजे क्या है। नतीजे से पता चलेगा कि बजट वाकई ही सूझबूझ के साथ बनाया गया है। सिंचाई के साधन बढ़े। जिस वक्त हरियाणा वजूद में आया कहां गए दौलता साहब, मैं उनको बताना चाहता हूं कि जिस वक्त हरियाणा वजूद में आया उस वक्त 37 लाख एकड़ जमीन में आबपा ाी होती थी। यानी 33 लाख एकड़ में नहर का पानी गलता था और 4 लाख में टयूबवैल्ज के जरिए आवपा ाी होती थी। इसके मुकाबले में अग 55 लाख एकड़ जमीन में आवपा ाी होती है, क्या यह कम प्रगति है। 40 लाख एकड़ पर नहरी पानी लगता है और 15 लाख एकड़ पर टयूबवैल्ज का लगता है, यानि अगले दो सालों में आबपा ाी 80 लाख एकड़ पर पहुंच जाएगी। मैं आपको बता देना चाहता हूं कि अगर कोई मेरी फिग्गर्ज को चैलेंज करना चाहता है तो मैं चैलेंज एक्सैप्ट करता हूं। दो साल के बाद 80 लाख एकड़ में आबपा ाी होगी। 7 लाख एकड़ में नहर का पानी होगा और 20 लाख एकड़ को टयूबवैल्ज या दूसरे साधनों से पानी मिलेगा। इसके मायने यह हुए कि 80 लाख एकड़ में जब आबपा ाी हो जाएगी, तो हरियाणा का काबलेका त रकबा लगभग 95 लाख एकड़ है, जो कि 84 फीसदी एरिया में वाटर सप्लाई होगा from one souce or the other. क्या यह कम अचीवमैंट है। वैसे आप बुराई कीजिए, किसी के साथ अगर कोई ज्यादती की है, उसके लिए मैं कुछ नही कहता, लेकिन

बजट के ऊपर यह बात नहीं कह सकते कि बजट बड़ी लापरवाही से बनाया गया है। बजट सही पैमाने से बनाया गया है। बजट में नहरी पानी के लिए जो प्रोविजन दिया गया है, यह किस लिए दिया गया है, मैं दौलता साहब से एक बात कहूंगा और वे इस बात में मेरे साथ एग्री भी करेंगे। मैं निडरता से, बिना खौफ से कहूंगा। जितना खर्च इस सरकार ने किया है और किसी भी सरकार ने इतना पैसा खर्च नहीं किया और न ही कोई आने वाली सरकार कर सकेगी। यह बात मैं दावे के साथ कह सकता हूं। बजट के पैरों से सारी फिग्गर्ज नहीं दी है। नहरों को बनाने के लिए काफी पैसा खर्च किया गया है। इस बारे में मैं सरकार को दाद दिए बिना नहीं रह सकता। काबले तारीफ काम किया है।

इसके अलावा बिजली का उत्पादन भी बढ़ा है। एग्रीकल्चर के लिए और इंडस्ट्री की ग्रोथ के लिए बिजली का उत्पादन बढ़ाना बहुत ही जरूरी है। जिन मुल्कों ने तरक्की की है, उन सभी ने बिजली के साधनों से की है। मैं बिजली के बारे में कुछ फिग्गर्ज देना चाहता हूं कि जब हरियाणा बना था, उस वक्त हमारे पास कितनी बिजली थी, आज कितनी है ? उस वक्त हमारे पास केवल 380 मैगावाट बिजली थी। 300 मैगावाट भाखड़ा की थी 15 मैगावाट फरीदाबाद से आती थी और 65 मैगावाट देहली से मिलती थी। आज बिजली का उत्पादन 485 मैगावाट हो गया है। मैं हाउस को मुगालते में नही रखना चाहता हूं, इसमें मैंने 300 मैगावाट भाखड़ा वाली को भाामिल नही किया है, उसको क्यों

करूंगा ? जिस वक्त भाखड़ा से पानी मिल जाएगा, उस वक्त बिजली का उत्पादन इन्करीज होगा। फरीदाबाद से जो बिजली मिलती है, वह 120 मैगावाट है, वहां पर साठ–साठ मैगावाट के दो थर्मल प्लाण्ट्स है। मैं कोई गलत ब्यानी नही कर रहा हूं। दिल्ली से हमें 65 मैगावाट बिजली मिलती है, उसके बारे में मैनें पहले भी अर्ज किया है। दो साल के प चात बिजली की कुछ और ही पोजी ान होगी। यह बात आपको नहीं भूलनी चाहिए कि मैं सरकार का भी बड़ा क्रिटक रहा हूं। मैं हमे ाा निडरता से बोलता हूं। जहां सरकार को भााबा ाी देने की जरूरत है, वहां भााबा ाी देनी चाहिए, अगर हम सरकार को भाबा ाी नही देते है। तो हम गुनाहगार है। मैं यह महसूस करता हूं कि दो साल के बाद बिजली का उत्पादन 1136 मैगावाट हो जाएगा। इसका उत्पादन इस तरह से है – भाखड़ा से 350 मैगावाट मिलेगी। मैनें केवल 50 मैगावाट की एडी ान की है। वह भी उस समय जब रावी व्यास का पानी गोबिन्द सागर में आ जाएगा, उस वक्त बिजली का उत्पादन बढ़ेगा। फरीदाबाद से 180 मैगावाट मिलेगी, वहां पर तीन थर्मल प्लांट्स है। देहली से वही 65 मैगावाट मिलेगी। पानीपत से 220 मैगावाट मिलेगी। 110–110 मैगावाट के दो थर्मल प्लांटस लग रहे है। वहां पर काम हो रहा है। पहले काम ढीला था अब ठीक चल रहा है, हम जब वहां से रोहतक को जाते है, तो बिजलीघर के पास से जाना पड़ता है, काम काफी अच्छी चल रहा है। इस बारे में हरियाणा सरकार को भााबा ाी देनी चाहिए लेकिन क्रिटिसिजम करना भी हमार बर्थ राइट है, मैं क्रिटिसाइज भी करता

हूं लेकिन जहां पर गवर्नमैंट का काम ठीक हो, वहां पर सराहना करनी चाहिए।

इसके अलावा दादुपुर के अन्दर जो वैन्ट्रन जमना कनाल है, वहां से भी 60 मैगावाट बिजली मिलेगी। पंडोह से भी 260 मैगावाट बिजली आएगी, जब वहां पर व्यास का पानी आ जाएगा। ये जो फिग्गर्ज मैनें दी है, इनकी मैं जिम्मेदारी लेता हूं। मुझे सरकार से भी कोई डर नही है। अगर ये फिग्गर्ज गलत हों, तो मुझे जो चाहे सजा दे सकते है। बिजली के उत्पादन` साधन तो ओर भी बढ़ाए जा रहे है। हमारी सरकार ने हिमाचल से भी एग्रीमैंट किया है। वैसे तो यह एग्रीमैंट बहुत लम्बा है। 8–10 साल में तो दुनियां ही तबदील हो जाएगी, लेकिन हम यह तो कहेंगे कि हमारी सरकार ने कोई एग्रीमैंट तो किया है। इसमें से हमें 80 परसैंट बिजली मिलेगी 80 परसैंट कोई थोड़ा हिस्सा नही होता है।

मैं एक बात और अर्ज करना चाहता हूं, वह है जमीन की सीलिंग के बारे में। जमीन की सीलिंग का चर्चा यहां आउस में बार–बार किया जाता है। जमीन की सीलिंग बिल्कुल सही हुई है। सीलिंग करने का क्रैडिट भी इसी सरकार को जाता है। जब इस सरकार को बदल देंगें, तब भी इसी को जाएगा।

इसके अलावा किसानों की पैदावार के बारे में दौलता साहब ने जो बात की है, उससे मैं सहमत हूं। अगर मैं दौलता

साहब की बात से एग्री नहीं करता हूं, तो यह मेरे लिए ठीक नहीं होगा। पैदावार की कीमत कुछ गिर गई थी, लेकिन अब चीफ मिनिस्टर साहब ने जगह जगह पर यह कहा है और यकीन दिलाया है कि मैं पैदावार की कीमत दिलाने की कोि ा ा करूंगा और यह बात किसी हद तक सही भी हे और हमें इसको मानना भी चाहिए। यह बात जरूर ठीक निकलेगी। (इस समय उपाध्यक्षा पदासीन हुई।) अब भावों का लैबल ठीक हो गया है। अगर इसे भी अच्छा लैवल भावों का कर दिया जाए, तो उनकी बड़ी मेहरबानी होगी। मैं चीफ मिनिस्टर साहब के और भी गीत गाऊंगा। मेरे विचार के अनुसार इससे ज्यादा भाव वे न दे सकेंगे क्योंकि उनको चारों तरफ ध्यान करना पड़ता है। अगर ज्यादा भाव बढ़ा दिए तो गरीब लोग कहेंगे कि हमें मार दिया। इस तरह से उनसे भी बचना निहायत जरूरी है। अनाज की पैदावार से काफी बढ़ौत्तरी हुई है। जब हरियाणा वहूद में आया तो 25 लाख टन पैदावार थी, लेकिन अब डबल हो गई है, यानी पचास लाख टन हो गई है। यह बड़ी अच्छी बात हुई है, इसलिए हरेक आदमी को सरकार की सराहना करनी चाहिए। किसान सबसे पहले है। किसान अपने खून पसीने को बहाकर पैदावार को बढ़ाता है, लेकिन उसको सरकार भी तो साधन देती है। अगर किसान को सरकार बिजली रैगुलर न दे, नहर का पानी टाईम पर न दे, तो सरकार भी दोशी हो सकती है। मैं तो यह कहूंगा कि इस सरकार के टाईम में कहतसाली के मौके पर भी पैदावार का लैवल ठीक रहा।

वह क्यों ठीक रहा ? बिजली और पानी की सप्लाई रैगुलर रही, सिर्फ वर्शा पर मुनहसर नहीं रहे।

मैं पहले तो को–आप्रेटिव डिपार्टमैंट का क्रिटिक रहा हूं, लेकिन अब एक बात जरूर कहूंगा कि अब को–आप्रेटिव डिपार्टमैंट ने देहातों में जो बैंक्स खोले है, उन्होंने जमीदारों पर बड़ा भारी अहसान किया है। प्रैजैन्ट रजिस्ट्रार को–आप्रेटिव सोसायटी ने बड़ा भारी काम किया है। मैं उनका इस काम के लिए भााबा ा देता हूं।

हसके अलावा इंडिस्ट्रियल ग्रोथ भी हुई है। इंडस्ट्रियल ग्रोथ कई जगहों पर केवल भाहरों में हुई है। इस बात का मुझे दुख जरूर है। इंडस्ट्रियल ग्रोथ भाहरों में ही क्यों हो। मैंने पिछली दफा भी कहा था कि वजीर इंडस्ट्री को देहातों की तरफ भी ध्यान देना चाहिए। देहातों के अन्दर वोटर ज्यादा रहते है, वे हमारे उलट भी जा सकते है। इसलिए आप देहातों की तरफ भी ध्यान दें। वहां भी इंडस्ट्री चालू कीजिए। फरीदाबाद, पानीपत और सोनीपत में ही इंडस्ट्री क्यों लगाई जाती है। देहात में भी इंडस्ट्री अव य लगाएं, वहां पर गरीब आदमी रहते है, वहां से भी बेकारी हटाइए। वहां पर गुड्स इंडस्ट्री लगाए।

कल मैंने एक सवाल किया था, उसका जवाब मुझे बड़े ही राउंड अबाउट में दे दिया गया। अब डिप्टी स्पीकर साहिबा, मैं क्वै चनअवर की बात तो नही करता, क्योंकि स्पीकर साहब ऐसी

रूलिंग दे गए है कि हमारे मुंह बन्द हो गए है। कल एक सवाल के जवाब में कोई डिफिकल्टी नहीं आ रही है। इनका जवाब यह था : "No difficulty is experienced." This is a reply from the bureaucracy and not from the popular Government. This was not a correct reply. तो मेरा कहने का मतलब यह है कि व्यूरोक्रेसी ने जो जवाब दिया, वह यहां पढ़ दिया गया। इसका रिप्लाई तो यह होना चाहिए था कि हम सर्वे करवा रहे है। लेकिन इन्होंने तो कुछ नीचे से लिखकर आया, वह पढ़कर चहां पर सुना दिया, जो कि ठीक उही था। मैं एक बात और कहूंगा हमारे चीफ मिनिस्टर साहब बार–बार यह कहते है कि रूरल आर्टीजन्ज यानी वीवर्ज और कोबलर्ज को कर्जें दे दिए गए हे, यह कर्जें देना जरूरी चीज थी। जहां मैं दाद देता हूं, वहां मैं खामियां भी बताऊंगा, मैं उन्हें यह भी बता देना चाहता हूं कि यह जो आपके कर्जें है, यह उतने लोगों को नही मिले, जितने लोगों को मिलने चाहिएं थे। एक बात मैं जरूर कहना चाहता हूं कि यह कह देना कि कोई गलती हमारे अफसरान से नही होती, यह बिल्कूल गलत है। मैं एक भोयर कहना चाहता हूं :–

हमने सींचा है खूने दिल से मन, पत्ते–पत्ते से आ ाकारा है,

नीयते बागवां दरूस्त नहीं, वनरा गुल ान पे हक हमारा है।

(ाोर एवं व्यवधान) – मैंने यह बात बैड टेस्ट में नही कहीं, मैंने तो गुड टेस्ट में कही है।

चौधरी प्रताप सिंह दौलता : डिप्टी स्पीकर साहिबा, आन ए प्वांयट आफ आर्डर। डिप्टी स्पीकर साहिबा, यहां पर इलैक ान का क्या सीक्वैंस था, यह रैलेवैंन्ट है, तो फिर मुझे बोलने से क्यों रोक दिया गया था ?

Deputy Speaker : This is not Point of Order.

चौधरी मेहर चन्द : मैनें तो इलैक ान की बात नही की है। मैनें तो गवर्नमैंट को और अपोजी ान वालों को यह बताया है कि हरियाणा का पत्ता–पत्ता इस बात का गवाह है कि हरियाणा में डिवैल्पमैंट हुई है। मैं गुलाटी साहब जैसा नही हूं।

चौधरी प्रताप सिंह दौलता : डिप्टी स्पीकर साहिबा, आनरेबल मैंबर को अपना मुकाबला गुलाटी साहब से करके अपनी बेइज्जती करने का कोई हक नही है।

Deputy Speaker : I would reuest the hon. Member to use the microphone while speaking.

चौधरी मेहर चन्द : आल राइट मैडम, मैं बजट पर आता हूं। बजट के अन्दर जो लाइनिंग आफ वाटर कोर्सिज की बात कही गई है, मैं उस पर आता हं। जो यह प्रोजैक्ट है, और जिस पर काम चल रहा है, यह तो अच्छा है, लेकिन इसकी एक्सीक्यू ान ठीक ढंग से नहीं हो रही है। जो स्कीम बन गई है,

और जिस स्कीम पर एक्सीक्यू ान हो रही है, मैं मुख्य मन्त्री जी को यह बता देना चाहता हूं कि हमारे इलैक ान के टाईम पर भी यही बात आएगी। जो अनपढ़ किसान है, वह एक बात समझता है। वह खड़ा होकर यही सवाल पूछेगा कि जब गवर्नमैंट आपकी थी, तो आपने ऐसा क्यों किया। जो लो–लाईंग एरियाज है, वहां आज वाटर कोर्सिज पक्के नही किए जाते, जो सैडी एरियाज है, वहां पर वाटर कोर्सिज पक्के क्यों नही किए जो। स्कीमें आप ि ाक कैसी भी हो बनाते चले जाएं, लेकिन जब तक उनके लो–लाईंग या सैंडी एरियाज में वाटर कोर्सिज पक्के नहीं किए जाते, आपकी बात बनने वाली नही है। आज जो कल्टीवेटर है, वह बड़ा एक्सपर्ट है। आज उसके खेत में पानी नही पहुंचता। खेत में पूरा पानी नही पहुंचता। वह यह कहता है कि आप इसे किसान की सरकार कहते हो, लेकिन इसमें भी उसे पूरा पानी नही पहुंचता। मैंने खुद अपनी कांस्टीच्युंएसी मं यह दिक्कत को देखा है। इसके अलावा मैं एक बात और अपग्रेडिंग आफ स्कल्ज के बारे में बड़े दुख के साथ कहना चाहता हूं। फाइनैंस मिनिस्टर साहब, मुख्य मन्त्री साहब तथा एजुके ान मिनिस्टर साहब यहां पर बैठे हुए है, वह कृपया ध्यान दें। उन्होंने तो अपग्रेडिंग आफ स्कूल्ज का नाम ही मिटा दिया। मैं यह कहूं कि जब से यानी 1972 से मैं एम.एल.ए. बनकर यहां आया हूं, तब से लेकर आज तक कोई स्कूल अपग्रेड नहीं हुआ है। हो सकता है कि हमें इलैक ान भी फेस करने पड़ें, अगर विधानसभाएं टूट गयी तो। मैं यह कह रहा था कि 1972 से हमारे यहां एक भी स्कूल अपग्रेड नहीं हुआ मैं यह कहना चाहता हूं कि मैं तो यह

बात बोलते–बोलते थक गया, लेकिन हमारी सुनाई नही हुई। न लीडर आफ दी हाउस ने सुनाई की और न ही एजुके ान मिनिस्टर साहब ने कोई सुनाई की। अपग्रेडिग आफ स्कल नही की गई। यह चीज है जो लोग हमसे पूछते है। लोग यह कहते है कि आपकी कारगुजारी नहीं है। देहाती आदमी आपकी बारीकी में नही जाता क नोटिंग आयी और चली गई। मैं यह कहना चाहता हूं कि अभी भी आपके पास टाईम है। यह बजट तो इस बारे में साइलैन्ट है, लेकिन बजट आपके सामने है, आपके पास साधन मौजूद है। इस बजट में अगर प्रोवीजन नही हे तो सप्लीमैंट्री आ सकत है, लेकिन आपकी अपग्रेडिंग आफ स्कूल्ज अव य होनी चाहिए। यह मेरी वार्निन है और मेरी रिक्वैस्ट भी है। इसके अलावा डिप्टी स्पीकर साहिबा, मैं एक बात और कहूंगा। हरियाणा में हमारे यहां तीन यूनिवर्सिटीज है। हरियाणा सरकार उनके ऊपर काफी रूपया खर्च कर रही है। एक तो एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी हिसार है, एक रोहतक में बनी है और एक कुरूक्षेत में है। मैं यह बात दावे के साथ कह सकता हूं कि in the matter of recruitment fair deal is not given to the residents of Haryana. I have personal experience of atleast one University i.e. the Kurukshetra University. कुरूक्षेत्र में तो हमारे वे लड़के भी लिए नही जाते, जिनका कैरियर मिडल से लेकर मैट्रिक तक ही नहीं, एम.एस.सी. तक बहुत अच्छा रहा है और जिन्होंने यूनिवर्सिटी में पोजी ान हासिल की है। उन यूनिवर्सिटी को कहां से पैसा आता है ? हम देते है, हरियाणा सरकार देती है। वे हरियाणा के उन नौजवानों

को भी रिजैक्ट कर देते है, जिनका कैरियर ए–वन होता है। कुरूक्षेत्र यूनिवर्सिटी वाले हरियाणा के लोगों के नाम से चिढ़ते है, यह बात मैं नहीं कहना चाहता, क्योंकि यह बात मेरे मूंह से जंचती नही है .....

उपाध्यक्षा : चौधरी साहब, आप कितना टाईम और लेंगें।

चौधर मेहर चन्द : बहिन जी, मुझे जब आप कहेंगी, मैं तभी बैठ जाऊंगा, मगर खुदा के वास्ते मुझे कुछ देर तो बोल लेने दीजिए। मेरा सुझाव 11.00 बजे यह है कि यह यूनिवर्सिटी में और एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी में लोअर सर्विसिज और हायरसर्विसिज के लिए एक रिक्रटमैंट बोर्ड होना चाहिए ताकि हमें फेयर डील मिले। मैं कहना चाहता हूं कि हमारे जो भााइनिंग लड़के है, जिनका कैरियर अच्छा है, उनको तो कम से कम जगह मिलनी चाहिए। जिन्होंने हरियाणा के अन्दर जन्म लिया है, कम से कम उनको तो जगह मिलनी चाहिए। जब मैं एस.वाई.एल. लिंग कैनाल के बारे में कहना चाहता हूं। इस पर जो काम हुआ है, उसके लिए सरकार वाकई भााबा ाी की मुस्तहक है। और जिस स्पीड से काम हुआ है, उसके लिए मैं अफसरान ओर उनके ऊपर जो सैक्रटरी बैठे है, उनकी तारीफ करूंगा लेकिन मुझे एक डर है कि पंजाब में काम भाुरू नही हुआ है। पंजाब में काम हायर लैवल पर भाुरू करवाइए, वरना मुझे जो बड़ा भारी डर है, वह मैं बताना चाहता हूं कि अकाली जो बहुमत में है, और उन्होंने चुनाव मैनिफैस्टो में इस

बारे में कहा है। आगे चलकर वे कहेंगें कि कैरियर चैनल तो है नही, हरियाणा वाले पानी कहां से ले जाएंगे। हरियाणा के साइड पर जो रूपया लग रहा है, वह चैनल्ज सूखी ही रह जाएगी। डिप्टी स्पीकर साहिबा, आप बहुत बेताब हो रही है, इसलिए मैं बैठ जाता हूं। मैं आपका धन्यवाद करता हूं कि आपने मुझे बोलने का टाइम दिया।

चौधरी राम लाल वधवा (करनाल) : डिप्टी स्पीकर साहिबा, 1977–78 का बजट सदन में प्रस्तुत हुआ है। हमारे बुजुर्ग वित्त मन्त्री महोदय ने इसको प्रस्तुत किया है और बजट को जिस मधुर और सुरीली बोली में पे ा किया है, उसकी मैं सराहना करता हूं – (तालिया)। डिप्टी स्पीकर साहिबा, इस बजट की सबसे बड़ी बात यह है कि डैफिसिट बजट पे ा किया गया है। सरकार ने जो डैफिसिट दिखाया है, उसके पबारे में कुछ भी नहीं कहा कि वह उसको कैसे पूरा करेगी। बजट में यह नही बताया गया कि वह टैक्स लगाएगी या नहीं लगाएगी लेकिन डैफिसिट बजट पे ा करने का यह अर्थ होता है कि सरकार दूसरे तरीके से टैक्स लगाए। मैं समझता हूं कि यह तरीका गलत है जब बजट सदन में आया तो वह बताया गया कि हम कोई टैक्स नहीं लगा रहे है। पिछले सालों में भी यह होता रहा है कि बजट पे ा करने के समय कोई टैक्स नहीं लगाते और इस प्रकार जनता की वाह–वाह हासिल करते है कि कोई टैक्स नही लगाया जा रहा है। लेनि उसके बाद टैक्स पर टैक्स लगा देते है। जो टैक्स लगाए जाते है, उनके बारे

में सदन को वि वास में नही लिया जाता। डैमोक्रेसी में यह तरीका गलत है। सरकार जो भी टैक्स बढ़ाए, उसका बजट में प्रोवीजन होना चाहिए, और सदन को वि वास में लिया जाना चाहिए। तीसरी बात, डिप्टी स्पीकर साहिबा मैं यह कहना चाहता हूं कि बजट स्पीच के अन्दर वित मन्त्री महोदय ने होम, पुलिस और जेल के बारेमें एक भाब्द भी नहीं कहा और ठीक है कह भी नही सकते। बजट के अन्दर इस बात का वर्णन न करना इा बात की तसदीक है कि पिछले दिनों अमरजेंसी के अन्दर जो कुछ भी हरियाणा के अन्दर हुआ है उसके बारे में बजट के अन्दर गवर्नमैंट एक भाब्द भी कहने की जुर्रर नहीं कर सकती। मैं इसके बारे में कुछ कहना चाहता हूं। बजट में होम और जेल के ऊपर रूपया खर्च किया जा रहा है। मैं इसके बारे में चन्द बातें सदन के सामने रखना चाहता हूं। डिप्टी स्पीकर साहिबा आपको पता है कि हरियाणा के अन्दर एमरजेंसी को किस तरीके से अन्धाधुन्ध इस्तेमाल किया गया। मीसा जैसे कानून लागू हुए, लेकिन उसका जो इम्प्लीमैटे ान हुआ, उसका विस्तार से मैं वर्णन करना चाहता हूं। सारे दे ा में एमरजेंसी ..... है, लेकिन हरियाणा में यह नौ साल से लागू है, लेकिन इन दो सालों में जो कुछ हुआ है, उसकी मिसाल नहीं मिलती। रातों रात सैकड़ों लोगों को जेल में बन्द कर दिया गया। उनका कसूर सिर्फ यह था कि उनकी राय में एमरजेंसी लगाना ठीक नही थी। किसी ने ठीक कहा है –

हम आह भी भरते है, तो जाते है बदनाम,

वे कत्ल भी करते है, तो चर्चा नहीं होता।

डिप्टी स्पीकर साहिबा, हमको जेल के दरवाजों के अन्दर कर दिया गया, ठीक है, लेकिन हम पूछते है कि वजह तो बताइए कि किसलिए गिरफ्तार किया जा रहा है, तो कहा जाता है कि वजह बताने की जरूरत नहीं है। डिप्टी स्पीकर साहिबा, इस बारे में एक मिसाल देना चाहता हूं। कानून बदला गया कि कारण देना जरूरी है और पांच दिन के अन्दर कारण देना जरूरी था। मेरे पास कारण पहुंच गए और वह यह थे कि 24 जून को आपने जनता को भड़काया और आप यह सुनकर हैरान होंगी कि 24 जून को मैं पब्लिक अकाउंट्स कमेटी की मीटिंग में चण्डीगढ़ में था और 25 तारीख को भी पब्लिक अकाउंट्स कमेटी की मीटिंग अटैंड की थी। 23 तारीख को मैं चण्डीगढ़ आया था और 25 तारीख की रातको वापिस गया था और रात को ही अरैस्ट कर लिया गया था – डिप्टी स्पीकर साहिबा, यह वजह मेरे अरैस्ट करने की सरकार की तरफ से दी गई थी। कितनी बड़ी धांधली सरकार की तरफ से की गई थी। इसका अन्दाजा डिप्टी स्पीकर साहिबा, आप खुद लगा सकती है।

उपाध्यक्षा : आपको वजह ही दी थी या कोई खास डेट भी दी थी?

चौधरी राम लाल वधवा : डिप्टी स्पीकर साहिबा, डेट भी दी थी और वह 24 जून, थी, जबकि मैं उस दिन पब्लिक

अकाउंट्स कमेटी की मीटिंग में था। पी.एस.सी. के मैंबरों को भड़काया हो, तो मैं कह नही सकता (व्यवधान)। डिप्टी स्पीकर साहिबा, सियासी कैदियों के साथ किस तरह का व्यवहार किया गया, इसके दो उदाहरण मैं दूंगा, लेकिन हरियाणा के अन्दर ला ऐंड आर्डर की क्या पोजी ान थी, वह मैं बताना चाहता हूं। ये सारी बातें, मैं आपकी मारफत सदन को बता रहा हूं। असन्ध के दो आदमी, श्री द र्ान लाल और श्री ज्ञान चन्द वहां आए और उन्होंने कहा कि एमरजेंसी हटनी चाहिए। पुलिस ने उनको पकड़ा और सरे बाजार उनको पीटा गया। उनके कपड़े उतारे गए, काला मुंह किया गया और उनका जलूस निकाला गया।

अम्बाला का तो आपको पता होगा कि सूरजभान जो एक्स.एम.पी. थे और अब जीते है, उनको मीसा के अन्दर पकड़ा गया और पकड़ने के बाद उस महान आदमी को पुलिस के उच्चाधिकारी ने अपने हाथ से पीटा.....

उपाध्यक्षा : आप बजट को डिस्कस कर रहे है, या एमरजेंसी को ?

चौधरी राम लाल वधवा : बजट के अन्दर ला ऐंड आर्डर को डिस्कस कर रहा हूं और बता रहा हूं कि ला ऐंड आर्डर की सिचुए ान क्या है।

उपाध्यक्षा : आप बजट को ही डिस्कस करें एमरजेन्सी को डिस्कस न करें।

चौधरी राम लाल वधवा : एमरजेंसी में ला ऐंड आर्डन का क्या हाल था मैं उसको डिस्कस कर रहा हूं। डिप्टी स्पीकर साहिबा, जेलों के बारे में तो यहां तक कहा गया कि हमने सियासी कैदियों के साथ बड़ा अच्छा व्यवहार किया। डिप्टी स्पीकर साहिबा, 3 रूपये रोटी के लिये दिये जाते है, फिर पांच रूपये कर दिये और लेजिस्लेटसर्ज के अब 7 रूपये कर दिये गए थे। डिप्टी स्पीकर साहिबा, आप भी हाउस कमेटी की चेयरमैन है, आपको भी पता है कि वहां तीन रूपये में तीन सब्जियां देते है और अब उसमें कट लगा दी है। दो टाइम के छः रूपये बनते है और बहुत मुअजज आदमी थे, जिनका बाहर भी रहन सहन बहुत अच्छा था उनको पांच रूपये रोज दिये गये और फिर यह कहते हैं कि जेलों में हमने सियासी कैदियों को बहुत सहूलियतें दी है। तो डिप्टी स्पीकर साहिबा, वहां इस तरीके से गुजारा हुआ।

चौधरी राम प्रसाद : सात रूपये थोड़े तो नही थे।

चौधरी राम लाल वधवा : हां हां मैं आपको बताता हूं कि आप को पता लग जाएगा आइन्दा के लिए आप सोच लें (ाोर) आपको भी पता लग जाएगा .....(ाोर) तो डिप्टी स्पीकर साहिबा, वहां पर भी कुरप्ान हुई, रिकार्ड मेरे पास है, मैंने सरकार को जेल से कई खत लिखे जिनका मेरे पास रिकार्ड है लेकिन सरकार की तरफ से कोई जवाब नहीं। डिप्टी स्पीकर साहिबा, मेरे साथ जो सलूक किया गया वह आपको बताता हूं, मुझे सोलटरी कन्फाइनमैंट में रखा गया, मेरे खिलाफ एक झूठा

केस बनाया गया कि उसके सेल में पैसे मिले हैं, मैंने इसके खिलाफ एक रिट की और वह जेल अथॉरिटीजं ने फाड़ दी।

Deputy Speaker : You can speak on the Budget. How can you speak irrelevant ? I will not allow this.

श्री के.एन.गुलाटी : डिप्टी स्पीकर साहिबा, एक सबमि ान के साथ मेरा प्वांयट आफ आर्डर है कि हमें बता दिया जाए कि हरेक मैंबर को कितना कितना टाइम दिया जाएगा, क्योंकि अभी बहुत सारे मैंबर बोलने के लिए बैठे है।

Deputy Speaker : Order please. It is for the Chair to decide.

चौधरी राम लाल वधवा : डिप्टी स्पीकर साहिबा, मुझे आपके द्वारा केवल सरकार से इतना ही कहना है कि :–

सितमगर तुझ से उमीदें वफा होगी जिन्हें होगी,

हमें तो देखना यह है कि तू जालिम कहां तक है।

दूसरी बात डिपटी स्पीकर साहिबा, मैं आपको क्या बताऊं कि इन्होंने क्या क्या ज्यादतियां की है, मैंने कहा कि 2 अक्टबर वाले दिन गांधी जी और श्री लाल बहादुर भाास्त्री जी की स्मृति में प्रार्थना के लिये हम सब डेटीन्युज को इक्ट्ठा कर दिया जाए पर हमारी बात भी न मानी गयी और फिर यह कहते हैं कि हम लोगों के साथ बहुत अच्छा व्यवहार किया गया है। मेरे पास लम्बी चौड़ी लिस्ट है पर में इन बातों से ज्यादा समय खराब नहीं

करना चाहता। डिप्टी स्पीकर साहिबा, इसके इलावा और भी बहुत सी उपलब्धियां हुई है जोकि मैं आपको बताना चाहता हूं। करनाल के अन्दर एक उपलब्धी हुई एक युवक नेता, पता नहीं किस हैसियत से, किस केपेसिटी में वह वहां आये, उनका स्वागत किया गया, सारे भाहर के दुकानदारों को मजबूर किया गया कि अपने खून से कपड़े रंग कर उसका स्वागत करें .....

Deputy Speaker : Is it in the Budget ? Please speak on the Budget.

चौधरी राम लाल वधवा : यस, डिप्टी स्पीकर साहिबा, इन्होंने जो बजट पे ा किया है उन्होंने उसमें कुछ उपलब्धियां बताई है, मैं उनके बारे में ही यह वर्णन कर रहा हूं। इन्होंने जो बजट के अन्दर मांगा है उसी पर्पज के लिये यूज किया है, केवल इस बारे में मैं यहां सदन में बताना चाहता हूं कि इन्होंने खर्चा कहां से किया है और उसके स्वागत के लिए अन–आफि ीयली रूपया इकट्ठा किया है। डिप्टी स्पीकर साहिबा मैं आपको बताता हूं कि इन्होंने क्या किया। एक मुसलमान लड़की को थाने के अन्दर बिठा दिया गया, भाहर के बड़े बड़े आदमियों, मुअजज आदमियों की लिस्टें बनाई गयीं और उस लड़की से गल्त ब्यान दिलवाया गया कि फलां फलां लड़कों ने मेरे साथ दो बार बुरा किया है फिर उनके घर वालों को बुलाकर कहा गया कि चलो छोड़ों 5/7 हजार रूपये दे दो, संजय ने आना है उसके स्वागत

के लिये पैसा चाहिए, इस तरीके से इन लोगों ने उनके स्वागत के लिए अन–आफि ाियली पैसा इक्ट्ठा किया।

उपाध्यक्षा : अन–आफि ाियली बजट में नही है। No Unofficial Demand is in the Budget.

चौधरी राम लाल वधवा : डिप्टी स्पीकर साहिबा, मैं इनकी एडमिनिस्ट्रे ान की बात बता रहा हूं, मैं मांग करता हूं कि इस चीज की इन्कवारी करवायी जाए अगर यह गल्त निकले तो ....(विघ्न)

Deputy Speaker : You are not speaking on the Budget. Please speak only on the Budget.

चौधरी राम लाल वधवा : डिप्टी स्पीकर साहिबा, मैं एडमिन्स्ट्रे ान की बात कह रहा हूं कि एडमिन्स्ट्रे ान ने अपनी पाव का किस हद तक मिस यूज किया है। एक लड़की को पढ़ा कर एक लड़के के माथे पर झूठा क्लंक लगा दिया ..... (ाोर)

Deputy Speaker : It is relevant ? I say it is not relevant and you can speak only on the Budget.

चौधरी राम लाल वधवा : डिप्टी स्पीकर साहिबा, इसके साथ–साथ मुझे एक बात यहां और कहते बड़ा दुख हो रहा है जोकि मेरे बारे में है, यह जो बात मैं बता रहा हूं यह कोई पोलिटिकल आदमी कहे तो ठीक है पर एक उच्च अधिकारी ने

कहा कि रामलाल वधवा को तब जेल से छोड़ा जाएगा जब इसके बच्चे उसकी भाकल पहचानना भी भूल जाएंगे। डिप्टी स्पीकर साहिबा तो मैं इतना ही इस बारे में कहूंगा कि

क्या निकालेंगे भला बल हमारी जुलफों के,

अपनी किस्मत के बल तो उन से निकाले नहीं गये।

Deputy Speaker : Is it relevant ? I request you to please speak relevant on the Budget.

चौधरी राम लाल वधवा : डिप्टी स्पीकर साहिबा, मैं रेलेवैन्सी बताता हूं, सदन में 81 मैम्बर हैं, चुनाव हुये, केवल चार हलकों में इनको मैजोरिटी मिली बाकी 77 हलकों में हमको मैजोरिटी मिली, इसलिए 77 मैम्बर को हाऊस में बैठने का कोई अधिकार नहीं है। इस इलेक ान पर खर्च भी बहुत हुआ ....(ाोर) विघ्न

चौधरी मेहर सिंह : डिप्टी स्पीकर साहिबा, मैं अन–नसेसरी नहीं कहूंगा, वधवा साहब ने जो कपलिट यहां पर कहा है इसकी यहां पर क्या रेलेवैन्सी है जरा यह बता दें। इसका जवाब इस तरह देता हूं।

जलती रहेगी भामा ए अंजमन

बजता रहेगा साजे चमन

साफ है, अपना दिल और सच्ची जबां

होता रहा है अगर कोई बदगुमां

चौधरी राम लाल वधवा : डिप्टी स्पीकर साहिबा, इलेक ान पर खर्च हुआ, होम की मद मेरे पास है, पुलिस की मद है केवल यह बताना चाहता हूं कि यह एडमिनिस्ट्रे ान क्या कर रही है।

Deputy Speaker : You are speaking for the last 20 minutes. You can speak only for 5 minutes more.

चौधरी राम लाल वधवा : डिप्टी स्पीकर साहिबा, एडमिनिस्ट्रे ान के बारे में जितने उदाहरण दिये है, उनका रिकार्ड मेरे पास है लेकिन मैं उस तरफ ज्यादा नहीं जाना चाहता केवल कुछ और बातें बजट के बारें में कहना चाहता हूं। डिप्टी स्पीकर साहिबा, सी.एम. ने कहा था कि उनके दो एक आदमियों ने बोलना है आप बोल लो इसलिए मैं 10–15 मिनट में खत्म कर दूंगा। डिप्टी स्पीकर साहिबा, बजट को मैंने पढ़ा है और बजट स्पीच भी अच्छा तरह पढ़ी है। उसमें अमली काम कम है और वायदे ज्यादा है। मुझे ऐसा लगता है कि वायदों का पुलंदा बना कर हमारे सामने रख दिया गया है जोकि हर साल इसी तरीके से रखा जाता है। मुझे 'हरियाणा बजट एट ए ग्लांस' की कापी दी गई है उसके अन्दर पर–कैपिटा ंकम बताई गई है जोकि इस प्रकार है – 1970–71 में 441, 1971–72 में 441, 1972–73 में 426, 1973–74 में 425, 1974–75 में 421, और 1975–76 में 473 और 1975–76 के आगे 'क्विक' लिख दिया है। यह हरियाणा की डिवैल्पमैंट का

नक ाा सरकार के अपने हाथ का नक ाा है जिसको मैं पे ा कर रहा हूं। इसके साथ ही पेज 6 पर रसीट और एक्स पैंडिचर की डिटेल है। मैं उसके हिसे बताना चाहूंगा कि 1975–76 में रसीट 22853 लाख की हुई थी, 1976–77 (बजट) में 23636 की, 1976–77 (रिवाइज्ड) में 27747 की और 1977–78 (बजट) में 29405 की रसीट है। 1977–78 में इंकम बढ़ी है। मैं इसकी डिटेल दूंगा कि इसके अन्दर कर्जे भी भाामिल हैं और सैंट्रल गवर्नमैंट से जो ग्रान्ट मिलती है वह भी भाामिल है। इतना रूपया खर्च करने के बाद भी पर–कैपिटा इंकम कम हो गई। डिप्टी स्पीकर साहिबा, मैं अगर आंकड़ों में जाऊंगा तो आप ज्यादा समय नहीं देंगी। मैंने सारी रात इसकी स्टडी की लेकिन समय कम होने की वजह से मैं इसकी फिग्गर्ज में नहीं जाऊंगा लेकिन इससे जो निचोड़ निकलता है वह यह है कि अमीर और अमीर हो गया और गरीब और गरीब हो गया, बेरोजगारी बढ़ी एम्पलायमेंट एक्स्चेंचिज के अन्दर बेरोजगार लोगों की रजिस्ट्रे ान की संख्या बढ़ी। चीजों के भाव बढ़े है चाहे वह साबुन है, चाहे मिट्टी का तेल है और चाहे नकम हो। लोगों की खरीद कम हो रही है। उनकी खरीदने की ताकत नहीं रही क्योंकि उनको रोजगार नहीं दिये जा सके। देहातों में बेरोजगारी बढ़ रही है क्योंकि देहातों में छोटी इंडस्टरीज नहीं खोजी गई। आज सरकार डिवैल्पमेंट के इतने दावे भर रही है लेकिन यह सरकार गावों के अन्दर पीने का पानी तक मुहैया नहीं कर सकी। पिछले दो साल के अन्दर फरीदाबाद बहादुरगढ के अन्दर बीस हजार मजदूरों की छंटनी हो गई है, छोटी छोटी अनेक

इंडस्ट्रीज बन्द हो गई। यानी मार्किट के अन्दर इतना सल्म्प आया कि छोटी छोटी इंडस्ट्रीज बन्द हो गई। अब मैं पावर पर आता हूं। बहुत भाोर मचाया जाता है लेकिन एक फैक्ट जो है उसको नजर अन्दाज किया जा रहा है। यहां के बिजली बोर्ड की गलत प्लानिंग के कारण हरियाणा को दिवालिया स्टेट बनना पड़ेगा। मैं पूछना चाहता हूं कि बिजली बोर्ड को आज बैंकों से, एल.आई.सी. से और सरकार से क्यों करोड़ों अरबों रूपया दे दिया गया। आज हालत यह है कि बिजली के रेट बढ़ा दिये गये है और हर साल बढ़ाए जा रहे है इसके बावजूद भी बिजली बोर्ड सरकार को कर्जे का सूद नहीं दे पाया और सूद को भी कर्जे के अन्दर कन्वर्ट किया जा रहा है जिसके ऊपर और सू लगेगा। इन हालात को देखने से तो यह पता चलता है कि आने वाले बीस सालों में भी बिजली बोर्ड यह वापिस नहीं कर पाएगा। इसके साथ साथ यह दावे भरे जा रहे है कि बिजली की पैदावार बढ़ी है और कहते है कि कनैक्शन भी बहुत दे दिये है। मैं पूछना चाहता हूं कि बिजली कितनी मिल रही है और उसके कारण पैदावार किनी कम हुई इसकी तरफ ध्यान देने की जरूरत है। बिजली के रेट हर साल बढ़ाए जाते है, जिसके कारण पैदावार के ऊपर असर पड़ता है। इसके बाद डिप्टी स्पीकर साहिबा, मैं इरीगेशन के ऊपर आता हूं। इरीगेटिड ऐरिया के बारे में बताया गया है कि 1966–67 में जहां यह 32.75 लाख एकड़ था वहां वह चौथी योजना अवधि के अन्त तक 41 लाख एकड़ हो गया है। डिप्टी स्पीकर साहिबा अगर मैं आंकड़े बताने लग गया तो समय बहुत लग जाएगा इसलिए मैं

संक्षेप में बताना चाहता हूं कि 1967–68 से लेकर अब तक ये केवल 9 लाख एकड़ धरती पर इरीगे ान टारगेट बढ़ा सके है लेकिन मैं आपको बता दूं कि सरकार की यह फिग्गर भी सही नहीं है इसके अन्दर भी हेराफेरी की गई है। वह इस तरह से की गई है कि इरीगेटिड एरिया जो है उसमें जमीन का जो मालिक है वह टयूबवैल से भी पानी देता है और दो एक पानी उसे नहर से भी मिल जाते है लेकिन सरकार क्या करती ळै कि उस सारी जमीन को नहरी जमीन करार देती है तो इस तरीके से यह बात कहनी गलत है कि इतना ज्यादा इरीगेटिड ऐरिया बढ़ गया है और इतना बिजली का उत्पादन बढ़ गया है। जितना लिफ्ट इरीगे ान पर खर्चा किया गया है उसके मुकाबले इरीगे ान उसका पासॅग भी नही हुई। आप देखें कि यह कह रहे हैं कि बिजली बढ़ रही है, पानी बढ़ रहा है, और इरीगेटिड एरिया भी बढ़ रहा है लेकिन जो रेट आफ ग्रोथ है वह कम क्यों हो रहा है। पिछले साल भगवान की कृपा से बारि ा अच्छी हो गई थी तो पैदावार अच्छी हो गई लेकिन ये कहते है कि हमने किया है। इस साल ये पिछले साल जितनी पैदावार करके दिखा दें तो मैं मान जाऊंगा। मैं कहता हूं कि सरकार एग्रीकल्चर के अन्दर और इरीगे ान के अन्दर टोटली फेल हुई है (विघ्न)। तो डिप्टी स्पीकर साहिबा, पानी बढ़ा नहीं है, पानी उतना ही है लेकिन ये तोड़ मरोड़ कर पिक्चर पे ा कर रहे है। जैसे आर्गुमैंटे ान कैनाल बनाई गई, उससे करनाल का पानी भिवानी में ले जाया गया। उसका कितना फायदा हुआ यह नही पता। जितना पैसा खर्च हुआ है पानी का लाभ उससे बहुत कम

है। टयूबवैल लगा दिए गए लेकिन पानी किसान तक पहुंचा नहीं। हम भाोर मचाते रहे कि ये टयूबवैल लगाकर आपने प्राईवेट टयूबवैल को तबाह कर दिया है। सरकार ने इसकी जांच के लिए एक कमेटी बनाई और वह कमेटी भी उन्हीं आदमियों की बनाई जो टयूबवैल लगाते है। फिर एक मीटिंग हुई कि फला फलां साधन अपनाये जाएगें और वे साधन भिवानी के इलाके में अपनाये गए। कहते है कि भिवानी रेगिस्तान है, उसको हरा भरा बनाया जाए बाकि हरियाणा के दूसरे इलाकों में पानी देने से क्या लाभ होगा। यह है इनकी नीति, करनाल के इलाके पानी के बिना मरेंगे और भिवानी इन इलाकों के पानी का फायदा उठाये, ठीक है, उन्हें फायदा होना चाहिए, उनके लिए कई दूसरे साधन है, लेकिन यह बात कहना कि वह बैकवर्ड एरिया है, इसकी तरक्की के लिए सोचें, हम इसके हक में है, इसकी तरक्की होनी चाहिए लेकिन यह क्या बात हुई कि एक जगह को बरबाद करके दूसरी जगह को आबाद कर दिया जाए।

Pandit Chiranji Lal Sharma : Karnal is the most Prosperous district.

चौधरी राम लाल वधवा : अगर किसान की डिवैल्पमेंट करते तो पैदावार ज्यादा होती। आप किसान को इग्नोर करते रहे हो। यह तो प्राईवेट टयूबवैल हैं जिन के कारण वे थोड़ी बहुत पैदावार करते रहे लेकिन सरकारी टयूबवैल लगने से उनका पानी भी सूखता रहा।

Deputy Speaker : Please speak relevant. I will request the Hon. Member to finish his speach.

चौधरी राम लाल वधवा : बिजली मंहगी, पानी मंहगा, बीज भी महंगा मिले तो किसान कैसे पैदावार कर सकता है। डिप्टी स्पीकर साहिबा, इस बजट के अन्दर 20 सूत्रीय कार्यक्रम का जिक्र किया गया है। पब्लिक रिले ान डिपार्टमैंट ने मुझे एक पुस्तिका जेल के अन्दर भेजी थी जिसमें 20 सूत्रीय कार्यक्रम था। उस पुस्तिका में 14 सूत्रों का वर्णन था, 6 सूत्रों के बारे में कुछ था ही नही। पता नहीं 20 सूत्रों में से 14 सूत्रों का ही इम्पलीमेंटे ान होना था, 6 का होना ही नहीं था। इन 6 सूत्रों में भी एक सूत्र ऐसा है जिसके तहत हरिजनों को प्लाट दिए है और बाकि जो 5 सूत्र है वह वही है जो बजट में है। इन्हीं को कह दिया 20 सूत्रीय कार्यक्रम। अगर बैंकों का उद्घाटन करना है तो 20 सूत्रीय कार्यक्रम, मुर्गी खाना खोलना है तो 20 सूत्रीय कार्यक्रम, 20 सूत्रीय कार्यक्रम का प्रचार बड़े–बड़े सूत्रीय कार्यक्रम की चर्चा होती रहती है। लेकिन हमें यह पता नहीं लगा कि इस कार्यक्रम पर कोई अमल हुआ है, कोई डिवैल्पमेंट हुई है या नहीं, इस कार्यक्रम से जो हासिल हुआ वह क्या है और न ही इसके बारे में बजट में कुछ लिखा है।

पंडित चिरंजी लाल भार्मा : प्लाट्स का जिक्र आया है, 2 लाख 40 हजार प्लाट दिए है।

Pandit Chiranji Lal Sharma : This is not expected of you. Facts are facts and they must squarely be faced.

चौधरी राम लाल वधवा : प्लाटों का जिक्र तो आ रहा है, प्लाट अलाट किए है, फिग्गर तो यही है लेकिन देहात में जाकर पूछा जाए तो पता चलेगा कि सही फिग्गर क्या है। (इस समय श्री अध्यक्ष पदासीन हुए) स्पीकर साहब, मैं आपके द्वारा सरकार से निवेदन करना चाहता हूं कि जो प्लाट्स दिए गए हैं उन पर तो हरिजन बेचारे पहले से ही भाामलात देह पर बैठे हुए थे, इस जमीन र तो ये पहले से ही रह रहे थे। अगर नहीं रह रहे थे तो क्या वे आसमान से लटके हुए थे ? सरकार ने अपंनी तरफ से जमीन खरीदकर किने प्लाट दिए है ? यह क्या बात हुई कि कबड्डी के अखाड़े बनाकर कह दिया यह प्लाट इधर है और वह प्लाट उधर है। आज तक न उन प्लाटों की रजिस्टरी बनाई गई और न उनको बनाने के लिए कर्जे दिए गए, न वे बना पायेंगे और ये कह रहे है कि प्लाट अलाट कर दिए है। उस जमीन की भाामलात करके प्लाट काट दिए जिस पर वे पहले से ही बैठे है।

चौधरी राम लाल वधवा : कितने मकान बना पाते है, अगर पांच हजार रूपया उसको मकान बनाने के लिए कर्जा दिया जाता है तो वह लौटायेगा कैसे ? यहां हरियाणा के हरिजन के पास तो सूद देने के पैसे नहीं, वह मकान कब बनवायेगा सिवाये इसके कि वह प्लाट बेचकर उसे खत्म कर देगा। यह तो प्रैक्टिकल

फैक्ट है। आप हरिजन को मकान बनाकर दे जिससे उसे फायदा पहुंचे और वह अपना सर छुपाकर रह सके।

श्री अध्यक्ष : आप कितना टाईम लेंगें।

चौधरी राम लाल वधवा : सिर्फ दो मिन। हरिजनों के लिए सबसे बड़ी बात यह है कि उनकी गरीबी दूर होनी चाहिए उनको रोजगार मुहैया कर दिया जाए ताकि वह अपनी हालत आप सुधार सकें, इस तरफ सरकार को ध्यान देना चाहिए। इसके बाद स्पीकर साहब, मैं आपके द्वारा सरकार से कहना चाहूंगा कि सेल्ज टैक्स की जो लानत है। वह स्टेट से खत्म कर दी जानी चाहिए। स्पीक साहब मैं मैरिट पर बात कह रहा हूं और मैंने देखा है कि इसके अन्दर बड़ी भारी करप ान बढ़ गई। सरकार सेल्ज टैक्स की बजाये एक्साईज डयूटी लगाकर इस रूपये की कमी को पूरा कर ले तो ज्यादा बेहतर है। स्पीकर साहब मैं परसनल एक्सपीरिएंस की बात कर रहा हूं कि सेल्ज टैक्स वाले तो मुझे जैसों को भी नहीं छोड़ते असैसमैंट वाले रि वत लेते है सारे हरियाणा में इन्सपैक्टरी राज है। सरकार को इस सम्बन्ध में सीरियसली सोचना चाहिए गम्भीरता के साथ इस मसले पर विचार करें और एक्साइज डयूटी लगाकर सेज्लटैक्स को खत्म करें।

इसके बाद रोडज के बारे कहा जाता है ठीक है रोड्ज बनी है इसमें कोई भाक की बात नही है लेकिन बहुत सारी सड़कें कम्पलीट नहीं हुई। इसका बजट की मद के अन्दर जिक्र होगा जब

डिमाड आएगी तब बताऊंगा क्योंकि इस वक्त टाईम की कमी है। टाईम ज्यादा लगेगा। इस वक्त मैं इतना ही कहूंगा कि जो सड़कें टूट गई है वे कम्पलीट होनी चाहिए लेकिन रूपया इतना कम है कि उनकी रिपेयर भी नही हो सकती। सड़कें बनने से स्टेट की डिवैल्पमैंट हो सकती है, लोगों को आने जाने के रास्ते होने चाहिए, ताकि देहातों के लोग अपना सामान ठीक तरह से ले जा सकें। इन्होंने एक काम किया है कि एक गांव को एक तरफ से मिला दिया और दूसरे गांव को, चाहे वह एक मील या आधा मील का रास्ता रह गया हो, उसको मिलाने से छोड़ दिया गया है यह समझ कर कि डबल लिंक न हो जाए, कहीं डबल लिंक रोड न हो जाए। मैं आपकी मारफत से कहना चाहता हं कि अगर यह दोनों तरफ से मिला दिया जाए तो ट्रांसपोर्ट की उन्नति होगी, इससे स्टेट को फायदा हो सकता है, लोगों के रोजगार बढ़ सकते है। कृपा करके इसको डबल लिंक तसलीम कर दें ताकि एक साइड से दूररी साईड तक आया जाया जा सकें।

इसके बाद मैं कोआप्रे ान के बारे में कहूंगा। सोसायटियों के बारे में काफी कुछ कहा जा सकता है, लेकिन मैं इतनी डिटेल में नही जाना चाहता, मैं इतना ही कहूंगा कर्जे मुआफ किए जाएं। प्राईवेट कर्जे कितने माफ हुए है, स्टेट को इससे कितना फायदा हुआ है, मैं इस डिटेल में नही जाना चाहता। लेकिन अगर वाकई ही इन के साथ, गरीबों के साथ सरकार को हमदर्दी है तो जितने देहाती लोग जिन्होंने बैंकों से कर्जे लिए हुए

है, उनको इन कर्जों से छुटकारा दिलवाया जाए। स्पीकर साहब, मैं आपके द्वारा निवेदन करूंगा कि कोआप्रेटिव सोसायटीज के कर्जे मुआफ कर दें ताकि हरियाणा के अन्दर गरीबों का भला हो सके। लेकिन इस कर्जों की वसूली के लिए लोगों को जेलों में ठोस दिया जाता है, छोड़ते ही नहीं। आज गरीब आदमी को प्राईवेट तौर पर कोई आदमी 10 रूपये देने के लिए तैयार नहीं। सरकार को सहारा देना चाहिए.....

पंडित चिरंजी लाल भार्मा : जनता पार्टी की तरफ से मुआफ करवा दें तो ठीक रहेगा। (व्यवधान)

चौधरी राम लाल वधवा : इसके बाद स्पीकर साहब, मैं फैमिली प्लानिंग के बारे में कह कर अपनी बात खत्म करना चाहता हूं। स्पीकर साहब, वैसे तो सरकार ने जोर जबरदस्ती से आप्रे ान करने वाली बा खत्म कर दी, उन्होंने उस बिल को ही वापिस ले लिया है।

स्पीकर साहब, मैं फैमिली प्लानिंग पर बहुत ज्यादा क्रिटिसीजम तो नहीं करना चाहता। जिस कदर पीपली में फरीदाबाद, नगीना में, करनाल में और जबाला में जी अफसोसजनक वाकयात हुए है, उनसे स्पश्ट जाहिर है कि इन्सान को प ा समझ कर व्यवहार किया गया। कोई सामान खरीदने जाता है तो उसको पकड़ लिया जाता है, बस स्टैन्ड पर जाती हुई बस को थाने में ले जाते हरहे और वहां से हस्पताल में ले जाकर

लोगों का आपरे ान कर दिया जाता था। क्या किसी सभ्य सरकार के ऐसे कारनामें हो सकते है ? कम से कम मनुश्यों जैसा व्यवहार तो करना चाहिए। आप जिस जनता के वोट पर बन कर आए है, उनके साथ इस तरह का व्यवहार नहीं करना चाहिए था। मैं फैमिली प्लानिंग के खिलाफ नहीं हूं लेकिन मैं चाहता हूं कि जोर जबरदस्ती नहीं होनी चाहिए। डिप्टी कमि नर आर्डर करता है कि जबरदस्ती पकड़ लाओ। अफसरों की मन्थली मीटिंग होती थी, कि हम कहां से केस लाएं ? पिछले दिनों मेरी तहसीलदारों और थानेदारों से बात होती थी, वे कहते थे कि क्या करें कि फैमिली प्लानिंग से मुर्सत मिलेगी तो चोरी पकड़ेगें, उनको राज करने दो। तो स्पीकर साहब, मैं चाहूंगा कि फैमिली प्लानिंग की जाए लेकिन उसमें जोर जबरदस्ती न की जाए। दूसरे तरीके हो सकते है, लोगों को इस बारे में तालीम दी जाए, फैमिली प्लानिंग का प्रचार किया जाए और लोगों को समझाया जाए।

उद्योग मन्त्री (श्री हरपाल सिंह) : आन ए प्वायंट आफ आर्डर सर। फैमिली प्लानिंग पर बोलते हुए राम लाल जी ने कहा है कि चोरों का राज है, यह लफज गल्त इस्तेमाल किया है, यह उनसे विदड्रा करवाइये।

चौधरी राम लाल वधवा : स्पीकर साहब, मैनें उनके बारे में ये लफज नहीं कहे ये गल्त समझे है। मैंने सरकार के बारे में कुछ नही कहा। मैं ऐसी गलत बात नहीं कर सकता। मैं तो थानेदारों के बारे में कह रहा था कि चोरी हो रही है और उन्हें

फुर्सत उनको पकड़ने की नहीं है इस तरह चोरों का राज है। मेरा ख्याल है अब इनकी गलत फैहमी दूर हो गई होगी। स्पीकर साहब, संयम से रहने के बारे में ि ाक्षा दी जाए। दूसरे एजुके ान सिस्टम में चेंज लाई जाए। ए ाो–इ ारत के सम्बन्ध में जितनी फिल्में बनाई जाती है वे सब बन्द की जाएं। रसालों के अन्दर गल्त चीजें निकलती है, उन सबको बन्द किया जाए ताकि इन्सान का रूझान गलत4 बातों की तरफ न जाए। दूसरे तरीके भी सरकार ने निकाले है जो जनता के अनुकूल है उनके प्रयोग पर ज्यादा जोर दिया जाए। इन भाब्दों के साथ मैं आपका धन्यवाद करते हुए अपना स्थान लेता हूं।

चौधरी दल सिंह (जींद) : स्पीकर साहब, बजट पर चर्चा चल रही है। मैं भी चन्द मिनट में अपने विचार प्रकट करना चाहता हूं। वहां तक बजट का संबंध है, बड़ा सोच विचार कर बड़ा अच्छा बजट बनाने की कोि ा ा की गई है। (चौधरी ि ाव राम भार्मा की ओर से विघ्न) मैं आपकी रग रग को अच्छी तरह जानता हूं। मैं वह नही हूं कि दीया जलाया और गांधी जी की समाधी पर जाकर माफी मांग ली – (विघ्न) – कृपया आप चुप रहें – (विघ्न) – मैं तो दल बदल कर आया हूं। आप बंसी लाल के पांव पड़े और यहां रहे, लड़का एच.सी.एस. बनवाया, यहां पर खु ाामद करते रहे इसलिए आपको अपने विशय में पता होना चाहिए। आप मुझे जितना छेड़ोगें मैं आपकी अच्छी तरह तसल्ली कर दूंगा। माफी मांगने वाले तो आप है। अगर मैं माफी मांग कर आया हूं

तो आपकी सरकार है वहां जा कर देख लें कि माफीयामा आपका है या मेरा है। सैंटर में जाकर आप अच्छी तरह से पता लगा लेना। आपको पता होना चाहिए कि एस्टीमेट्स कमेटी के अन्दर आप बगैर मोहर लगाए बंसी लाल को पर्ची दे आये थे। ऐसा मैंने जिन्दगी में कभी नही किया।

Pandit Chiranji Lal Sharma : I wold request the Hon. Member not to be personal.

Deputy Speaker : No interruptions and no personal remarks please.

चौधरी दल सिंह : मैं सरकार से अर्ज करना चाहता हूं और उसका ध्यान जिला जीन्द की तरफ दिलाना चाहता हूं। हमारे जीन्द जिले को कागजों में भी पिछड़ा हुआ मानते हैं। जब सरकार को इस बात की तसल्ली है तो महकमों की तरफ से काफी ध्यान दिया जाना चाहिये। हरियाणा प्रदे ा कृशि प्रधान प्रोविन्स है। इसकी 90 प्रति ात जनता खेती पर गुजारा करती है। खेती पर गुजारा करने वाले प्रदे ा को सबसे जरूरी पानी है। सरकार ने बे ुमार दौलत पानी पर खर्च की है। जहां सरकार ने इतना पैसा पानी पर खर्च किया तो मैं चाहूंगा कि जिला जींद में जो गांव बिल्कुल खु ाक है जिनके बारे में मैं पिछले 5–6 सालों से सरकार के नोटिस में लाता रहा हूं उनके बारे में आज भी नोटिस में लाना चाहता हूं। ये ऐसे गांव है जिनकी तरफ सरकार को

वि ोश रूप से ध्यान देना चाहिए। इन गांवों में नहर के पानी का भी अभाव है और नीचे का पानी खारा होने के कारण टयूबवैल भी नही हैं इसलिए सरकार को पानी का प्रबन्ध करना चाहिए ताकि वे अपनी रोजी आसानी से कमा सकें। झाज खुर्द, झाज कलां, बढ़ौदी, जाजवान, जाजवान खेड़ी और दरियावाला, ये पांच सात ऐसे गांव है जहां पर सामदो माइनर को बढ़ाने का सवाल है। मुख्य मन्त्री साहब दौरे पर गये थे। ये वहां पर वायदा करके आए थे कि इस माइनर को हम ऐक्सटैन्ड करेंगे मैं आपके जरिये मुख्य मंत्री जी को याद दिलाना चाहता हूं कि सामदो माइनर को ऐक्सटैन्ड करा कर वहां पानी की सहूलियत दी जाये। इस प्रकार से जुलाने के इलाके में मालणी, दोरड़ गुसाईवाला, झमोला और लिजवाना आदि गांव है। वहां पर भी पानी का अभाव है। इन गांवों में पानी के पानी का भी अभाव है। सरकार जहां दूसरे इलाकों में पानी देती है, वहां के लिए भी इसे प्रबन्ध चाहिए ताकि लोगों का आसानी से गुजारा चल सके।

इसके अलावा ि ाक्षा की तरफ भी सरकार का ध्यान दिलाना चाहता हूं। ि ाक्षा के सिलसिलें में भी हमारा जींद जिला पिछड़ा हुआ है। यहां पर पढ़े लिखों की औसत कम है। जब सरकार यह मानती है कि जिला जींद में पढ़े लिखे की औसत कम है तो सरकार का फर्ज होता है कि उस तरफ भी ध्यान दे। जब भी हाई स्कूलों की अपग्रेडे ान हो तो जिला जींद की तरफ खास तौर पर ध्यान दिया जाये। बुवाना में एक हाई स्कूल की तजवीज

है। इगरा गांव ने तीन लाख रूपये खर्च करके बड़ी भारी बिल्डिंग बनाई है, इसलिए वहां पर हाई स्कूल बनाया जाए।

इसके साथ ही मैं यह भी अर्ज करना चाहता हूं कि हमारे अध्यापक कुछ गलतियां करते रहे है और इलैक ान के टाईम पर भी की है। लेकिन जो डी.ए. पर कट लगाई है अब उसको बहाल कर देना चाहिए। जब दूसरे ऐम्पलाइज को डी.ए. पूरा मिलता है तो उनको भी पूरा मिलना चाहिए।

सरकार ने चौथी पंचवर्शीय योजना में हरिजनों की चौपालों के लिए 26 लाख 35 हजार रूपये खर्च किया। इसका मतलब यह है कि एक चौपाल पर 2635 रूपया खर्च किया। आजकल के जमाने के मुताबिक यह बहुत थोड़ी रकम है। इतने पैसे में चौपाल नहीं बन सकती। सरकार की वाकई में गरीबों के साथ हमदर्दी है तो कम से कम एक चौपाल के लिए 5 हजार या 10 हजार रूपये तो देने चाहिएं। जिन गांवों में हरिजनों की तादाद ज्यादा है वहां पर चौपाल अव य बनानी चाहिए।

स्पीकर साहब इवैक्यू प्रापर्टी का मामला चन्द सालों से लटकता आ रहा है। सन् 1961 के अन्दर हिदायत जारी हुई कि जिस मकान का या जमीन का कब्जा हरिजन, बैकवर्ड या दूसरे किसी भाई के पास है तो उससे 30 रूपये असल कीमत प्लस 25 रूपये पैनल्टी लेकर के उसका कब्जा उसे ही दे दिया जाए लेकिन अब वह बात सन् 1971 की रजिस्ट्रे ान के बाद उठा ली गई है।

तो यह लटकता हुआ सवाल है। इपको खत्म करना चाहिए। जिस आदमी का कब्जा इवैक्यू प्रापर्टी पर 25–30 साल से है, सन् 1961 की इंस्ट्रक ान लागू करके 30 रूपये असल कीमत प्लस 25 रूपये पैनल्टी डाल कर उसको मालिक बना देना चाहिए या उनको मुफ्त तौर पर यह प्रापर्टी दे देनी चाहिए ताकि यह मामला ज्यादा देर ने लटकता रहे।

स्पीकर साहब, एक्वीजी ान आफ लैंड के मामले में बड़ी धांधली है कई दफा देखने में यह आता है कि जमीन एक्वायर कर ली गई है लेकिन वह जमीन काफी सालों तक बेकार पड़ी रहती है। मेरे इलाके से काफी जमीन एक्वायर हुई है उस जमीन में टयूबवैल भी लगे हुए है और उस पर खेती भी हो सकती है। मैं गवर्नमैंट से यह दरखास्त करूंगा कि ऐसी मीन जो गवर्नमैंट ने एक्वायर कर ली हो, फिलहाल उस पर कोई कार्यवाही न होनी हो, जो खेती करने के काबिल हो, उस पर खेती करने की इजाजत होनी चाहिए। हमारे जींद के अन्दर बदकिस्मती से जितनी भी जमीन अब तक एक्वायर हुई है वह सैनियों की हुई है। मैं सरकार से यह कहना चाहता हूं कि आगे से इस सैनी बिरादरी का ख्याल रखा जाये क्योंकि यह बिरादरी खेती करने वाली है, अच्दी तरह से खेती करना जानती है, आगे से इनकी जमीन एक्वायर नहीं होनी चाहिए। मैं आपके द्वारा स्पीकर साहब, यह अर्ज करना चाहता हूं कि सैनी बिरादरी की जमीन की एक्वीजी ान के लिये कोई कार्यवाही नहीं होनी चाहिए। एक बात और मैं स्पीकर

साहब अर्ज कर देना चाहता हूं। बैकवर्ड क्लासिज के लोगों के लिये दो परसैंट रिजर्वे ान है यह बहुत ही कम है। देखने में यह आता है कि इन बैकवर्ड क्लासिज के लोगों की गिनती सर्विसिज में बहु कम है। मैं प्रार्थना करूंगा कि इन कम्यूनिटी को ज्यादा से ज्यादा रियायत देकर इनकी तादाद को बढ़ाया जाये। इन अलफाज के साथ मैं आपका धन्यवाद करता हूं।

श्री राम धारी गौड़ (गोहाना) : आदरणीय अध्यक्ष महोदय, आज हम बजट पर आम बहस करने जा रहे है। स्पीकर साहब, मैं वित मंत्री जी को बधाई देना चाहता हूं कि उन्होंने बिजली और पानी के लिये इसमें काफी रूपया रखा है। आप जानते है कि बिजली पानी से ही इस प्रान्त की खु ाहाली हो सकती है। किसानों को राहत मिल सकती है। लेकिन मैं एक बात कहना चाहता हूं कि अनाज के उत्पादन में इजाफा हुआ है। उसमें मेहनत किसान की है। लेकिन किसानों को बचत कितनी हुई है, यह देखने की बात है। आप देहात में जायें तो आपको मालूम होगा कि 99 प्रति ात किसान आज कर्जे के नीचे दबा हुआ है। चाहे वह बैंक का कर्जा है, कोआप्रेटिव सोसायटी का कजा है या किसी और जगह से लिया हुआ कर्जा है। आपको कोई भी आदमी ऐसा मु कल से ही मिलेगा जो कर्जे के नीचे न दबा हुआ हो। अगर कोई होगा भी तो उसने इधर उधर से लेदेकर काम चलाया हेागा। इसकी वजह यह है कि अपनी मेहनत से वह जो पैदा करता है, उसकी कीमत तो फिक्स कर दी जाती है लेकिन दूसरी सैकड़ो

चीजें जो उसे खरीदनी पड़ती है, उसकी कीमतें बढ़ती रहती है। वह एक जिन्स को तो पैदा करता है लेकिन उसकी कम से कम सौ सवा सौ चीजें खरीदनी पड़ती है और उन के भाव भी आप ही देख लीजिए कि किस तरह से बढ़ गये है आप देखिये आबियाना बढ़ गया है, मालियाना बढ़ गया है, फर्टीलाइज्र की कीमतें बढ़ गयी है, कपड़ों की कीमत बढ़ गयी है, जितने भी ऐग्रीकलचर में काम आने वाली एम्पलीमैंटस है, उनकी कीमतें बढ़ गयी है। खेती के काम आने वाली औजार है, उनकी कीमतें कई गुणा बढ़ गयी है। कपड़ा लेने जाता है तो उसकी कीमत बढ़ गयी है, सीमेंट ले जाता है तो उसकी, कीमत बढ़ गयी है। आप देखिये कि जो सौ–सवा सौ–चीजें उसकी खरीदनी पड़ती है, उस की कीमतें तो बहुत बढ़ गयी है, लेकिन जो अनाज वह पैदा करता है उसकी कीमत आपसे मुकर्रर की हुई है मैं यह कहना चाहता हूं कि उसको सस्ती चीजें मिलनी चाहिए ताकि उसको बचत हो सके। मैं आपके द्वारा मुख्य मंत्री साहब से यह निवेदन करूंगा कि उसकी जो जरूरियाते जिन्दगी की चीजें है, वह उसको सस्ती दी जायें। आप जानते है कि हरियाणा का किसान मेहनती है। उसको साधन दिये जायें तो वह इससे भी ज्यादा उत्पादन कर सकता है लेकिन उसके हैडीकैप्स है। उसको पूरे साधन नहीं मिलते, वह मजबूर है। उसको ब्याज इतना देना पड़ता है कि उसको जो बउसकी मजदूरी है, वह भी पूरी नहीं पड़ती है। अध्यक्ष महोदय, आप अन्दाजा लगायें कि अगर देहात का आदमी इस बात का हिसाब लगाने लगे कि उसकी मजदूरी कितनी बनती है तो उसकी मजदूरी करने लग

जाये तो इससे ज्यादा तो वह मजदूरी करके कमा सकता है और फिर वहां पर तो 6–8 घंटे काम करना पड़ेगा लेकिन वह बेचारा 14–15 घंटे काम करता है। कई दफा तो देखने में यह भी आता है कि वह इतना बिजी होता है कि वह बड़ी मु कल से दो तीन घंटे ही सो पाता है। क्योंकि रात को पानी चल गया तो वह पानी देने लग जाता है। उसके साथ जो उसके 10 बच्चे भी काम करते है, अगर उनकी मजदूरी का हिसाब भी लगा लें तो उसकी मजदूरी भी पूरी नही होती। जो आबियाना और मालियाना होता है, वह बे ाक उससे ले लें लेकिन किसान को कम से कम राहत अव य मिलनी चाहिए।

श्री बनारसी दास गुप्त : कम से कम राहत मिलनी चाहिए ? .....

श्री राम धारी गौड़ : मेरा कहने का मतलब यह है कि उनको कम से कम राहत तो मिलनी चाहिए। कम से कम आप ऐसा तो कर दें कि उसको कुछ राहत मिल जाये। अध्यक्ष महोदय, आप देखिये हरियाणा में पिछड़ा तबका भी बसता है, हरिजन भी हैं। आप देखिये वैसे तो वे जिन्दा हैं लेकिन उनका रहन सहन ऐसा है कि वे बहुत दु:खी है।

श्री अमर सिंह : आप कब से हो गये हरिजनों के हमदर्द ?

श्री राम धारी गौड़ : मैं तो हमे ाा से ही यह बात कहता आया हूं। इसकी एक वजह है और वह यह है कि मोची का काम तो बाटा ने अपने हाथों में ले लिया है, लोहार का काम टाटा ने अपने हाथों में ले लिया है और चुलाहे का काम बिरला ने अपने हाथ में ले लिया है। दे ा में बड़े–बड़े कारखाने जरूर चल रहे है लेकिन गरीब आदमी के लिये कुछ नही हो रहा है। वह बेचारा ले देकर इधर उधर से काम चलाता है। क्योंकि उसकी आमदनी पहले से कम हो गयी है। बेचारा इस तरह से करता है कि एक से ले लिया, अब वह आदमी मांगने आया तो दूसरे से पकड़ कर दे दिया। इसी तरह से यह सिलसिला चलता रहता है। इसलिए मैं यह सुझाव दूंगा कि देहात में चाहे कोआप्रेटिव सिस्टम से, चाहे सोसायटियां बनायी जायें, जो घरेलू दस्तकारियां है, जो घरेलू काम धन्धे है, उनको लोन दिया जाये। यह ठीक है आप सब को जमीन नहीं दे सकते और न ही ऐसा करना मुमकिन है। आप कम से कम उनको ऐसे धन्धे तो दो जिनसे वे काम चला सकें। अब क्या होता है ? कही मिट्टी का काम निकल जाता है तो वह बेचारा 5–5, 7–7 मील तक गढ़े खोदने जाता है। अध्यक्ष महोदय, उसको बारह महीने काम नही मिलता। यह अब 20 सूत्री प्रोग्राम के बारे में बड़े लम्बे चौड़े बोर्ड 12.00 बजे गाये गये है। मैनें देहात का दौरा किया है मैनें कही भी 20 सूत्री प्रोग्राम का असर नही देखा। मैंने एक आदमी से पूछा कि क्या 20 सूत्री प्रोग्राम का देहात के अन्दर कोई असर है। उसने कह कि अच्छा होगा कि आप उसके बारे में न पूछें। यह प्रोग्राम तो सिर्फ अखबारों में और

रिसालों में है। वहां तो सिर्फ एक सूत्र का असर है और बाकि 24 सूत्र का कोई असर नहीं है और वह एक सूत्र है फैमिली प्लानिंग। किसी का भी रहन सहन ऊंचा नही हुआ है (व्यवधान) यह मैं मानता हूं कि प्लाट दिए गए है लेकिन जितना प्रोपेगण्डा है उतना काम नहीं किया गया है। इसमें भी जबानी सौदा ज्यादा है। एक आदमी एक तरफ रहता है और उसको 100 गज का प्लाट दूसरी तरफ दिया जाता है। वह किस तरह से अपने बच्चों को उठाकर वहां ले जाए। वह अपनी फैमिली की डिवाइड कैसे कर सकता है कि आधी फैमिली एक तरफ रहे और आधी दूसरी तरफ रहें। अगर उसी मोहल्ले में दिया जात तो अच्छा रहता। मैं पच्चीस फीसदी गांवों की मिसाल दे सकता हूं कि जहां पर उसी मोहल्ले में प्लाट नहीं दिया गया। इस बारे में एक बात और कहना चाहता हूं कि खाली प्लाट देने से काम नहीं चलता। सब से बड़ा काम तो गुजारे का है जब तक उसको रोजगार नहीं मिलेगा, चाहे आप किना ही पैसा दे दें और आपने बजट में प्रोवीजन भी रखा, तो पक्के मकान का इतना फायदा नही है। क्योंकि वह कि तों का पैसा नहीं दे सकेगा और वह कर्जदार हो जाएगा। आखिर में वह मकान बि जाएगा। आप उसको रोजगार दीजिए। वह पैसा कमाएगा तो मकान अपने आप बना लेगा। खाली मकान से काम नही चलता। वित मी जी ने कोई टैक्स नहीं लगाया, अच्छी बात है लेकिन कुछ पैसा लोगों की जेब से निकलता रहता है। वह टैक्स खुफिया है, वह दिखाई नही देता और वह टैक्स है इंस्पैक्टरी टैक्स। आपने इन्सपेक्टर्ज बनाए है। एक बाटों वाला इंस्पेक्टर है एक टाइम वाला

इंस्पैक्टर है वह दुकान पर जाता है और कहता कि हल्दी में किनी रेत मिलाई है। वह कहता है कि पचास रूपया महीना देना पड़ेगा नही तो चालान हो जाएगा। वह इंस्पेक्टर दूध वालों सेपैसा बांध लेता है। वे लोग कहां से पैसा दें। उन्होंने यह पैसा लोगों से वसूल करना है। चीजें तेज करके पैसा वसूल करना है। वह टैक्स कागजात में कही नी है लेकिन वह टैक्स लगता है। मैं मुख्य मंत्री महोदय से यह कहना चाहता हूं कि यह जो दस बारह तरह के इंस्पेक्टरर्ज की फौज है और इस फौज में कम से कम 10–12 सांड है इस फौज को कम करिए। इस इंस्पेक्टरी राज को किसी तरह से खत्म करिए (व्यवधान) दुकानदार लोगों को साफ चीजे देना चाहते है लेकिन दुख यह है कि लौगों को साफ चीजें भी नही मिलती। अगर यह फौज खत्म कर दी जाए तो ट्रेडर्ज को राहत मिलेगी।

एक बात मैं गोहाना के बारे में कहना चाहता हूं। पांच साल के अन्दर वहां कोई पैसा नही लगा है। जो पुल मन्जूर हुए थे उन पर ईंट तक नही पहुंची। आप चाहे तो रिकार्ड निकलवा कर देख सकते है। मैं बताना चाहता हूं कि वह ड्रेन नम्बर आठ है जो बहुत बड़ी ड्रेन है। वह गांव के खेतों के बीच में से जाती है और इस प्रकार गांव के खेत एक तरफ रह जाते है और कुछ खेत दूसरी तरफ रह जाते है। यह काफी बड़ी ड्रेन है इसको पास करना बड़ा मुि कल है। छोटी ड्रेन हो तो उसको पास करके जाया जा सकता है। लोगों को पांच छः मील का चक्कर काटकर

जाना पड़ता है। मेरी प्रार्थना है कि आप वहां पर पुल बनवाएं जिससे लोगों को सुविधा मिल सके। गोहाना में इंडस्ट्रियल अस्टेट कागजात में है यह पिछले पांच साल से सुन रहे है लेकिन कोई अमल नही हुआ है। पता लगा था कि जमीन अक्वायर हुई है लेकिन अभी तक वहां कोई चीज नही है। अगर आप इंडस्ट्री नी लगाएगें तो लोगों में असंतोश बढ़ेगा। मैं एक बात और कहना चाहता हूं कि गोहाना में एक मिल्क प्लांट लगना चाहिए। गोहाना की गाय और भैंस बहुत म ाहूर है। एक मिल्क प्लांट मन्हूर हुआ था। उसके बाद अम्बाला में लगा, जींद में लगा और भिवानी जो कि सूखा इलाका है वहां पर भी मिल्क प्लांट लगा लेकिन गोहाना जहां पर प ाुधन बहुत है उसको मिल्क प्लांट से वंचित रखा गया है। एक भारीर है और उसके अलग अलग अंग है अगर भारीर के किसी अंग को कमजोर रखा जाए तो वह ठीक नही रहता। भारीर का एक अंग अगर मोटा हो जाए और दूसरा अंग पतला या कमजोर रह जाए तो वह आदमी कार्टून सा दिखाई देता है। जहां सारे हरियाणा का विकास हुआ है पता नहीं क्या वह वजह है कि पांच साल से गोहाना को ऐसा भुला दिया है कि वहां कोई काम नहीं हुआ है। गोहाना का हरियाणा में नाम ही नही है। काम न करने के कारण भी है लेकिन मैं यहां नहीं बताना चाहता हूं। मेरी प्रार्थना है कि उन कारणों को हटाकर उस तरफ ध्यान देना चाहिए। स्पीकर साहब, जितनी बातें मैंने कहीं है उन पर अमल हो जाए तो यह काफी है। इतना कहकर मैं आपका धन्यवाद करता हूं कि आपने मुझे बोलने का समय दिया।

चौधरी हरस्वरूप बूरा (महिम) : माननीय स्पीकर साहब, आज जो हमारे सामने 1977–78 का बजट पे ा हुआ है, उसकी तफसील में मैं ज्यादा नहीं जाना चाहता। माननीय सदस्य काफी बोल चुके हैं, मैं तो केवल चन्द बातों के बारे में अपने विचार रखने के लिए उपस्थित हुआ हूं। स्पीकर साहब, हरियाणा एक कृशि प्रधान प्रदे ा है उसके अन्दर गरीबों का प ा धन है और प ा हस्पतालों के बारे में बजट के अन्दर जिकर किया गया है लेकिन अगर इन प ा हस्पतालों की हालत देखी जाए तो उनमें दवाई नाम की कोई ऐसी चीज नहीं है। मैं आपके द्वारा सरकार का ध्यान इस ओर दिलाना चाहता हूं कि उन प ा हस्पतालों में दवाई की बहुत कमी है इनकी रक्षा तभी हो सकती है जब कि इन हस्पतालों की ठीक ढंग से व्यवस्था की जाए।

दूसरी बात स्पीकर साहब गरीबों के कर्जे के बारे में यहां पर कहना चाहता हूं कि मुर्गी पालन, प ा पालन और दूसरे व्यवसाय चलाने के लिये गरीबों को कर्जा दिया जाता है, उनसे गरीबें को दिक्कत आती है। सरकार कहती है कि हमने कर्जा दिया, असल में स्पीकर साहब, कर्जा दिया नहं जाता दिलवाया जाता है। उन लोगों से जो उन लोगों की जमानत दे सकते है। तो इस तरह से गरीब आदमी को अपनी जमानत ढूंढने के तकलीफ होती है, मैं आपके द्वासरा सरकार से निवेदन करूंगा कि बिना किसी जमानत के गरीब आदमियों को कर्जा दिया जाए ताकि लोगों को किसी प्रकार की दिक्कत न हो।

तीसरी बात जो मैं यहां कहने चला हूं वह सड़कों के संबंध में है। अभी हमारे दोस्त चौधरी रामलाल जी ने इस बारे में कह भी दिया है। डबल लिंक के बारे में बड़ी भारी तकलीफ है। रास्ते में जगह–जगह पर लौंग रूट्स दिय हुए है तो मैं सरकार से यह दरखास्त करूंगा कि सरकार इस बारे में भी कुछ विचार करें और महम और जुलाना के बीच तीन चार किलोमीटर का एक टूकड़ा है अगर उसको बनाकर पक्का कर दिया जाए तो वह सड़क लौंग रूट बन जाएगी। इसी तरह से भिवानी से लेकर सफीदों की सड़क को भी ठीक किया जाए ताकि चण्डीगढ़ के लिये एक लौंग लिंक तैयार हो सके। उसके साथ जुलाना मण्डी भी लगती है और साथ में तीन चार गांव भी है जिन को इस से फायदा होगा।

इसके बाद स्पीकर साहब, मैं परिवहन के बारे में कुछ कहना चाहता हूं। इस बजट के अन्दर यह प्रोवीजन रखा गया है कि एयर कंडी ानड बसें बनाई जाएंगी, मैं इसके खिलाफ नहीं हूं, होनी भी चाहिए लेकिन कम से कम यह बात भी सरकार को ध्यान में रखनी चाहिए कि जो दूसरी बसं है जिन में आम आदमी चलता है उनकी कंडी ान को भी सुधारा जाए तो बेहतर रहेगा। सिवायें धुंआ देने के और कोई बात नहीं, इसलिए आपके द्वारा मेरी सरकार से दरखास्त है कि दूसरी बसों की हालात को भी सुधारा जाए। इसके साथ साथ मैं ि ाक्षा के बारे महना चाहता हूं, सबसे पहले मैं अध्यापकों की ट्रांसफरज के बारे में कहना चाहता हूं कि ट्रांसफरज हों इस में मुझे एतराज नही है, पर इस वक्त जो

ट्रांसफरज हुई है, वह गलत हुई है, मेरे हल्के में अध्यापकों के साथ बहुत ज्यादतियां हुई है मेरी सरकार से आपके द्वारा दरखास्त है कि सरकार इस तरफ ध्यान दे और ट्रांसफरज की पालिसी ऐसी होनी चाहिए किसी आदमी को नजायज तंगी न हो।

दूसरे ि ाक्षा के बारे में एक और बात मैं कहना चाहता हूं कि ि ाक्षा विभाग की इस नीति को दोबारा ध्यान से देखा जाना चाहिए ताकि ि ाक्षा में उन्नति हो जैसे अब किया गया है कि पहली क्लास से लेकर 7 क्लास तक बिना परीक्षा के बच्चों को अगली क्लास में चढ़ा दिया जाता है चाहे वह फेल हो या पास यह नीति अच्छी नहीं है इससे ि ाक्षा का स्तर गिरता है। मैं आपके द्वारा सरकार से व ि ाक्षा विभाग से यह दरखास्त करूंगा कि इस बात पर गौर करें और इस प्रकार की नीति को बन्द करें। अन्त में स्पीकर साहब, मैं टैक्सों के बारे में इतना ही कहना चाहता हूं कि आगामी बजट पर अगर इस सरकार द्वारा कोई टैक्स नहीं लगता है तो मैं इसका हार्दिक स्वागत करता हूं और अन्त में आपका धन्यवाद करता हूं कि आपने मुझे बोलने के लिये समय दिया।

मुख्य मंत्री (श्री बनारसी दास गुप्त) : अध्यक्ष महोदय, बजट पर आम चर्चा हुई मैं उसमें इंटरवीन तो नहीं करना चाहता था पर कुछ विशय`से उठाये गये कि मुझे बोलने पर विव ा होना पड़ा। वैसे तो बजट के बारे हमारे माननीय सदस्यों ने जो बातें कहीं है उनका जवाब वितमंत्री महोदय देंगे। मैं तो केवल कुछ बातें जिनकी चर्चा सदन में की गयी है, कुछ ला एण्ड आर्डर के

बारे में, कुछ पानी बिजली के बरे में कुछ रावी ब्यास के बंटवारें के बारे में जो बातेंकहीं गयी है उन पर कुछ अपनी भावनायें प्रकट करने के लिये उपस्थित हुआ हूं। पहली बात तो अध्यक्ष महोदय यह है कि नसबन्दी के बारे में काफी चर्चा, से हम यहां पर इकट्ठे हुये है, सारे दे ा के सामने यह एक बड़ी गम्भीर समस्या है, कोई भी पार्टी आये, कोई भी सरकार आये, अगर वह राश्ट्र का हित चाहती है, दे ा से गरीबी और बेरोजगारी दूर करना चाहती है तो उनको जरूरी तौर पर परिवार नियोजन का कार्यक्रम चलाना पड़ेगा इसमें कोई सन्देह नही है। जहां तक इस बात का ताल्लुक है कि इसके करने का तरीका क्या हो, तो अनेक प्रकार के उपाय, हमारे कुछ नेताओं ने, समस्या की गम्भीरता को समझते हुए सुझाये हैं, किसी ने कानून की बात कही है कि कानून बनाकर परिवार नियोजन चलाया जाए, किसी ने परसूऐ ान की बात कही है कि समझा बुझा कर इस काम को किया जाये, किसी ने कहा कि कहीं पर अगर कुछ जोर जबरदस्ती अखतयार करनी पड़े तो वह तरीका भी अखतयार किया जाए तो इस प्रकार के प्रसव आये है, परन्तु इस बात से किसी ने इन्कार नहीं किया चाहे वह किसी दल से सम्बन्धित हो कि परिवार नियोजन का काम चलाये बिना हिन्दुस्तान का निर्वाह हो सकता है। तो अध्यक्ष महोदय, मैं इस बात को मानता हूं कि हम से कुछ गलतियां भी हुई हैं, हमारे अधिकरियों ने कुछ ज्यादतियां भी की हैं और जो ज्यादतियां अधिकारियो ने की हैंउस जिम्मेवारी से मैं भागना नही चाहता, वह सारी जिम्मेवारी हमारी है, और हमारी सरकार की है लेकिन एक बात अध्यक्ष

महोदय, मैं कहना चाहता हूं कि जो कुछ हमने किया उसमें गल्ती हो सकती है, उसमें तरीका गल्त हो सकता है लेकिन हमने जो कुछ किया है वह राश्ट्र के हित में किया गया। इस में जो ज्यादतियां हुई, गल्तीयां हुई, सख्तियां हुई तो उसका मुआवजा भी हमें भुगतान पड़ा है। आप जानते हैं कि लोकसभा के चुनावों में हमारी खूब पिटाई हुई है, परन्तु अध्यक्ष महोदय, जनता का जो निर्णय है, उसको हम सिर झुका कर स्वीकार करते है, और यही सही डैमोक्रेसी है, सही लोकतन्त्र यही है, अध्यक्ष महोदय, मुझ यह कहते हुये गर्व होता है कि तमाम दुनिया के अन्दर इतनी बड़ी डैमोक्रेसी और इतनी बड़ी पावर का इतने सालों तक उपयोग करने के बाद इतने भाान्तिपूर्ण और लोकतान्त्रिक तरीके से बदलना दुनिया के इतिहास में हिन्दुस्तान की यह एक मिसाल है। हम जनता पर वि वास करते है, और श्रद्धा रखते है और हमारी आस्था लोकतन्त्र के प्रति है। लोक सभा के चुनावों की हार को हमने स्वीकार किया, हमारे नेता ने स्वीकार किया और हमारे दल ने स्वीकार किया। अब जो नई पार्टी की सरकार नए नेता के नेतृत्व में बनी है उसका मैं अपनी सरकार की ओर से हृदय से स्वागत करता हूं (तालियां) मैं उनको इस बात का यकीन दिलाता हूं कि हमारी सरकार की ओर से उनको पूरा सहयोग मिलेगा (तालियां) लेकिन साथ ही मैं यह भी आ ाा रखता हूं कि हमें भी उस सरकार की ओर से पूरा सहयोग मिलेगा। मैं कामना करता हूं कि मेरी यह आाा ाा पूरी होगी। दूसरी बात अध्यक्ष महोदय, यह है कि मैं किसी एक कांड की बात नहीं करना चाहता हूं। अभी

दौलता साहब ने जिक्र किया था एक जगह का। मैं ऐसा समझता था कि दौलता साहब जैसे एक अच्छे पार्लियामैंटेरियन को किसी एक कांड का जिक्र सदन में नही करना चाहिये था। ये भाब्द मैं बड़ी नम्रता से कहता हूं कि वे स्वयं विधिवेता है कि जब कोई मामला सब जुडिस हो तो वह यहां पर कैसे उठाया जा सकता है। एक बात मैं कहना चाहता हूं जैसे मैनें इस बात को स्वीकार भी किया हे कि नसबन्दी के प्रोग्राम में गल्तियां भी हुई और कुछ ज्यादतियां भी हुई लेकिन इस कार्य में सीधा पुलिस का उपयोग नहीं किया गया। अब फर्ज करो हमारे कोई अधिकारी इस काम को लेकर कहीं गए और वहां उनके साथ किसी प्रकार की गड़बड़ हुई, कानून और व्यवस्था की स्थिति उत्पन्न हुई तो पुलिस का प्रयोग किया गया। परिवार नियोजन के काम में पुलिसका सीधा प्रयोग किया गया हो ऐसी कोई बात मेरी जानकारी में नही है। दूसरी बात जो मैं खास तौर से कहना चाहता हूं वह है रावी ब्यास के पानी के बंटवारे का जो प्र न है यह हरियाणा के भविश्य का और हरियाणा के जीवन और मरन का प्र न है। आप इस बात को अच्छी जानते है और हमारे भाई बूरा साहब ने भी कहा कि हरियाणा प्रदे ा एक कृशि प्रधान प्रदे ा है वैसे तो सारा दे ा ही कृशि प्रधान है और कृशि का दारोमदार पानी देने के लिये हमारे पास अन्य कोई साधन नहीं है सिवाए इसके कि रावी ब्यास में से हमें अपना हिस्सा मिले। जमना का पानी पहले ही बंटा हुआ है उसमें से 1/3 हिस्सा यू.पी. को जाता है और 2/3 हमें मिलता है। भाखड़ा का पानी भी बंटा हुआ है। अगर पानी हम बढ़ा सकते

है तो इसी साधन से बढ़ा सकते है। यह झगड़ा कई सालों से चल रहा था। संयुक्त पंजाब के हिस्से में 7.2 मिलियन एकड़ फीट पानी आया था। हरियाणा बनने के बाद हमने मांग की कि हमें हमारा हिससा दिया जाए। दौलता साहब ने कहा था कि पंजाब हमारा भाई है मैं भी पंजाब को अपना बड़ा भाई मानता हूं, हमारा उनके साथ कोई द्वे ा नहीं है लेकिन अगर भाई भाई अलग हो जाएं तो एक भाई को यह हक है कि वह पूरी नहीं हुई। अभी कुछ दिन पहले भारत सरकार ने निर्णय दिया मैं उसकी डिटेल में नही जाना चाहता कि वह निर्णय एक आदमी ने किया यादों आदमियों ने किया। मैं कहता हूं कि भारत सरकार ने किया और 3.5 मिलियन एड़ फीट पानी हमें दिया और इतना ही पंजाब को दिया और 0.2 मिलियन एकड़ फीट दिल्ली को दे दिया। हमने उस बात को स्वीकार किया। अब सवाल है उस पानी को पंजाब से हरियाणा तक लानेका उसके लिये हम एक नई नहर बना रहे हैं, तेजी के साथ काम भाुरू कर दिया है लेकिन उस नहर का ज्यादा हिस्सा पंजाब में बनना है। मुझे आ ाा है कि पंजाब सरकार उसे बनाने में हमारे साथ सहयोग करेगी। लेकिन मुझे डर इस बात का हुआ कि अभी लोक सभा के चुनावों के समय जब अकाली पार्टी ने अपना इलैक ान मैनिफैस्टो छापा, उसको आप देख सकते है, हमारे दोस्त देख सकते है। उसमें साफ तौर पर यह बात कही गई है कि अगर हमारी पार्टी कामया बहुई तो रावी ब्यास के पानी का जो बंटवारा हुआ है उसको हम रद्द कर देंगे। अध्यक्ष महोदय, मैंने कई बार प्रैस में भी और प्लेटफार्म पर भी इस बात का जिक्र

किया परन्तु आज तक उसका कोई जवाब नहीं मिला। आप 19 फरवरी के ट्रिब्यून को देख सकते हैं उसमें अकाली पार्टी के सीनियर वाइस प्रेजीडेंट री जगदेव सिंह तलवंडी का ब्यान प्रकाि ात हुआ है और उन्होंने लिखा है कि हमारी पार्टी का यानी अकाली पाटी की जनता पार्टी के नेताओं के साथ यह अंडर स्टैडिंग हो गई है कि अगर जनता पार्टी सैंटर में जीत कर आई तो हम रावी ब्यास के पानी के फैसले को रद्द कर देंगे और फालिल्का अबोहर का फैसला भी रद्द कर देंगे मतलब चंडीगढ़ को पंजाब में मिला देंगे और फाजिल्का अबोहर नहीं देगें और हरियाणा में जो पंजाबी स्पीकिंग एरियाज है जिन पर वह कलेम करते है, जैसे डबवाली, सिरसा, रतिया, टोहाना, थानेसर और कालका के इलाके है इन सब हिस्सों को हम पंजाब में मिला लेगें, यह हमारा समझौता हो गया जनता पार्टी के नेताओं के साथ। श्री गुरनाम सिंह तीर जो अकाली पार्टी के लीगल एडवाइजर है उन्होंने कलैरिफाई किया है कि इस पानी के फैसले को हम रिवाइज भी नही करेंगे इसको रद्द करवा देंगे। इसका मतलब यह हुआ कि हरियाणा को एक बूंद भी पानी नह देंगे। तो अध्यक्ष महोदय, यह अकाली पार्टी का मैनिफैस्टो है। यह स्टेटमैंट अकाली पार्टी के जिम्मेदार लोगौं की है। अध्यक्ष महोदय, ऐसा पढ़कर मुझे बड़ा दुख हुआ है। सरकार चाहे हमारी हो चाहे किसी और पार्टी की हो लेकिन हरियाणा हमारा भी है, उनका भी है और हरियाणा, हरियाणा वासियों का है और हरियाणा का भविश्य हरियाणा की औलाद का भविश्य इस पानी पर निर्भर करता है। हम बेरोजगारी

और गरीबी को दूर करने की बात करते है यह दूर कैसे होगी ? इसके लिये कोई साधन चाहिये, गरीबी कोई छूमन्त्र से दूर नही हो सकती है बल्कि इसको दूर करने के साधन चाहिये। साधन क्या है ? साधन हैं बिजली और पानी। मुझे डर लगता है अगर वह बात अकाली पार्टी की पूरी हो गई क्योंकि आज तक जनता पार्टी के किसी नेता द्वारा उस स्टेटमैंट की तरदीद नहीं हुई है अगर कोई आज भी उसकी तरदीद करदे तब भी मान जाएं। मैंने कल भी इस चीज का जिक्र इसलिए किया था कि सरकार के नाते से हम केन्द्रिय सरकार के पास जाएगें वह भी तब जब इस इ ा को उठाया या उसको बदलने की कोई बात उठाई जायेगी। हम केन्द्रीय सरकार के पास अपना कसे पलीड करने के लिये जाएंगे। मैनें सदन में यह कोई बुरी बात नही कही है। मेरे भाई जो सदन में मेरे सामने बैठे है इनका दल के नाते आज की सैंटर की सरकार से संबंध है मुझे आ ाा है कि वे हमारी इस कार्य में मदद करेंगे।

चौधरी प्रताप सिंह दौलता : अगर यह फैसला तबदील किया गया तो आप हमारे इस्तीफे ले लें। (तालियां)

श्री बनारसी दास गुप्त : ठीक है, हम तो यही चाहते है कि रावी ब्यास के पानी का जो हिस्सा हमें मिला था वह कम नहीं होना चाहिए।

पंडित चिरंजी लाल भार्मा : यह तो सी.एफ.डी. वाला बोला है हम तो जनता पार्टी से यह चाहते है।

चौधरी प्रताप सिंह दौलता : सी.एफ.डी. हमारे सब के है औरा हम उनकी इज्जत करते है। आप हमारे सबसे इस्तीफे ले लें।

श्री बनारसी दास गुप्त : बहुत अच्छा। अध्यक्ष महोदय मेरे विपक्ष के जितने साथी हैं, मै उनकी भावनाओं का आदर करता हूं और सराहना करता हूं, मुझे बड़ी भारी खु ाी है कि चाहे हम इधर बैठे चाहे उधर बैठे, हम सब मिल कर इस उददे य की पूर्ति के लिए लड़ेगें। यहां पर एक बात और उठाई गई है कि सदन की 6 साल तक कर दी है। यह बात दौलता साहब ने फरमाई कि इस की म्यादा पांच साल है, जनता ने हम को पांच साल के लिए चुनकर भेजा है, पांच साल के बाद कोई हक नही इन बैचों पर बैठने का। (व्यवधान) दोनों पक्षों को ही नहीं। स्पीकर साहब, मैं आपके द्वारा कहना चाहता हूं कि कांस्टीच्यू ान के अन्दर सं ाोधन का प्रोवीजन है और इस प्रोवजीन के तहत वाकायदा तरमीम हुई 2/3 मजौरिटी से तरमीम हुई, राज्य सभा से अनुमादित हुई और उसके बाद 50 प्रति ात से अधिक स्टेट्स ने रैटीफाई किया और उस सं ाोधन के बाद हर विधान सभा की म्याद 5 साल की बजाये 6 साल हो गई। इसमें कांस्टीच्यू ानल बात हुई है। कोई अन–कांस्टीच्यू ानल बात नही है। 5 साल की

जो म्याद रखी है वह कांस्टीच्यू ानल ने ही 5 साल से बढ़ाकर 6 साल कर दी है।

एक आवाज : यह तो जनता से पूछे ..... (व्यवधान)

श्री बनारसी दास गुप्त : हर एक बात के लिए जनता से नही पूछा जाता। क्या ये भाई ऐसी कोई मिसाल पे ा करेंगे कि कांस्टीच्यू ानल में कोई अमेंडमेंट करेंगे और हिन्दुस्तान की 60 करोड़ जनता से सीधा पूछकर कानून पास करेंगे। कोई ऐसा उदाहरण ये पे ा करेंगे तो हम देखेंगें । (व्यवधान)

Chaudhir Partap Singh Daulata : On a Point of Order, Sir, My point is that the Constitutional amendment was subjected to the approval of the Nation. A democrat Prime Minister asked the Nation whether this amendment was good or bad and whether they approved it. The Nation has rejected that Constitutional amendment. That amendment was a part of the election manifesto.

श्री बनारसी दास गुप्त : अध्यक्ष महोदय, मैं एक बात कहना चाहता हूं। दौलता साहब बार बार एक बात कह रहे थे कि प्वायंट आफ आर्डर वैसे ही किया जाता है। इन्होंने जो यह प्वांट आफ आर्डर किया है, क्या यह प्वायंट आफ आर्डर है ?

चौधरी प्रताप सिंह दौलता : स्पीकर साहब, मैं सैटिसफाई कर सकता हूं कि यह एक आर्गुमेंट है ..... (व्यवधान)

श्री बनारसी दास गुप्त : आप आर्गुमेंट दे सकते है सबमि ान कर सकते है, लेकिन यह प्वायंट आफ आर्डर कैसे बन सकता है ? ठीक है, हमारे दोस्त भी ऐसा ही करते है, एक बार दौलता साहब ने कर दिया तो मुझे काई एतराज नहीं (व्यवधान)। मैं एक बात कहना चाहता हूं और वह यह कि जैसा यहां कहा गया कि चुाव यह नहीं लड़ा गया, यह रैफरैंडम नहीं हुआ है यह गलत बात है। उस वक्त की हिन्दुस्तान की प्राईम मिनिस्टर श्रीमती इन्दिरा गांधी ने, वाकायदा लोक सभा को भंग करके चुनाव करवाने का एलान किया और बाकायदा नारमल वे में चुनाव हुए। क्या यह रैफरैडम नही है .... (व्यवधान) इसके बाद, अध्यक्ष महोदय, लोक सभा का चुना हुए। अब ये भाई हमसे इस्तीफे की मांग करते हैं लेकिन इस तरह हम इस्तीफा देने वाले नहीं, यह गलत बात है। हमारा इस्तीफा होगा तो वह उस रोज होगा जिस दिन जनता हमारे विरूद्ध निर्णल देगी।

चौधरी राम लाल वधवा : तो चुनाव करवा लें। जनता से फैसला ले लें, एक साल तो हो गया है म्याद खत्म हुई। (व्यवधान)

श्री बनारसी दास गुप्त : ये भाई जो कल तक श्रीमती इन्द्रिरा गांधी को डिक्टेटर बतला रहे थे और यह कह रहे थे कि हिन्दुस्तान में डैमोक्रेसी का खून कर दिया गया है। क्या यह खून हुआ ? हिन्दुस्तान ने दुनिया के इतिहास के अन्दर डैमोक्रेसी का जितना मान बढ़ा है उतना किसी भी दे ा में नही बढ़ा। इन

भाईयों की बात आप जाने दीजिये, ये क्या कहते है क्या नही कहते, मैं इन बातों में नही जाना चाहता। मैं संविधान की बात कहता हूं, कानून की बात कहता हूं। अब तो केन्द्र में इनकी सरकार बन गई है, अब यह अमेंडमैंट कर देंगे लेकिन मैं एक बात बतलाना चाहता हूं कि जो सरकार केन्द्र में बनी है, भारत के इतिहास में अन्दर इससे ज्यादा अन–इफैक्टिव सरकार कोई बनी ही नही। कैसे नहीं बनी? यह मेरे से सुन लो। यह सरकार सिवाये बजट के, कोई कानून पास नहीं कर सकती, कोई बिल पास नहीं कर सकती ..... (व्यवधान)

Chaudhri Partap Singh Daulata : Can another Government be criticised in the Haryana Vidhan Sabha ?

श्री बनारसी दास गुप्त : अध्यक्ष महोदय, मैं इस बात का जिक्र नही करता, मैं एक और बात कह रहा हूं ..... (व्यवधान)

चौधरी प्रताप सिंह दौलता : मैं सी.एम. साहब को रोकना नहीं चाहता लेकिन फिर हमें भी आप बोलने की इजाजत दे देना .....(व्यवधान)

श्री बनारसी दास गुप्त : ठीक है, मैं इस बात की चर्चा यहीं खत्म करता हूं, मैं दूसरे सदन की बात नहीं करता। मैं यह कहता हूं कि अगर उस संविधान में सं ाोधन करके हमारे म्याद फिर पांच साल कर दी जाए तो चुनाव करवाने के लिए हम तैयार है।

चौधरी ि ाव राम वर्मा : यह तो आपके साथ जबदस्ती होगी, हमें तो पांच साल हो गए है .....(व्यवधान)

श्री बनारसी दास गुप्त : ये भाई कितनी ही चीख पुकार करते रहें, जब तक हमारा समय है, ठाठ के साथ राज चलायेंगें (व्यवधान) हम यहां जबरदस्ती आकर नहीं बैठे है, हम जनता के द्वारा निर्वाचित होकर यहां आए है। आज की सरकार, हरियाणा प्रदे ा की सरकार बाकायदा कांस्टीच्यू ान सरकार है, संविधान पर आधारित है, इसलिए किसी भाई को हक नहीं कि आज की सरकार से इस्तीफा की मांग करें, यह बिल्कुल गलत बात है। दौलता साहब ने एक बात कही कि कांग्रेस के मेम्बरों के हलकों में काम होते है। मैं दौलता साहब को याद दिलाना चाहता हूं..... ...

चौधरी प्रता सिंह दौलता : तेरी कांस्टीच्यूएंसी में तो काम हुए है...(हंसी)

श्री बनारसी दास गुप्त : अध्यक्ष महोदय, चलो ठीक है, बड़े ग्रेसफुली इन्होंने इस बात को मा लिया है। मैं एक बात कहता हूं। इनके पीछे बैठे हुए गौड़ साहब ने कहा था कि पिछले पांच सालों से गोहाने के इलाके में कोई पैसा खर्च नहीं हुआ। ये कुछ दिन पहले कांग्रेस के मेम्बर थे और कुछ दिन पहले ही कांग्रेस के बैंचों से उध बैठे है। दौलता साहब के सवाल का जवाब तो गौड़ साहब ने दे दिया है और वे खुद मान भी गए है....

चौधरी प्रताप सिंह दौलता : मैं कांग्रेस में था और ये अपोजी ान में थे (हंसी)

श्री बनारसी दास गुप्त : अध्यक्ष महोदय, दौलता साहब ने एक बात और कही थी कि इंडस्ट्रीज लगाने के लिए जो जमीन ली जाती है, किसान को उसकी पूरी कीमत मिलनी चाहिए। यह बात ठीक है। आज हम कोई जमीन एक्वायर करते हैं तो किसान को जमीन की जो मार्किट प्राइज है, उसको ध्यान में रखते हुए कम्पेन्से ान देते है। एक उन्होंने बहुगुणा की मिसाल दीं दौलता साहब यह सुन कर खु ा होगें कि हमने भी यह फैसला कर दिया है कि फैक्ट्री के लिए जिस किसान की जमीन लेंगे उस फैक्ट्री में उसका एक आदमी जरूर नौकर रखा जाएगा। अध्यक्ष महोदय, इन्होंने हैंडलूम की मिसाल दी। हम इस बात को पूरी तरह से मानते है कि स्माल स्केल इंडस्ट्रीज को ज्यादा प्रोत्साहन दिया जाए और खुलकर देते है, लेकिन अध्यक्ष महोदय, मैं आपके द्वारा यह बताना चाहता हूं कि कई इंडस्ट्रीज ऐसी है जो स्माल स्केल बेसिज पर लग नहीं सकती। अगर ट्रैक्टर बनाना है तो गांव का लोहार नहीं बना सकता। अगर हम फर्टेलाइजर तैयार करना चाहे तो किसी एक झोपड़ी में तैयार नहीं कर सकते। कुछ बेसिक इंडस्ट्री भी जो लार्ज स्केल पर ही लग सकती है। कुछ ऐसी इंडस्ट्रीज भी है जिनका होना जरूरी है उनके बिना छोटी इंडस्ट्री चल नहीं सकती। अब स्टील की इन्डस्ट्री छोटे पैमाने पर नहीं हो सकती। अगर उसको बड़े पैमाने पर न लगाया जाये तो छोटी

इन्डस्ट्री वालों को स्टील उपलब्ध नहीं हो सकता लेकिन इसके बावजूद भी मैं आपके द्वारा बतलाना चाहता हूं कि पिछले दिनांक हमने हैन्डलूम इन्ड हैन्डी क्राफट कारपोरे ान बनायी है। इस कारपोरे ान का उद्दे य यह है कि जो बुनकर है, अपने हाथ से कपड़ा बनाने वाले है, जो अपनी झोपड़ी में खादी बनाते है उनको पूंजी दी जाये। उनको आधुनिक तरीके के औजार दिए जाए, उनको कच्चा माल दिया जाये। इसके अलावा एक और भी प्रबन्ध सरकार ने किया है। उनके द्वारा जो माल तैयार किया जायेगा उसके बेचने का भी सरकार ने प्रबन्ध किया है। हम इस बात को जानते है कि जो छोटे और गरीब आदमी माल तैयार करते है, जब वे बेचने के लिए जाते है तो उनको कम से कम कीमत दी जाती है उसको उतनी कीमत नही मिलती जिससे कि वह अपना गुजारा कर सकें। इस प्रकार जितने भी रूरल आर्टीजन है चाहे वे लुहार है, मोची है, या काटेज इन्डस्ट्री का काम करते है, उनको हम पूंजी देंगे, कच्चा माल देंगे, आजकल के आधुनिक औजार देंगे और उनके द्वारा तैयार किए हुए माल को दे ा और विदे ा में बेचने का प्रबन्ध करेंगे ताकि उसको पूरी कीमत मिल जाए। (तालियां)

इसके अलावा कुछ बातें राम लाल जी ने एमरजैन्सी के बारे में कहीं है। उन्होंने यहां कहा कि एमरजैन्सी का दुरूपयोग हुआ है परन्तु राम लाल जी को गिरफ्तार करके तो दुरूपयोग नहीं किया है। वे खुद ही इस बात का अन्दाजा लगा सकते है।

चौधरी राम लाल वधवा : मैं आपसे ऐसी ही आ ाा रखता हूं।

श्री बनारसी दास गुप्त : अगर हम एमरजैन्सी का दुरूपयोग करते तो उनके साथी वर्मा जी जो यहां बैठे हुए है उनको भी गिरफ्तार करते। यहां पर हरियाणा में कितने ही अपोजी ान के लीडर है जिनको सरकार ने गिरफ्तार नहीं किया। अगर हम एमरजैन्सी का मिस यूज करते तो हम उन सब को अन्दर करते। इसके अलावा अध्यक्ष महोदय कई मिसालें हैं कि अगर किसी आदमी को गिरफ्तार कर लिया हो और हमने देखा कि बिमार है या कोई वि ोश कारण है तो हमने उसके हालात को देख कर रिहा कर दिया। इससे साफ जाहिर है कि एमरजैन्सी और मिसा का दुरूपयोग नहीं हुआ है।

यह पर कुछ ऐसे भी है जो आज तक और आज से साल भर पहले इस बात को मानते थे कि एमरजैन्सी से हिन्दुस्तान की जनता को बड़ा भारी लाभ हुआ है। यह बात को हर आदमी मानता है।

पंडित चिरंजी लाल भार्मा : ये जनसंघ वाले सारे यूथ कांग्रेस के मेम्बर बने हुए थे।

श्री बनारसी दास गुप्त : स्पीकर साहब, समय थोड़ा है क्योंकि फाइनेन्स मिनिस्टर साहब ने भी बोलना है वरना मैं यहां बताता कि एमरजैन्सी से दे ा का कितना आर्थिक लाभ हुआ,

कितना उत्पादन बढ़ा है और कितना डिस्पलन आया है, ये सारी बातें बतला सकता हूं लेकिन समय की कमी है।

रामलाल जी ने बजट को खोखला कहा है। मेरी समझ में नही आता कि उन्होंने इस बजट को कैसे खोखला कह दिया। हम इस बजट का 80 प्रति ात पैसा पानी और बिजली पर खर्च करेंगे। हम नये नये थर्मल प्लांट लगायेंगे, लिंक कैनाल बनायेंगे, जवाहर लाल कैनाल बनायेंगें, उसके पानी को हम एरिड एरिया में देंगें। हमने नाफथा झाकड़ी प्रोजैक्ट का हिमाचल प्रदे ा की सरकार से एग्रीमैंट किया है जिस पर चार सौ करोड़ रूपया खर्च होगा, फिर भी राम लाल जी यहां कहते है कि बजट खोखला है तो मैं उनसे जानना चाहता हूं कि वह ठोस बजट कैसा होता है? मैं तो उनकी बात समझ नहीं पाता और मुझे तो हैरानी है कि वे बिना पढ़े और बिना देखे ही कह रहे है कि ठोस बजट नहीं है। मैं तो यह कहता हूं कि जो व्यक्ति इस बजट को खोखला बतलायेगा वह स्वयं खोखला है।

हमने इन्डस्ट्री पर जोर दिया है। लार्ज स्केल पर और स्माल स्केल दोनों प्रकार की इन्डस्ट्रीज पर जोर दिया है जिससे लोगों को काम मिल सकता है। बिजली और पानी का प्रबन्ध करने पर जोर दिया है जिससे प्रदे ा की डिवैल्पमैंट हो सकती है, खु ाहाल हो सकता है, रोजगार लोगों को मिल सकता है। हमने सब चीजों का बजट में प्रोविजन किया है इस बजट की एक एक

आइटम को पढ़कर यह कहा जा सकता है कि यह बजट प्रदे ा का खु ाहाल करने वाला बजट है।

कुछ बातें हमारे साथ गौड़ साहब ने कहीं। उनकी बात का तो मैं जवाब नहीं देना चाहता। अगर गौड़ साहब की बातों का जवाब देखना हो तो पिछले सै ान में जो उन्होंने स्पीच की है उसमें ही सारा जवाब मिल जायेगा। जो बात उन्होंने 20 सूत्रीय प्रोग्राम के विशय में कही कि यह सिर्फ एक सूत्रीय प्रोग्राम था। पिछले सै ान में बीस सूत्रीय प्रोग्राम की तारीफ करते करते उनका गला सूख रहा था। मैं यह बात दावे के साथ कहता हूं और मैंने अपने कानों से यह सुना है कि बीस सूत्रीय प्रोग्राम बताते है। इसलिए उनके बारे में तो ज्यादा कुछ जिक्र नही करना चाहता, इनकी पिछली स्पीचिज को आप पढ़ लें उनसे पता लग जायेगा कि वे पहले क्या कहते रहे है और आज क्या कहते है।

एक बात बूरा साहब ने कही कि जो सड़कें लम्बी हों और उनके बीच में कुछ भाग कच्चा हो उनसे जनता को भी फायदा होता हो लेकिन डबल लिंक की वजह से वे रह जाती है, उनको पूरा करना चाहिए। मैं उनकी जानकारी के लिए बताना चाहता हूं कि जिस सड़क को बनाने का वे जिक्र कर रहे थे उस सड़क को पूरा करने का हम पहले ही एलान कर चुके है। कई लम्बी सड़कें हैं एक इम्पोर्टैंट स्थान से दूसरे ईम्पोर्टैंट स्थानों को मिलाती है, उनके बीच में चार पांच किलोमीटर क गैप यदि रहा है उसको हम पक्का बनायेंगे। इन सब बातों की ओर सरकार ने

ध्यान दिया हुआ है। इन भाब्दों के साथ अध्यक्ष महोदय मैं आपके प्रति आभार प्रकट करता हूं कि मुझे बोलने का अवसर प्रदान किया है।

वित मन्त्री (श्री राम सरन चन्द मित्तल) : आदरणीय अध्यक्ष महोद, जो बजट सदन के सामने पे ा किया है उसका बहुत से साथियों से स्वागत की उम्मीद नहीं की जा सकती उन्होंने उसकी नुक्ताचीनी की है। मैं नुक्ताचीनी की बात पहले लाना चाहता हूं। चौधरी लाल जी ने बजट एट ए ग्लान्स को देख क कहा कि हमारी पर–कैपिटा इन्कम कम हो गई है तो अध्यक्ष महोदय यह तो वही बात है कि किसी आदमी ने एक भाई से पूछा कि गीदड़ कितना बड़ा होता है उसने कहा कि इतना बड़ा हो सकता है। उसने कहा कि इतना बड़ा कैसे हो सकता है ? उसने फिर कहा कि मैं दूसरा हाथ तो लगाना भूल गया था। दरअसल उन्होंने बजट को जरूर पढ़ा मगर अधूरा पढ़ा। हमारी पर कैपिटा इन्कम सन् 1970–71 में 441 थी, 1972–73 में 426 थी, 1973–74 में 425 थी, 1974–75 में 429 थी और आखिर में 1975–76 में 473 हो गई। उन्होंने अपने मतलब की बात तो पढ़ी लेकिन इसका कुरैक्ट इन्टरप्रेटे ान क्या है सन् 1960–61 में जो प्राइसीज थी उनको कम्पेअर करना चाहिए। पुराने आदमी अपनी आमदनी को कम्पेअर करते है कि पहले सौ रूपये में गुजारा होता था लेकिन आज उसका एक हजार रूपये में भी गुजारा नहीं होता। आज से

पचास या साठ साल पहले सौ रूपये में गुजारा होता था लेकिन अब एक हजार में नही होता।

हमारी पर–कैपिटा इन्कम जो करंट प्राइसिज पर है वह इस प्रकार है :–

1966–67	608
1967–68	713
1970–71	845
1971–72	928
1972–73	989
1973–74	1174
1974–75	1217

तो मेरा कहने का मतलब यह है कि पर–कैपिटा में कमी हुई है, वैसी कोई बात नहीं है। एक बात उनके मुखारबिन्द से सुनकर मुझे बड़ा अफसोस हुआ है कि एग्रीकल्चर और इरीगे ान हरियाणा में फैल हो गई है। उन्होंने लफ्ज 'फेल' इस्तेमाल किया था। मैं उन्हें यह बताना चाहता हूं कि उनके पास ही हमारे भूतपूर्व कृशि मंत्री बैठे हुए है जब हरियाणा 1966 में बना था तो एक लाख टन अनाज हम बाहर से लेकर अपने लोगों को खिलाते थे लेकिन आज हम कितना ही चावल, कितने ही गेहूं

और दूसरी चीजें सैंट्रल पूल में देते है। इस सब के बावजूद यह कहना कि हम फेल हो गये है, यह दुरस्त नहीं है। जो कुछ यह कहते हैं कि हम फेल हो गये। यह डाइवरसिटी आफ फैक्टस है। मैं एक दफा का मीर में एक कांफ्रेस में गया हुआ था। वहां पर खाना खाते वक्त एक मिनिस्टर मेरे पास आये और कहने लगे कि हमें भूखा न मारना। मेरा कहने का मतलब यह है कि वे पंजाब और हरियाणा की तरफ ही अनाज के लिये दिखते है। इस तरह से आउटराइट कन्डैमने ान ठीक नहीं है। 20 सूत्री कार्यक्रम का भी यहां पर जिक्र आया। मैं हाउस को यह बताना चाहता हूं कि जब यह जेल में थे तो एक पब्लिक रिले ान्ज डिपार्टमेंट की तरफ से छपी किताब उनको दी गयी थी। जो कि 20 सूत्री कार्यक्रम के बारे में थी। उन्होंने 14 प्वांयटस तो डिस्कस कर दिये लेकिन 6 प्वायंट छोड़ ही गए। अगर इन्होंने सही तरीके से पढ़ा होता तो इनको यह पता होता कि इन 20 आईटम्ज के अन्दर जो 6 आईटम थे, वे सैंट्रल गवर्नमैंट से ताल्लुक रखते है। स्टेट गवर्नमैंट का इसमें कोई ताल्लुक नही हैं।

चौधरी ि िव राम वर्मा : आप 20 प्वायंट क्यों कहते हो, 25 प्वायंट कहो।

श्री राम सरण चन्द मित्तल : आप तो 20 के 25 कहते हो, इन्होंने तो 20 के भी 14 कर दिये। यह बात मैं जानता हूं कि कितना ही बोलू लेकिन इनकी समझ में नही आयेगा। एक बात इन्होंने यह कही कि डैफिसिट को कैसे मीट किया जायेगा ? अगर

अ.प. बजट स्पीच को ही पढ़ ज.ये तो आपको यह पता लगेगा कि इसमें यह साफ तौर पर बताया गया है कि यह घाटा किस तरह से पूरा किया जायेगा ? अगर अंग्रेजी की भाशा में पढ़ लें तो भाायद ज्यादा क्लीयर होगा। बजट स्पीच के पेज 31 पर यह लिखा हुआ है :

"We re hopeful of reducing this gap by likely additional devolution to State Government of central taxes and plan assistance from the Government of India which in the Budget Estimates for the year 1977-78 has been assumed at Rs. 11.40 crores as against cenral assistance of Rs. 27 crores promised for the current financial year. Substantial efforts would continue to be made to exercise a strict control on administrative expenditure. The budget estimates for the year 1977-78 are based on the assumptions that current level of prices will continue toprevail and agricultural/industrial output will not fall short of the current levels. As it is, both the agricultural and industrial output in the State is likely to register a further increase in the financial year 1977-78 and we are likely to achieve further buoyancy in state revenues.

Further it is written –

".....Therefore, we intend undertking a mid-term review of the state's resources during 1977-78."

मेरा कहने का मकसद यह है कि इनके जो रिमार्क्स थे, वह मुझे बड़े पिंचिंग नजर आये फिर इन्होंने यह कहा कि करनाल में एक सज्जन आये और उनके स्वागत पर सारा खर्चा सरकार

द्वारा किया गया। देखने वाली बात यह है कि उनके स्वागत पर कोई खर्चा किया गया है या नही ? मैं उन्हें यह साफ बता देना चाहता हूं कि उनके स्वागत पर कोई खर्चा नहीं किया गया। ला एण्ड आर्डर की मेनटेनैन्स पर अगर कोई आदमी आयेगा, तो उस पर तो खर्च होगा ही। इससे ज्यादा मैं इस बात पर नहीं कहना चाहता। हमारे गौड़ साहब ने एक बात इन्स्पैक्टर राज के बारे में कही। इसमें कोई भाक नहीं कि कई तरह के इन्स्पैक्टर्ज होते है। लोग इन्सपैक्टर्ज की ि ाकायत भी करते है। देयर इज नो डिनाइंग दी फैक्ट। लेकिन साथ ही यह होना हैल्थ के प्वायंट आफ व्यू से भी नसैसरी है कि फूड इंस्पैक्टर्ज हों। अगर फूड इंस्पैक्टर्ज नहीं होगें तो लोग कहेंगे कि कितनी ही एडलट्रेटिज चीजें बिकती है। लेकिन उनको चैक करने वाला कोई नहीं है। इसी तरह से वेट एण्ड मीयर्ज के इंस्पैक्टर्ज है। अगर वे न हों तो आप लोग ही कहेंगे कि कोई वेट्स पर चैकिंग नही है, कोई चाहे कम दे या ज्यादा न इधर चैन न उधर चैन।

चौधरी ि ाव राम वर्मा : अगर वे नौकरी खरीद कर लेंगे तो वह पैसे खायेंगे ही।

श्री बनारसी दास गुप्त : आपका लड़का भी एच.स.एस. पैसे देकर बना है ? ..... (व्यवधान एवं भाोर)

श्री राम सरन चन्द मित्तल : इसलिए मेरा कहना यह है कि किसी को अगर ि ाकायत आती है तो पकड़ा जा सकता है,

ऐसे ही पकड़ना मुि कल होता है। मेरे ख्याल में इसमें और ज्यादा कहने की जरूरत नहीं है। अगर किसी ने कोई कंस्ट्रक्टिव सुजै ान दिये है तो उन पर विचार किया जायेगा। धन्यवाद।

Mr. Speaker : The House stands adjourned till 2.00 p.m. today.

12.58 बजे।

(The Sabha then adjourned till 2.00 p.m. on Friday, the 26th March, 1977).